श्रीमहा-गणपति वरिवस्या

तान्त्रिक पूजा पद्धति



प्रणेता :

श्रीदत्तात्रेयानन्दनाथः

॥ श्रीः ॥

श्रीमहागणपति वरिवस्या

तान्त्रिक पूजा विधि

प्रणेता एवं सम्पादक

श्रीदत्तात्रेयानन्दनाथ
(सीताराम कविराज)



श्रीविद्यासाधनापीठम्
वाराणसी

प्रकाशक–

श्रीविद्या साधना पीठ

द्वितीय संस्करण १००० प्रतियाँ

मूल्यः ६0 रु.

॥ सिद्धलक्ष्मीसहित श्रीमहागणपतिः ॥



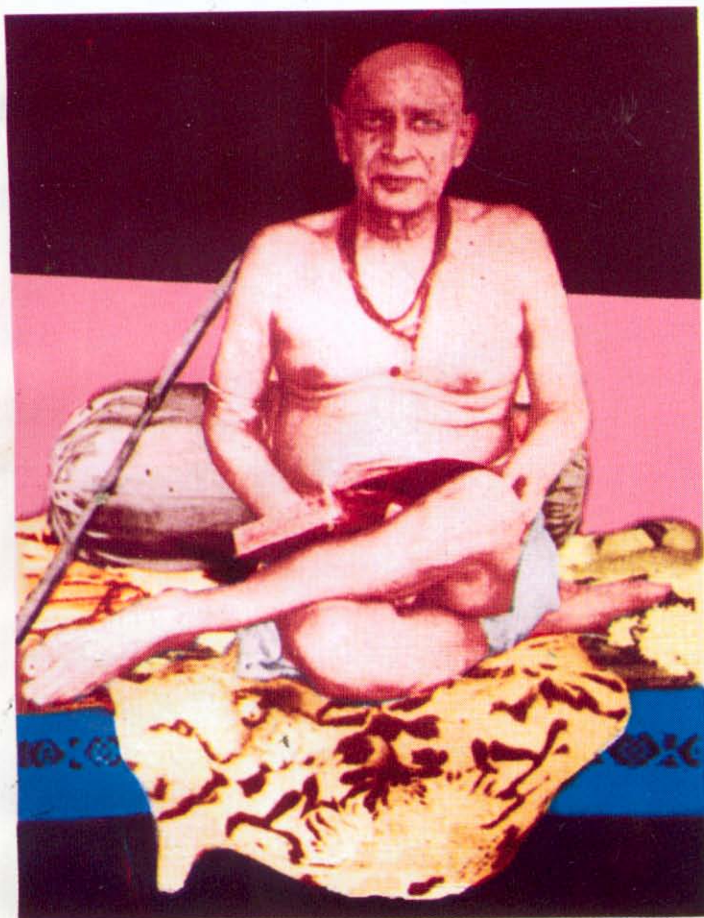
बीजापूरगदेक्षुकार्मकरुजा चक्राब्जपाशोत्पलव्रीह्यग्रस्वविषाणरत्नकलशप्रोद्यत्कराम्भोरुहः ।
ध्येयो वल्लभया सपद्मकरयाश्लिष्टोज्ज्वलद्भूषया विश्वोत्पत्तिविपत्तिसंस्थितिकरो विध्‍नेश इष्टार्थदः ॥

।। श्रीः ।।

श्रीमहागणपति वरिवस्यायाः

विषयानुक्रमः

समस्तशास्त्रतत्त्वविद्वरिष्ठ तपोमूर्ति
स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज



नारायणायेति समर्पये तत्

तुष्यन्त्वदभ्रकरुणाः स्वकृतेन नित्यं को नाम तत्
(प्रतिकरोति विनोदपात्रम्)

|| श्रीः ||

प्राक्कथन

श्रीमहागणपतिवरिवस्या की रचना का मुख्य प्रयोजन तो श्रीविद्या उपासना में आनेवाले प्रत्यूहों की निवृत्ति ही है । परशुराम कल्पसूत्र में लिखा है– **इत्थं सद्गुरो- राहित दीक्षः महाविद्याराधनप्रत्यूहापोहाय गणनायकीं पद्धतिमामृशेत्** । सद्गुरु से दीक्षा ग्रहण करके श्रीविद्या साधान में आनेवाले 'प्रत्यूहों' विघ्नों की निवृत्ति के लिये विघ्नराज गणेश की उपासना करनी चाहिये । क्योंकि आत्यन्तिक कल्याण करनेवाले जितने भी साधन है उनमें श्रीविद्या साधन ही सर्वश्रेष्ठ साधन है । और **"श्रेयांसि बहुविघ्नानि"** कल्याणकारी कार्यों में अनेक विघ्न आते हैं । अतः आध्यात्मिक कार्य हो या सांसारिक सर्वत्र सर्वप्रथम श्रीगणेश पूजन का विधान है- एवं परंपरा भी । छोटे कार्यो में स्मरण, बड़े कार्यो में पूजा, और महान् कार्यों में गणेश उपासना का विधान करते है हमारे वेदादि शास्त्र ।

हमारी आचार्य परंम्परा में वेद और तन्त्रशास्त्र इन दो शास्त्रों को ही परम प्रमाण माना गया है **"अनन्ता वै वेदाः"** जैसे वेद अनन्त है इसी प्रकार तन्त्र शास्त्र भी अनन्त है । उन मे कुछ तो भोगपरक यानि संसार कार्यो की सिद्धि के लिये, कुछ योग और भोग परक है, उन में भोग और तत्वज्ञान है । अतः तन्त्रशास्त्र मे भोग और योग दोनों की प्राप्ति के लिये अनेक प्रकार की साधनाओं का वर्णन प्राप्त होता है । कौन साधन किस व्यक्ति के लिये उपयुक्त है यह शास्त्रज्ञ गुरु ही बता सकता है, जैसे रोगों की यथार्थ चिकित्सा विद्वान् और अनुभवी चिकित्सक ही कर सकता है, वैसे ही उपासना के द्वारा साधनाओं का रहस्य जाननेवाला और तन्त्रशास्त्र का ज्ञाता ही गुरु कहा जाता है । तन्त्रशास्त्र के दीक्षा प्रकरण मे शिष्य द्वारा गुरु की परीक्षा और गुरुद्वारा शिष्यपरीक्षा का

विधान है, और सद्गुरु और सद्शिष्य के लक्षण भी लिखे है, अतः इन लक्षणों से युक्त गुरु और शिष्य का संबन्ध श्रेयस्कर सिद्ध होता है, नहीं तो गोस्वामीजी की कहावत चरितार्थ ही तो है–

'गुरु शिष्य अन्ध बधिर का लेखा ।
एक नहि सुना एक नहि देखा ॥

इस विषय मे तो कुछ विशेष वक्तव्य की आवश्यकता है परन्तु विषयान्तर और विस्तर भय से अधिक लिखना समुचित प्रतीत नहीं होता है । अस्तु अब मूल विषय पर कुछ विवेचन आवश्यक है ।

श्रीगणेश भोग प्रधान देवता है । विघ्न बाधाओं की निवृत्ति और इष्टसिद्धि की प्राप्ति होती है विघ्नराज गणेश की उपासना से । तन्तशास्त्रों में विविध प्रकार के गणेश मंत्रों की उपासना का विधान प्राप्त होता है, जैसे **एकाक्षर गणेश, शक्ति- गणेश लक्ष्मीगणेश, क्षिप्रप्रसादन विनायक, हेरम्ब गणेश, त्रैलोक्यमोहन गणपति, भोगगणेश, हरिद्रा गणेश उच्छिष्ट गणेश और महागणपति** । शास्त्रों मे इन के मन्त्र आदि यन्त्र और पूजा पद्धतियों का विस्तृत विधान उपलब्ध है । परिशिष्ट मे इन सब का श्रीविद्यार्णवोक्त विधान लिखा है ।

यह पूजा पद्धति महागणपति मन्त्र और यन्त्र से संबन्धित है क्योंकि श्रीविद्या साधना के अन्तगर्त महागणपति उपासना का ही विधान है । श्रीविद्यारत्नाकर में गणेशार्चन पद्धति प्रकाशित हुई है परन्तु वह संक्षिप्त है सर्व साधारण के लिये कठिन है अतः उसका विस्तार किया गया है । पात्रासादन में आनेवाले मण्डलों का चित्र एवं उसकी पूजा विधि हिन्दी भाषा में कर दी गई है, उसी प्रकार आवरणार्चन मे भी पांचों आवरणों के चित्र दिये गये है, और उनकी विधि भी हिन्दी में लिख दी गई है । इस प्रकार सर्वसाधारण के लिए यह पद्धति सरल एवं सुगम हो गई है और शास्त्र संमत भी ।

नामूलं लिख्यते किञ्चिन्नानपेक्षितमुच्यते ।

अधिक विस्तार न करके जो आवश्यक था वही लिखा गया है । होम प्रकरण भी दिया गया है क्योंकि होम के बिना गणपति मन्त्रों की सिद्धि नहीं होती, अत: कार्य सिद्धि के लिये होम करना आवश्यक है ।

परिशिष्ट मे अनेक गणपति मन्त्रों का विधान दिया गया है । **उनकी पूजा पद्धति इसी प्रकार है मन्त्र और आवरण पूजन प्राय सभी का समान है ।** केवल मन्त्र ही भिन्न है । गुरु मुख से जानकर करने से वे सब प्रयोग भी शीघ्र सिद्धि देने वाले है ।

गणपतिसहस्रनामस्तोत्र नामावलि

श्रीभास्कररायकृत भाष्य के अनुसार दी गई है । इन हजार नामों से मोदकार्चन करने से दुःसाध्य कार्य भी सिद्ध हो जाते हैं । हमारे गुरुमहाराज भी सांसारिक कार्यों की सिद्धि के लिये यही सहस्र मोदक से अर्चन करवाने का आदेश देते थे । और इससे कार्यसिद्धि भी होती है, यह हमारा भी अनुभव है । परन्तु पूर्ण विधि विधान की परम आवश्यकता है । गणपति यन्त्र का पात्रासादन से पञ्चावरण पूजन करके प्रतिनाम से मोदक समर्पण होना चाहिये । इस से निश्चित मनोरथ पूर्ण होगा । विधि हीन होने से फल की प्राप्ति मे संदेह हो सकता है ।

इसी तरह एक विंशति नामार्चन का विधान भी दिया गया है । प्रतिदिन इन इक्कीस नामों से दूर्वा, लाजा आदि से अर्चन करना चाहिये, और चतुर्थी या बुधवार को इक्कीस मोदक से अर्चन करने से सभी कार्यो की सिद्धि होती है ।

"कलौ चण्डी विनायकौ" कलियुग मे शीघ्र प्रसन्न होने वाले भगवती और गणपति दो देवता ही प्रधान है । गुरु मुख से विधि जानकर उपासना करने से निश्चित ही कल्याण होता है ।

गीता में लिखा है

कांक्षन्तः कर्मणां सिद्धिं यजन्त इह देवताः ।
क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा ॥

सृष्टि के आदि मे ब्रह्माजी ने देवता और मनुष्यों की सृष्टि करके उनका परस्पर संबन्ध स्थापित किया मनुष्य देवता का पूजन करे और देवता उनका मनोरथ पूर्ण करें । इस प्रकार परस्पर आदान प्रदान करने से परमकल्याण होगा।

परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथः ।

इस प्रकार देवताओं का कार्यों की सिद्धि के लिये विधिपूर्वक अर्चन करता है तो इस मनुष्य लोक में विधिवत् कर्म से शीघ्र ही कार्य सिद्धि हो जाती है ।

हमारे भारत वर्ष की यही विशेषता है कि लौकिक और अलौकिक दोनों ही कार्य देवताओं के सम्पर्क से ही होते है, इसी से भारत विश्वगुरु की पदवीं पर प्रतिष्ठित हुआ । कालक्रम से हमारी उपासना परम्परा छिन्नभिन्न हो गई, इस से अनेक प्रकार के दोष और कुण्ठा से मानवता जर्जरित हो गई । असंतोष स्वार्थ परायणता, भोग लोलुपता से मानवता दानवता में परिवर्तित होती जा रही है । इन सब दोषों के निवारण के लिये हमारी परम्परा भारतीय संस्कृति ही सक्षम है, इस से मानव भाव से देव भाव की प्राप्ति और अपूर्णता से पूर्णता की और प्रगति होती है । इस से सुख शान्ति का समृद्धि का साम्राज्य पुनः प्रतिष्ठित हो सकता है ।

अधिक क्या लिखे मन्त्रों में अचिन्त्य शक्ति होती है ।

संपूर्ण जगत् देवताओं के अधान है और देवता यन्त्रों के अधीन है ।

देवाधीनं जगत् सर्वं मन्त्राधीनाश्च देवताः

अतः प्रतिदिन अपना कुछ समय उपासना मे देने से आत्मबल की प्राप्ति होगी और जीवन की समस्त विषमता दूर होकर आनन्दमय जीवन यात्रा सम्पन्न होगी । पुनरपि गुरु और गणपति तत्व का स्मरण करता हूं, जिस के द्वारा "श्रीमहागणपति वरिवस्या" लिखने का सामर्थ्य प्राप्त हुआ । प्रातः स्मरणीय चरण श्रीगुरु महाराज (स्वामी श्री करपात्री जी महाराज) के असीम अनुग्रह से सम्प्राप्त ज्ञान एवं प्रदर्शित मार्ग से उनके पद चिन्होपर चलने का स्वल्प प्रयास है ।

और **"त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्ययेव समर्पये"** के अनुसार उनकी वस्तु उन्ही को समर्पित है । मुद्रण का पूर्वेक्षण करने के लिए अन्तेवासी अखिलेश्वर शुक्ल, व्याकरणाचार्य की भी शुभाशीर्वाद से श्रेय और प्रेय की कामना करता हूँ ।

इस पुस्तक के मुद्रण में श्रीविपुल जी पण्ड्या संचालक रत्ना प्रेस ने जो सहृदयता और शीघ्रता से कार्य सम्पादन किया एतदर्थ महागणपति से उनकी उत्तरोत्तर उन्नति की कामना करता हूँ । पञ्चावरण चित्रों के निर्माण के लिए सुन्दर चैतन्य ब्रह्मचारी भी धन्यवादास्पद है ।

गणपति के कृपापात्र राजेश कोठारी के लिये मंगलमूर्ति गजानन भगवान से मङ्गलकामना करता हूं जिस ने मुद्रण व्यय भार वहन करके महागणपति के चरणों में श्रद्धासुमन समर्पित किये ।

शेष में **गच्छतः स्खलनं क्वापि,** के अनुसार उपासकों एवं विद्वानों से त्रुटियों के लिये क्षमाप्रार्थी हूँ । एवं अग्रिम प्रकाशन के लिए उनके मन्तव्यों की अपेक्षा करता हूँ ।

श्री गुरुचरणसरोजरेणुः
दत्तात्रेयानन्दनाथ

सम्पादकः



दत्तात्रेयानन्दनाथ

(सीताराम कविराज)

॥ श्रीः ॥

श्रीगुरुभ्यो नमः ।

श्रीमहागणपतये नमः ॥

श्रीमहागणपति-वरिवस्या

सिद्धश्रीपरिरम्भ्यमाणमनिशं जुष्टं प्रमोदादिभिः,
सर्वार्थप्रतिपत्तये प्रणमितैर्वागीश्वरैः प्रार्थितम् ।
विघ्नध्वान्तविदारणैकमिहिरं विज्ञानवारान्निधि-
मानन्दोच्छलचित्कलान्तरगतं विघ्नेश्वरं भावये ॥ १ ॥

प्रोद्यत्करेण कलितान्मणिपूर्ण-कुम्भात्,
मुक्ताफलानि मणिरत्नयुतानि मङ्क्षु ।
वर्षत्यहो नुतिनुतां भजतां शिवाय,
क्षिप्रप्रसादप्रथितो गणराजराजः ॥ २ ॥

एकेन साधन–पथेन तु तत्त्वविद्यः,
सोऽभूत् समस्तजगतां धुरिकीर्तनीयः ।
वैदागमैर्विविध– योगपथैश्च सिद्धं
कैस्तं भणामि ननु तत्त्वमसीति वाक्यैः ॥ ३ ॥

श्रीस्वामिपादाः करपात्रप्रख्या
स्तेषामहं पादरजोऽभिषेकात्
आसाद्य किञ्चिन्मनुसाधनाया-
स्तन्मार्गमालम्ब्य लिखामि शश्वत् ॥ ४ ॥

पूजाविधानं गणनायकस्य
दृब्धं पुरा श्रीचरणैः समग्रम् ।
तमेव किञ्चित् सुगमं विधातुं
व्यनज्मि नत्वा गुरुपादपद्मम् ॥ ५ ॥

आह्निकप्रकरणम्

प्रातः–स्मरणम्

आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजबोधगम्यम् ।
योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं श्रीमद्गुरुं नित्यमहं भजामि ॥

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परमब्रह्म तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥

साधना करने वाले व्यक्ति को सूर्योदय के पहले ब्राह्ममुहूर्त में उठकर, लघुशंका आदि आवश्यक कार्य से निवृत्त होकर, हाथपैर धोकर सम्भव हो तो रात्रिवस्त्र बदलकर आसन पर बैठ कर ऊपर लिखे श्लोकों का उच्चारण करके मस्तक पर विराजमान गुरु को प्रणाम करे और ऐसी भावना करे कि मस्तक पर ब्रह्मरन्ध्र में विराजमान गुरु के चरण कमलों से अमृत झर रहा है तथा उससे मेरा समस्त शरीर आप्लावित हो रहा है ।

फिर तीन गुरुओं को प्रणाम करें–

श्रीगुरुभ्यो नमः ।
श्रीपरमगुरुभ्यो नमः ॥
श्रीपरमेष्ठिगुरुभ्यो नमः ।

(जिनको गुरु-पादुका-मन्त्र गुरुमुख से प्राप्त हो गया हो, वे उस मन्त्र से गुरुओं के नाम सहित प्रणाम करें ।)

(गुरुपादुकामन्त्र पूजाप्रकरण में दिया गया है ।)

तदनन्तर यथाशक्ति मूलमन्त्र का जप करके नीचे लिखे हुये पद्यों के द्वारा गणपति की प्रार्थना करे ।

त्रैलोक्य-चैतन्यमयादिदेव चिन्तामणे त्वच्चरणाज्ञयैव ।
प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं संसारयात्रामनुवर्तयिष्ये ॥

संसारयात्रामनुवर्तमानं त्वदाज्ञया श्रीगणनाथनाथ ।
स्पर्द्धा तिरस्कार-कलिप्रमादभयानि मां माऽभिभवन्तु देव ॥

जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिर्जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः ।
त्वया हृषीकेष हृदिस्थितेन यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि ॥

प्रातः प्रभृति सायान्तं, सायादि-प्रातरन्ततः ।
यत्करोमि जगन्नाथ दस्तु तव पूजनम् ॥

भूमि प्रार्थना

समुद्रवसने देवि पर्वतस्तन-मण्डले ।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥

इस प्रकार प्रार्थना करके उस समय नासिका के जिस भाग से श्वास चल रहा हो उसी ओर के पैर को पहले भूमि पर रखकर शौचादि कर्म के लिये बाहर जाये ।

समय हो तो महा गणपति पञ्चक का भी पाठ करना चाहिये ।

॥ श्रीमहागणपति पञ्चकम् ॥

प्रातः स्मरामि गणनाथमुखारविन्दं,
नेत्रत्रयं मदसुगन्धितगण्डयुग्मम् ।
शुण्डञ्च रत्नघटमण्डित–मेकदन्तं
ध्यानेन चिन्तितफलं वितरन्नमीक्षणम् ॥ १ ॥

प्रातः स्मरामि गणनाथभुजानशेषा–,
नब्जादिभिर्विलसितान् लसिताङ्गदैश्च ।
उदण्डविघ्नपरिखण्डन – चण्डदण्डान्
वाञ्छाधिकं प्रतिदिनं वरदानदक्षान् ॥ २ ॥

प्रातः स्मरामि गणनाथविशालदेहं,
सिन्दूरपुञ्जपरिरञ्जित – कान्तिकान्तम् ।
मुक्ताफलैर्मणिगणैर्लसितं समन्तात्,
श्लिष्टं मुदा दयितया किल सिद्धलक्ष्म्या ॥ ३ ॥

प्रातः स्तुवे गणपतिं गणराजराजं,
मोदप्रमोदसुमुखादिगणैश्च जुष्टम्
शक्त्यष्टभिर्विलसितं नतलोकपालं
भक्तार्तिभञ्जनपरं वरदं वरेण्यम् ॥ ४ ॥

प्रातः स्मरामि गणनायकनाम-रूपं,
लम्बोदरं परमसुन्दरमेकदन्तम् ।
सिद्धिप्रदं गजमुखं सुमुखं शरण्यं
श्रेयस्करं भुवनमङ्गलमादिदेवम् ॥ ५ ॥

यः श्लोकपञ्चकमिदं पठति प्रभाते,
भक्त्या गृहीतचरणो गणनायकस्य ।
तस्मै ददाति मुदितो वरदानदक्षः
चिन्तामणि र्निखिल–चिन्तितमर्थकामम् ॥ ६ ॥

इति श्रीदत्तात्रेयानन्दनाथविरचितं श्रीमहागणपति-पञ्चकम् ।

दन्तधावनम्

आयुर्बलं यशोवर्चः प्रजा-पशु-वसूनि च ।
ब्रह्मप्रज्ञाञ्च मेधाञ्च त्वं नो देहि वनस्पते ॥

इस मन्त्र से दन्तकाष्ठ का अभिमन्त्रण करके "ह्रीं क्लीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः" इस मन्त्र द्वारा दन्तधावन करे । तदनन्तर ह्रीं मन्त्र द्वारा जिह्वा शोधन करके कफ विमोचन, नाशाशोधन और दुषिका निरसन सहित २० कुल्ला करे । फिर 'ह्रीं श्रीं' ॐ महालक्ष्म्यै नमः' । 'श्रीं ह्रीं क्लीं । श्रीं सकलह्रीं श्रीं । इन चार मन्त्रों से अथवा इष्ट मन्त्र से मुख प्रक्षालन करे ।

स्नानविधिः

तदनन्तर नदी आदि में वैदिक स्नान करके 'श्री महागणपति-तान्त्रिकस्नानमहं करिष्ये' ऐसा सङ्कल्प करके-जल में अपने आगे चतुरस्त्र मण्डल बनाकर वहां–

ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे ।
तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर ॥

इस मन्त्र से सूर्य की पूजा करके–

आवाहयामि त्वां देवि स्नानार्थमिह सुन्दरि ।
एहि गङ्गे नमस्तुभ्यं सर्वतीर्थसमन्विते ॥

इससे गङ्गा की प्रार्थना करे तथा "ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः क्रों" इस मन्त्र को बोलकर अङ्कुशमुद्रा द्वारा सूर्यमण्डल का भेदन कर गङ्गा आदि सब तीर्थों का आवाहन करे । 'वं' इस सलिल बीज से जल को सात

बार अभिमन्त्रित कर इसी बीज का बार-बार उच्चारण करते हुए मस्तक पर तीन अञ्जलि जल की छोड़े, तीन बार आचमन करे और पूर्ण स्नान करके मूलमन्त्रपूर्वक-"श्रीगणपतिं तर्पयामि" से तीन बार तर्पण करे। फिर मूलमन्त्र से योनिमुद्रा द्वारा तीन बार स्वयं का प्रोक्षण करे।

(घर में स्नानाङ्ग तर्पण नहीं करना चाहिए। असमर्थ होने पर मन्त्रस्नान अथवा भस्मस्नान करके मूलमन्त्र से केवल तीन आचमन और प्रोक्षण करे)।

रोगग्रस्त होने पर या जल के अभाव में, यात्रादि में मन्त्र-स्नान, ध्यानस्नान करके नित्यकर्म करना चाहिये। इसकी विधि 'श्री विद्यावरिवस्या' में दी गई है।

इसके बाद वैदिक सन्ध्या करके तान्त्रिक सन्ध्या करें।

तान्त्रिक सन्ध्या विधिः

(नीचे लिखे मन्त्रों से तीन आचमन करें)

गं आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा
गं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा
गं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा

पुनः नीचे लिखे गणपतिगायत्री मन्त्र से सूर्यमण्डल में महागणपति का ध्यान करके तीन अर्घ्य देवें।

ऊँतत् पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।

श्रीसिद्धलक्ष्मी सहिताय महागणपतये एषः अर्घ्यः।

तदनन्तर नीचे लिखे न्यासादि करके जप करें।

अस्य श्रीमहागणपति मन्त्रस्य शिरसि गणक ऋषये नमः। मुखे निचृद्गायत्री छन्दसे नमः। हृदये श्रीमहागणपतये देवतायै नमः। गुह्ये गंबीजाय नमः। पादयोः ह्रीं शक्तये नमः। मम सर्वाभीष्टसिद्धये विनियोगः, करसम्पुटे।

करन्यासः

श्रीं ह्रीं क्लीं ऊँ गां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।
" " " श्रीं गीं तर्जनीभ्यां नमः ।
" " " ह्रीं गूं मध्यमाभ्यां नमः ।
" " " क्लीं गैं अनामिकाभ्यां नमः ।
" " " ग्लौं गौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
" " " गं गः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादिन्यासः

श्रीं ह्रीं क्लीं ऊँ गां हृदयाय नमः ।
" " " श्रीं गीं शिरसे स्वाहा
" " " ह्रीं गूं शिखायै वषट्
" " " क्लीं गैं कवचाय हुम्
" " " ग्लौं गौं नेत्रत्रयाय वौषट्
" " " गं गः अस्त्राय फट्

ऊँ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।

इस महागणपति मन्त्र को बोलते हुये हाथों से शिर से पैर तक और पैर से शिर तक स्पर्श करें ।

(इसे व्यापक कहते हैं ।)

॥ ध्यानम् ॥

बीजापूरगदेक्षुकार्मुकरुजाचक्राब्जपाशोत्पल,
ब्रीह्यग्रस्व–विषाणरत्नकलश- प्रोद्यत्कराम्भोरूहः ।
ध्येयो बल्लभया सपद्मकरया श्लिष्टोज्ज्वलद्भूषया,
विश्वोत्पत्तिविपत्तिसंस्थितिकरो विघ्नेश इष्टार्थदः ॥

यह ध्यान करके मानसिक पञ्चोपचार पूजन करें। नीचे लिखे हुये वाक्यों का उच्चारण करते हुए दक्षिण हाथ की अंगुलियों से मुद्रा बनावें।

लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि (कनिष्ठिाङ्गुष्ठाभ्याम्)
हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि (अङ्गुष्ठतर्जनीभ्याम्)
यं वाय्वात्मकं धूपमाघ्रापयामि (तर्जन्यङ्गुष्ठाभ्याम्)
रं वह्न्यात्मकं **दीपं दर्शयामि (अङ्गुष्ठमध्यमाभ्याम्)**
वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि (अङ्गुष्ठानामिकाभ्याम्)
सं सर्वात्मक–ताम्बूलोपचारान् समर्पयामि (साङ्गुष्ठाभिः सर्वाङ्गुलिभिः)

अपने मूल मन्त्र का एक सौ आठ (१०८) बार या अठाइस (२८) बार जप करके पुनः न्यास करके निम्न मन्त्र पढ़े।

गुह्याति गुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादात् गणेश्वर ॥

देवता के दाहिने हाथ में समर्पण करने की भावना करके जलं छोड़े।

इति तान्त्रिकसन्ध्याविधिः ।

चतुरावृत्ति तर्पणम्

आचमन और प्राणायम् करके संकल्प करें । हाथ में जल लेकर संकल्प में देश काल गोत्र नाम आदि का उच्चारण करके 'श्री महागणपति प्रसादसिद्ध्यर्थं चतुरावृत्ति-तर्पणं करिष्ये, बोल कर जल छोड़े ।

एक बड़े पात्र में जल भर कर सामने रखकर सूर्य की प्रार्थना करें ।

ब्रह्माण्डोदर तीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे !
तेन सत्येन मे देव ! तीर्थं देहि दिवाकर !!

पुनः–

आवाहयामि त्वां देवि तर्पणायेह सुन्दरि ।
एहि गङ्गे नमस्तुभ्यं सर्वतीर्थसमन्विते ॥

इस प्रकार गङ्गा की प्रार्थना करके–

ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः यह बोलकर अङ्कुश मुद्रा से जलपात्र में गङ्गा आदि तीर्थों का आवाहन करके (वं) इस अमृत बीज मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करें ।

अस्य श्री महागणपति महामन्त्रस्य गणक ऋषिः निचृद् गायत्री छन्दः, श्रीमहागणपतिदेवता महागणपति तर्पणे विनियोगः ।

पुनः–

सन्ध्या-विधि में लिखित करन्यास, हृदयादिन्यास और ध्यान करके उस जल पात्र में गणपति यन्त्र का चिन्तन करें एवं गंध, पुष्प, दूर्वा आदि से पूजन करें । तदनन्तर उस जलपात्र से ताम्र के अर्धे द्वारा दूसरे पात्र में तर्पण का जल गिरावें ।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा महागणपतिं तर्पयामि ।' (द्वादशवारम्) ।

श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि ।	(चतुर्वारम्)
मूलमन्त्रेण–	"	"	"
३ श्रीं स्वाहा	"	"	"
मूलेन–	"	"	"
३ ह्रीं स्वाहा	"	"	"
मूलेन–	"	"	"
३ क्लीं स्वाहा	"	"	"
मूलेन–	"	"	"
३ ग्लौं स्वाहा	"	"	"
मूलेन–	"	"	"
३ गं स्वाहा	"	"	"
मूलेन–	"	"	"
३ गं स्वाहा	"	"	"
मूलेन–	"	"	"
३ णं स्वाहा	"	"	"
मूलेन–	"	"	"
३ पं स्वाहा	"	"	"
मूलेन–	"	"	"
३ तं स्वाहा	"	"	"
मूलेन–	"	"	"
३ यें स्वाहा	"	"	"
मूलेन–	"	"	"
३ वं स्वाहा	"	"	"
मूलेन–	"	"	"
३ रं स्वाहा	"	"	"
मूलेन–	"	"	"
३ वं स्वाहा	"	"	"
मूलेन–	"	"	"

३	रं स्वाहा	"	"	"
	मूलेन–	"	"	"
३	दं स्वाहा	"	"	"
	मूलेन–	"	"	"
३	सं स्वाहा	"	"	"
	मूलेन–	"	"	"
३	वँ स्वाहा	"	"	"
	मूलेन–	"	"	"
३	जं स्वाहा	"	"	"
	मूलेन–	"	"	"
३	नं स्वाहा	"	"	"
	मूलेन–	"	"	"
३	में स्वाहा	"	"	"
	मूलेन–	"	"	"
३	वं स्वाहा	"	"	"
	मूलेन–	"	"	"
३	शं स्वाहा	"	"	"
	मूलेन–	"	"	"
३	मां स्वाहा	"	"	"
	मूलेन–	"	"	"
३	नं स्वाहा	"	"	"
	मूलेन–	"	"	"
३	यं स्वाहा	"	"	"
	मूलेन–	"	"	"
३	स्वां स्वाहा	"	"	"
	मूलेन–	"	"	"
३	हां स्वाहा	"	"	"
	मूलेन–	"	"	"

३ श्रियं स्वाहा	"	"	"
मूलेन–	"	"	"
३ श्रीपतिं स्वाहा	"	"	"
मूलेन–	"	"	"
३ गिरिजां स्वाहा	"	"	"
मूलेन–	"	"	"
३ गिरिजापतिं स्वाहा	"	"	"
मूलेन–	"	"	"
३ रतिं स्वाहा	"	"	"
मूलेन–	"	"	"
३ रतिपतिं स्वाहा	"	"	"
मूलेन–	"	"	"
३ महीं स्वाहा	"	"	"
मूलेन–	"	"	"
३ महीपतिं स्वाहा	"	"	"
मूलेन–	"	"	"
३ महालक्ष्मीं स्वाहा	"	"	"
मूलेन–	"	"	"
३ महागणपतिं स्वाहा	"	"	"
मूलेन–	"	"	"
३ ऋद्धिं स्वाहा	"	"	"
मूलेन–	"	"	"
३ आमोदं स्वाहा	"	"	"
मूलेन–	"	"	"
३ समृद्धिं स्वाहा	"	"	"
मूलेन–	"	"	"
३ प्रमोदं स्वाहा	"	"	"
मूलेन–	"	"	"

३ कान्ति स्वाहा " " "
मूलेन– " " "
३ सुमुखं स्वाहा " " "
मूलेन– " " "
३ मदनावतीं स्वाहा " " "
मूलेन– " " "
३ दुर्मुखं स्वाहा " " "
मूलेन– " " "
३ मदद्रवां स्वाहा " " "
मूलेन– " " "
३ अविघ्नं स्वाहा " " "
मूलेन– " " "
३ द्राविणीं स्वाहा " " "
मूलेन– " " "
३ विघ्नकर्त्तारं स्वाहा " " "
मूलेन– " " "
३ वसुधारां स्वाहा " " "
मूलेन– " " "
३ शङ्खनिधिं स्वाहा " " "
मूलेन– " " "
३ वसुमतीं स्वाहा " " "
मूलेन– " " "
३ पद्मनिधिं स्वाहा " " "
मूलेन– " " "

इत्याहत्य तर्पणसङ्ख्यापिण्डश्चतुश्चत्वारिंशुदुत्तरचतुश्शती (४४४) भवतिं ॥
तर्पणान्ते उत्तरन्यासान् विधाय पुनर्मूलेन देवमुक्तरीत्या पञ्चोपचारैः संपूजयेत् ॥

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाण कृततर्पणम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रासादान्मयि स्थिरा ॥
आयुरारोग्यमैश्वर्यं बलं पुष्टिर्महद्यशः ।
कवित्वं भुक्तिमुक्ती च चतुरावृत्तितर्पणात् ॥

अनेन कृतेन तर्पणेन भगवान् श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितः श्रीमहागणपतिः- प्रीयताम् ॥

इस 'चतुरावृत्ति' तर्पण करने से आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य, बल, पुष्टि, महान् यश, काव्यनिर्माण शक्ति और भोग मोक्ष की प्राप्ति होती है । गणपति देवता शीघ्र प्रसन्न होते हैं ।

सपर्या प्रकरणम्

श्रीगुरुभ्यो नमः ।
श्रीमहागणपतये नमः ॥

ब्रह्मविद्यासम्प्रदायगुरुस्तोत्रम्

आब्रह्मलोकादाशेषादालोकालोकपर्वतात् ।
ये वसन्ति द्विजा देवास्तेभ्यो नित्यं नमाम्यहम् ॥

ॐ नमो ब्रह्मादिभ्यो ब्रह्मविद्यासम्प्रदायकर्तृभ्यो वंशर्षिभ्यो नमो गुरुभ्यः, सर्वोपप्लवरहितप्रज्ञानघनप्रत्यगर्थो ब्रह्माहमस्मि, सोहमस्मि, ब्रह्माहमस्मि ॥

श्रीनाथादिगुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवं
सिद्धौघं वटुकत्रयं पदयुगं दूतीक्रमं मण्डलम् ।
वीरान्द्व्यष्टचतुष्कषष्टिनवकं वीरावलीपञ्चकं,
श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥
वन्दे गुरुपदद्वन्द्वमवाङ्मनसगोचरम् ।
रक्तशुक्लप्रभामिश्रमतर्क्यं त्रैपुरं महः ॥

नारायणं पद्मभुवं वसिष्ठं शक्तिं च तत्पुत्रपराशरञ्च ।
व्यासं शुकं गौडपदं महान्तं, गोविन्दगोगीन्द्रमथास्य शिष्यम् ॥
श्रीशङ्कराचार्यमथास्य पद्मपादं च हस्तामलकञ्च शिष्यम् ।
तं तोटकं वार्तिककारमन्यानस्मद्गुरून् सन्ततमानतोऽस्मि ।

यागमन्दिर-प्रवेशः

गं भं भद्रकाल्यै नमः । द्वार की दाईं ओर
गं भं भैरवाय नमः । द्वार की बाईं ओर
गं लं लम्बोदराय नमः । द्वार के ऊपर की ओर

(इति द्वारदेवताः सम्पूज्य)

पूजापीठ एवं पूजा-सामग्री व्यवस्था

पूजा के लिये पूजक के सामने नाभि-पर्यन्त की ऊँचाई वाली लकड़ी की चौकी रखे । उस पर मध्य में यन्त्रराज, यन्त्रराज के वाम भाग में तिल तैल का लाल बत्ती सहित दीपक, दाहिने भाग में श्वेत बत्ती वाला घृत दीपक और धूपपात्र रखे । इस प्रकार यन्त्र के वामभाग में घण्टा, अपने सामने आचमन पात्र, अपने दाहिने भाग में पूजापात्र तथा पुष्प, अपनी बाईं ओर जलकलश और नैवेद्यादि पूजन सामग्री रखे । फिर पूजा प्रारम्भ करें ।

तत्त्वाचमनम्

गं आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ।
गं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा ।
गं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ।
गं सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ॥

गुरुपादुका मन्त्र[1]–

मस्तक पर मृगीमुद्रा द्वारा–ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ग्लौं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः श्रीगुरवे नमः, अमुकानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

ऐं ह्रीं श्रीं ऐ क्लीं सौः ऐंग्लौं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः श्रीपरमगुरवे नमः, श्रीअमुकानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः । ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौ ऐं ग्लौं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः श्रीपरमेष्ठिगुरवे नमः, अमुकानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

इस प्रकार स्मरण करके तथा सुमुख, सुवृत्त, चतुरस्र, मुद्गर, योनि इन पाँच मुद्राओं से गुरु को वाम भुजा में और गणपति मन्त्र से गणपति को दक्षिण भुजा में प्रणाम करे ।

घण्टापूजा

**हे घण्टे सुस्वरे पीठे घण्टाध्वनिविभूषिते ।
वादयन्ति परानन्दे घण्टादेवं प्रपूजयेत् ॥
आगमार्थं च देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम् ।
कुर्यात् घण्टारवं तत्र देवताह्वानलाञ्छनम् ॥**

(इति घण्टानादं कृत्वा)

---

1. यदि गुरुपादुका प्राप्त न हो तो पूर्ववत् नाममन्त्र से स्मरण करे ।

सङ्कल्पः

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्ण चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

मूलेन प्राणानायम्य । देशकालौ संकीर्त्य-मम श्री महागणपति प्रीत्यर्थं यथासम्भवद्रव्यैः यथाशक्तिसपर्याक्रमं निवर्तयिष्ये ।

इस प्रकार सङ्कल्प करके स्वयं को तिलकादि से अलङ्कृत करे तथा ताम्बूल से या पञ्चतिक्त से सुगन्धित मुख करके प्रसन्नचित्त होकर 'देवोऽहम्' भावना करे ।

पुष्पशोधनम्

गं पुष्पकेतुराजार्हते शताय सम्यक् समन्धाय ह्रीं पुष्पे-पुष्पे महापुष्पे सुपुष्पे पुष्पभूषिते पुष्पचयावकीर्णे हूँ फट् स्वाहा ।

इस मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित जल से पुष्पों का प्रोक्षण करे ।

आसनपूजा

आसन बिछाकर "सौः" इस मन्त्र को दस बार जपकर जल को अभिमन्त्रित करे । उस जल से एवं मूलमन्त्र से आसन का प्रोक्षण करे, पुनः–अस्य श्री आसनमहामन्त्रस्य– पृथिव्याः मेरुपृष्ठऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसने विनियोगः ॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

श्रीं ह्रीं क्लीं योगासनाय नमः वीरासनाय नमः, शरासनाय नमः ।
ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः ।

इससे पुष्पाक्षत द्वारा आसन की पूजा करके आसन पर बैठे ।

श्रीं ह्रीं क्लीं–रक्तद्वादशशक्तियुक्ताय दीपनाथाय नमः ।

(इससे भूमि पर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे ।)

देहरक्षा

श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीमहागणपते आत्मानं रक्ष रक्ष–(इससे स्वशरीर पर-तीन बार व्यापक करे, ।)

गुं गुरुभ्यो नमः ।	(दक्षिण भुजा में)
गं गणपतये नमः ।	(वाम भुजा में)
दुं दुर्गायै नमः ।	(दक्षिण ऊरु में
वं वटुकाय नमः ।	(वाम ऊरू में)
यां योगिनीभ्यो नमः ।	(दोनों पैरों पर)
क्षं क्षेत्रपालाय नमः ।	(नाभि पर)
पं परमात्मने नमः	(हृदय पर) स्पर्श करे ।

श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ नमो भगवति तिरस्करिणि महामाये महानिद्रे सकलपशुजनमनश्चक्षुः श्रोत्रतिरस्करणं कुरु कुरु स्वाहा ।

श्रीं ह्रीं क्लीं हसन्ति हसितालापे मातङ्गि परिचारिके मम भयविघ्नापदां नाशं कुरु कुरु ठः ठः ठः हुँ फट् स्वाहा ॥

श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं ह्रूं र र र र र र र र हूँ फट् स्वाहा ।

(इससे चारों ओर प्राकार की भावना करे ।)

(**ह्रीं भूर्भुवस्स्वरों,**) इससे छोटिका बजाकर दिग्बन्धन करे । मूलाधार से कुण्डलिनी को ब्रह्मरन्ध्र में स्थित महाशिव के साथ समायोग द्वारा निःसृत अमृत की धारा से अपना शरीर आप्लावित हो रहा है ऐसी भावना करे, और सावधान होकर मन को एकाग्र करे ।

तदन्तर मूलमन्त्र से यन्त्र पर पुष्पाञ्जलि दे तथा अपने बायें और दायें अग्र भाग में भी पुष्प छोड़े ।

इसके पश्चात् (**ऐं हः अस्त्राय फट्**) इस मन्त्र का आवर्तन करते हुए अङ्गुष्ठ से कनिष्ठिका पर्यन्त तथा दोनों करतल तथा शरीर पर न्यास एवं व्यापक करे ।

अर्चनानुज्ञा–

श्रीगुरो दक्षिणामूर्ते भक्तानुग्रहकारक ।
अनुज्ञां देहि भगवन् गणेशस्यार्चनाय मे ॥
अतिक्रूरमहाकाय कल्पान्तदहनोपम ।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ॥

सुवर्ण या रजत पत्र पर अष्टगंधादि से त्रिकोण षट्कोण बनाकर उसके बाहर अष्टदल बनावें, फिर उसके बाहर भूपुर श्रीमहागणपति का पूजा यन्त्र बनाकर प्राण प्रतिष्ठा करे ।

लघु प्राणप्रतिष्ठा[2]

'गं आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ह्रीं हंसः सोऽहं सोऽहं हंसः शिवः श्रीमहागणपति यन्त्रस्य प्राणा इह प्राणाः' ।

गं आं ह्रीं क्रों श्रीमहागणपतियन्त्रस्य जीव इह स्थितः ।

सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रजिह्वाघ्राणा इहैवागत्य–अस्मिन् यन्त्रे सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।

यन्त्र के त्रिकोण के अग्रभाग से प्रदक्षिण क्रम से चारों ओर और मध्य में पुष्पाक्षत से अर्चन करे ।

श्रीं ह्रीं क्लीं तीव्रायै नमः ॥
३ ज्वालिन्यै नमः ॥
३ नन्दायै नमः ॥
३ भोगदायै नमः ॥
३ कामरूपिण्यै नमः ॥
उग्रायै नमः ॥
३ तेजोवत्यै नमः ॥

2. यह प्रतिष्ठा–प्रतिदिन यन्त्र लिखकर–पूजा करने वाले के लिये है । प्रतिष्ठित यन्त्र में प्रतिदिन प्रतिष्ठा अपेक्षित नहीं है ।

३ सत्यायै नमः ॥
३ विघ्ननाशिन्यै नमः ॥
३ सर्वशक्तिकमलासनायै नमः ॥

(इस प्रकार नवपीठशक्तियों का अर्चन करे)

धर्माद्यष्टकपूजा

'त्रिकोण के बाहर आग्नेयादि कोणों में और पूर्वादि दिशाओं में अर्चन करें)

श्रीं ह्रीं क्लीं ॠं धर्माय नमः ॥ श्रीं ह्रीं क्लीं ॠं अधर्माय नमः ॥
३ ॠं ज्ञानाय नमः ॥ ३ ॠं अज्ञानाय नमः ॥
३ लृं वैराग्याय नमः ॥ ३ लृं अवैराग्याय नमः ॥
३ लॄं ऐश्वर्याय नमः ॥ ३ लॄं अनैश्वर्याय नमः ॥

(इति-अर्चयेत्)

दीप-पूजा

पूर्वसूचना के अनुसार दोनों दीपकों को प्रज्वलित करके–

गं दीपदेवि महादेवि शुभं भवतु मे सदा ।
यावत्पूजासमाप्तिः स्यात् तावत् प्रज्वल सुस्थिरा ॥

इस प्रार्थना-मन्त्र द्वारा दीपकों के समक्ष पुष्पाञ्जलि दे । तदनन्तर मूलमन्त्र से यन्त्रराज पर पुष्पाञ्जलि देकर अपने समक्ष, वाम और दक्षिण भाग में भी पुष्पाञ्जलि दे ।

भूतशुद्धि विधि

'भूतशुद्धि' द्वारा शरीर में स्थित 'सङ्कोच शरीर' जिसे 'पाप-शरीर' भी कहते हैं, उसका पृथिवी आदि पञ्चमहाभूतों के बीजाक्षरों से शोषण,

दहन एवं अमृताप्लावन करके 'दिव्यशरीर' का उत्पादन और 'शिव-शक्तिमय-शरीर का निर्माण किया जाता है । इसे एक प्रकार से 'नाडी-शुद्धि' भी कहते हैं । इसकी विधि इस प्रकार है–

सर्वप्रथम नासिका के दाहिने भाग (पिङ्गला) से श्वास खींच कर–

'ह्रीं मूलशृङ्गाटकात् सुषुम्नापथेन जीवशिवं परमशिवे योजयामि स्वाहा'

बोलकर जीव शिव को ब्रह्मरन्ध्र में स्थापित करे और वहाँ परमशिव के साथ एकीभूत होने की भावना करके नासिका के वाम भाग (इडा) से श्वास का रेचन करे ।

पुनः 'यं' बीज से इडा द्वारा पूरक करके–

गं सङ्कोचशरीरं शोषय शोषय स्वाहा'

बोलकर पिङ्गला द्वारा रेचक करते हुए भावना करे कि 'सङ्कोचशरीर का शोषण हो गया ।'

पुनः 'रं' बीज से पिङ्गला द्वारा पूरक करके–

गं सङ्कोचशरीरं दह दह पच पच स्वाहा ।

बोलकर इडा द्वारा रेचक करते हुए भावना करे कि–'सङ्कोच शरीर' का दहन हो गया ।

पुनः 'लं' बीज से इडा द्वारा पूरक करके–

'परमशिवामृतं वर्षय वर्षय स्वाहा' ।

बोलकर पिङ्गला द्वारा रेचक करते हुए भावना करे कि–'जले हुए 'पाप-शरीर' की भस्म सहस्रार से झरते हुए अमृत से आप्लावित हो गई' ।

पुनः 'लं' बीज से पिङ्गला द्वारा पूरक करके–

'शाम्भवशरीरमुत्पादयोत्पादय स्वाहा' ।

बोलकर इडा द्वारा रेचक करते हुए भावना करे कि–'इससे शाम्भव (दिव्य) शरीर उत्पन्न हो गया' ।

पुनः 'ह्लीं' बीज से इडा द्वारा पूरक करके–

गणपति मयं शरीरं कुरु कुरु स्वाहा ।

बोलकर पिङ्गला द्वारा रेचक करते हुए भावना करे कि–'दिव्य शरीर महागणपतिमय हो गया' ।

पुनः **'हंसः सोहं'** मन्त्र से पिङ्गला द्वारा पूरक करके–

'अवतर अवतर शिवपदात् जीव सुषुम्नापथेन प्रविश मूलशृङ्गाटकमुल्लसोल्लस ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हंसः सोहं स्वाहा' ।

बोलकर इडा द्वारा रेचक करते हुए भावना करे कि–शिव के साथ सहस्रार में जो जीवात्मा स्थापित किया था, वह सुषुम्ना मार्ग से पुनः मूलाधार में स्थित हो गया ।

(यहाँ यह विशेष स्मरणीय है कि भूतशुद्धि की इस क्रिया में पूरक और रेचक को ही प्राणायाम कहते हैं । इसमें कुम्भक नहीं होता इसे नाड़ी शुद्धि भी कहा जाता है । पूरक में प्रत्येक बीज का १६ बार उच्चारण होता है तथा रेचक में उसके आगे लिखे हुए वाक्य का उच्चारण होता है । इसका विशेष प्रकार जानने के लिये 'श्रीविद्या-रत्नाकर' का 'भूतशुद्धि' प्रकरण देखें ।)

आत्म-प्राण-प्रतिष्ठा

अपने हृदय पर दहिना हाथ रखकर–

गं 'आं ह्रीं क्रों मम सर्वेन्द्रियाणि ह्रीं आं ह्रीं क्रों मम वाङ्मनस्त्वक् चक्षुः श्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा'

यह वाक्य बोलकर प्राण प्रतिष्ठा की भावना करे तथा प्राणशक्ति की प्रार्थना करे–

रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरुढा कराब्जैः,
पाशं कोदण्डभिक्षूद्भवमथ गुणमप्यङ्कुशं पञ्चबाणान् ।

बिभ्राणाऽसृक्कपालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहाढ्या,
देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः ॥

या हृदय पर हाथ रख कर 'आं सोऽहं' इस मन्त्र को तीन बार बोलकर प्राण-प्रतिष्ठा की भावना करे ।

प्राणायामः–

आत्मप्राणप्रतिष्ठा के पश्चात् १६, १० अथवा ३ बार प्राणायाम करे । प्राणायाम की विधि इस प्रकार है–पहले 'नासिका के वामभाग से एक बार मन्त्र का मानसिक उच्चारण करते हुए पूरक करे तदनन्तर दोनों भागों की नासिका बन्द करके कुम्भक में चार बार मन्त्र का जप करे तथा उसके पश्चात् दो बार मन्त्र जपते हुए रेचक करे । पुनः नासिका के दक्षिणभाग से एक बार मन्त्रजप करते हुए पूरक, चार बार जप करते हुए कुम्भक तथा दो बार मन्त्रजप करते हुए रेचक करे ।' यह एक प्राणायाम हुआ । इस प्रकार कम-से-कम तीन प्राणायाम करने चाहिये । बाद में धीरे-धीरे मन्त्रों के जप की सङ्ख्या और प्राणायामों की सङ्ख्या बढ़ानी चाहिये ।

प्राणायाम के द्वारा जठराग्नि दीप्त होती है । शरीर के सब विकार दूर होते हैं तथा शरीर में कान्ति और दीप्ति आदि का प्रादुर्भाव होता है और कुछ ही समय के पश्चात् साधक को इन गुणों की अनुभूति होने लगती है । अतः साधनावस्था में प्राणायाम करना आवश्यक है । प्राणायाम में मन्त्रप्रयोग के स्थान पर मातृकावर्णों का भी उच्चारण होता है जिनमें ५१ मातृका-वर्णों को तीन भागों में विभक्त किया जाता है । यथा–

अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः इन १६ स्वरों से पूरक करे ।

कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं
टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं
पं फं बं भं मं इन २५ व्यञ्जनों से कुम्भक करे ।
यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं । इन १० व्यञ्जनों से रेचक करें ।

इसी प्रकार विपरीत क्रम से १० स्वरों से पूरक, २५ व्यञ्जनों से कुम्भक और १० व्यञ्जनों से रेचक करें। यह एक प्राणायाम होता है। ऐसे तीन प्राणायाम करने चाहिये।

विघ्नोत्सारणम्–

गं अपसर्पन्तु ते भूता, ये भूता भुवि संस्थिता।
ये भूता विघ्नकर्तास्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

इस मन्त्र का उच्चारण करके बाँये पैर की एड़ी से भूमि पर आघात तथा दोनों हाथों से क्रूर दृष्टि से देखते हुए और तीन ताली बजाये। इस प्रकार भूमिगत, आकाशगत एवं दिव्य विघ्नों को दूर करे।

तदनन्तर 'नमः' इस अङ्गुष्ठमन्त्र का उच्चारण करके शिखा बाँधे।

●

न्यासप्रकरणम्

मातृकान्यासः

विनियोगः–

अस्य श्रीमातृकासरस्वतीन्यासमहामन्त्रस्य ब्रह्माऋषिर्गायत्रीछन्दः श्री मातृकासरस्वतीदेवता हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः बिन्दवः कीलकानि मम श्रीमहागणपतिपूजाङ्गत्वेन न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः–

गं ब्रह्मणे ऋषये नमः (शिरसि), गायत्रीछन्दसे नमः (मुखे), श्रीमातृकासरस्वती देवतायै नमः (हृदये), हल्भ्यो बीजेभ्यो नमः (गुह्ये), स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः (पादयोः), बिन्दुभ्यः कीलकेभ्यो नमः (नाभौ), विनियोगाय नमः (करसम्पुटे)।

इसके पश्चात् सम्पूर्ण मातृका-'अं-आं-इं-ईं. से क्षः' तक, बोलते हुए सर्वाङ्ग में तीन बार व्यापक करे।

करन्यासः—

गं अं कं खं गं घं ङं आं	अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।
गं इं चं छं जं झं ञं ईं	तर्जनीभ्यां नमः ।
गं उं टं ठं डं ढं णं ऊं	मध्यमाभ्यां नमः ।
गं एं तं थं दं धं नं ऐं	अनामिकाभ्यां नमः ।
गं ओं पं फं बं भं मं औं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
गं अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

षडङ्गन्यासः—

गं अं कं खं गं घं ङं आं	हृदयाय नमः ।
गं इं चं छं जं झं ञं ईं	शिरसे स्वाहा ।
गं उं टं ठं डं ढं णं ऊं	शिखायै वषट् ।
गं एं तं थं दं धं नं ऐं	कवचाय हुम् ।
गं ओं पं फं बं भं मं औं	नेत्रत्रयाय वौषट् ।
गं अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं	अस्त्राय फट् ।

सम्पूर्णमातृकासेव्यापक करें ।

ध्यानम्—

पञ्चाशद्वर्णभेदैर्विहित- **वदन-दोः—पादयुक्-कुक्षि-वक्षो-**
देशां भास्वत्कपर्दां कलितशशिकलामिन्दुकुन्दावदाताम् ।
अक्षस्रक्कुम्भचिन्तालिखित-वरकरां त्रीक्षणामब्जसंस्था-
मच्छाकल्पामतुच्छस्तनजघनभरां भारतीं तां नमामि ॥

इससे ध्यान करके 'लं पृथिकात्मकं' इत्यादि पूर्वोक्त मन्त्रों से पञ्चोपचार-पूजा करे । तदनन्तर क्रमशः अन्तर्मातृका और बहिर्मातृका-न्यास करे ।

(न्यास के लिये अनामिका एवं अंगूठे को मिलाकर 'तत्त्वमुद्रा' द्वारा लिखे हुए मातृकावर्ण का उच्चारण करके बताये गये अंग का स्पर्श करे । दाहिने हाथ पर बाँये हाथ से मुद्रा बनाकर न्यास करे तथा जिह्वा, दन्त, गुह्य आदि स्पर्श के अयोग्य स्थानों का केवल मानसिक स्मरण करे ।)

अन्तर्मातृका-न्यासः

कण्ठगत विशुद्धि चक्र के षोडशदलकमल में दक्षिणावर्त से–

गं अं नमः । आं नमः । इं नमः । ईं नमः । उं नमः । ऊं नमः । ऋं नमः । ॠं नमः । ऌं नमः ।ॡं नमः । एं नमः । ऐं नमः । ओं नमः । औं नमः । अं नमः । अः नमः ।

हृदयगत अनाहत चक्र के द्वादशदलकमल में–

गं कं नमः । खं नमः । गं नमः । घं नमः । ङं नमः । चं नमः । छंनमः । जं नमः । झं नमः । ञं नमः । टं नमः । ठं नमः ।

नाभिगत मणिपूरचक्र के दशदलकमल में–

गं डं नमः । ढं नमः । णं नमः । तं नमः । थं नमः । दं नमः । धं नमः । नं नमः। पं नमः । फं नमः ।

उपस्थ-मूलगत स्वाधिष्ठानचक्र के षडदलकमल मे–

गं बं नमः । भं नमः । मं नमः । यं नमः । रं नमः । लं नमः ।

(पायु और उपस्थ के बीच में) मूलाधारचक्र चतुर्दलकमल में–

गं वं नमः । शं नमः । षं नमः । सं नमः ।

भौहों के बीच आज्ञाचक्र के द्विदल में–

गं हं नमः । गं क्षं नमः ।

मस्तक पर सहस्रारचक्र में–

(यहाँ २० पत्रों में एक अक्षर का न्यास करने से एक हजार पत्रों में ५0 मातृकाक्षरों का न्यास होता है ।) यथा–

गं अं नमः । आं नमः । इं नमः । ईं नमः । उं नमः । ऊं नमः । ऋं नमः । ॠं नमः । ऌं नमः । ॡं नमः । एं नमः । ऐं नमः । ओं नमः । औं नमः । अं नमः । अः नमः । कं नमः । खं नमः । गं नमः । घं नमः । ङं नमः । चं नमः । छं नमः । जं नमः । झं नमः । ञं नमः । टं नम । ठं नमः । डं नमः । ढं नमः । णं नमः । तं नमः । थं नमः । दं नमः । धं नमः । नं नमः । पं नमः । फं नमः । बं नमः । भं नमः । मं नमः । यं नमः । रं नमः । लं नमः । वं नमः । शं नमः । षं नमः । सं नमः । हं नमः । ळं नमः । क्षं नमः ।

इसका बीस बार उच्चारम करने से १००० पत्रों में न्यास होता है । इसके पश्चात् वहिर्मातृकान्यास करें–

बहिर्मातृकान्यासः

गं अं नमः (शिरसि)
गं आं नमः (ललाटे)
गं इं नमः (दक्षनेत्रे)
गं ईं नमः (वामनेत्रे)
गं उं नमः (दक्षकर्णे)
गं ऊं नमः (वामकर्णे)
गं ॠं नमः (दक्षनासापुटे)
गं ॠं नमः (वामनासापुटे)
गं ऌं नमः (दक्षकपोले)
गं ॡं नमः (वामकपोले)
गं एं नमः (ऊर्ध्वोष्ठे)
गं ऐं नमः (अधरोष्ठे)
गं ओं नमः (ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ)
गं औं नमः (अधोदन्तपङ्क्तौ)
गं अं नमः (जिह्वाग्रे)
गं अः नमः (कण्ठे)
गं कं नमः (दक्षबाहुमूले)
गं खं नमः (दक्षकूर्परे) (कोहनी)
नमः(दक्षमणिबन्धे) (कलाई)
गं घं नमः (दक्षकराङ्गुलिमूले)
ङं नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे
गं चं नमः (वामबाहुमूले)
गं छं नमः (वामकर्पूरे)
गं जं नमः (वाममणिबन्धे)
गं झं नमः (वामकराङ्गुलिमूले)
गं ञं नमः (वामकराङ्गुल्यग्रे)
गं टं नमः (दक्षोरूमूले) कटि प्रदेश)
गं ठं नमः (दक्षजानुनि) घुटना)
गं डं नमः (दक्षगुल्फे) टखना)
गं ढं नमः (दक्षपादाङ्गुलिमूले)
गं णं नमः (दक्षपादाङ्गुल्यग्रे)
गं तं नमः (वामोरुमूले) कटिप्रदेश)
गं थं नमः (वामजानुनि) घुटना)
गं दं नमः (वामगुल्फे)
गं धं नमः (वामपादाङ्गलिमूले)
गं नं नमः (वामपादाङ्गुल्यग्रे)
गं पं नमः (दक्षपार्श्वे) दाहिनी पसली)
गं फं नमः (वामपार्श्वे) बाईं पसली)
गं बं नमः (पृष्ठे) पीठ)
गं भं नमः (नाभौ)
गं मं नमः (जठरे) उदर)
(गं यं नमः (हृदये)
गं रं नमः (दक्षकक्षे) दाहिनी कोंख)
गं वं नमः (वामकक्षे) बाईं कोंख)
गं शं नमः (हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं) हृदय से दाहिने हाथ की अंगुलियों तक)
गं षं नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं) हृदय से बाँयें हाथ की अंगुलियों तक)

गं सं नमः (हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं) हृदय से दाहिने पैर की अङ्गुलियों तक)
गं हं नमः(हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं) हृदय से बायें पैर की अंगुलियों तक)
गं ळं नमः (कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं कटि से पैर की अंगुलियों तक)
गं क्षं नमः (कट्यादिब्रह्मरन्ध्रान्तं) कटि से मस्तक पर्यन्त)

यहाँ प्रत्येक नाममन्त्र के पहले "ह्रीं" बीज लगाकर या गं अपना मूलमन्त्र, शेष में नमः लगाकर न्यास करें ।

पीठन्यास–

सब नामों के आगे मूलमन्त्र बोले ।

पहले मूलमन्त्र से 'व्यापक' करके पीठन्यास करे ।

मूलाधरे–आधारशक्त्यै नमः । स्वाधिष्ठाने-प्रकृत्यै नमः, मणिपूरे कूर्माय नमः । हृदये–अनन्ताय नमः पृथिव्यै नमः, सुधासमुद्राय नमः, मणिद्वीपाय नमः, चिन्तामणिगृहाय नमः, पारिजाताय नमः ।

हृदयमूले–रत्नवेदिकायै नमः । तस्योपरिमणिपीठाय नमः, दिक्षु नानामुनिगणेभ्यो नमः, नाना देवेभ्यो नमः । दक्षस्कन्धे–धर्माय नमः । वामस्कन्धे-ज्ञानाय नमः । वामोरौ वैराग्याय नमः । दक्षोरौ-ऐश्वर्याय नमः ।

दक्षकुक्षौ-अधर्माय नमः । दक्षपृष्ठेअज्ञानाय नमः ।

वामपृष्ठे–अवैराग्यायनमः । वामकुक्षौ–अनैश्वर्याय नमः । हृदये-शेषाय नमः, पद्मायनमः । प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः ।

हृदयमध्ये–पञ्चाशद्वर्णभूषितकर्णिकायै नमः, वैश्वानरमण्डलाय नमः । सूर्य मण्डलाय नमः । सोममण्डलाय नमः । सं सत्त्वाय नमः । रं रजसे नमः । तं तमसे नमः, आं आत्मने नमः । अं अन्तरात्मने नमः । पं परमात्मने नमः । ह्रीं ज्ञानात्मने नमः ।

मूलमन्त्रन्यास :–

तान्त्रिक सन्ध्या में लिखे अनुसार मूल मन्त्र के क्रम से विनियोग, ऋष्यादिन्यास, करन्यास, षडङ्गन्यास और ध्यान करके मन्त्र का जप करें ।

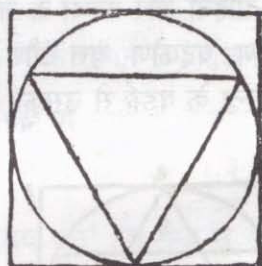
श्रीदत्तात्रेयानन्दनाथ विरचितायां श्री महागणपतिवरिवस्यायां न्यास प्रकरणम् सम्पूर्णम् ।

●

अथ पात्रासादनम्

कलशस्थापन–

पूजापीठ पर अपने बायें भाग में मत्स्यमुद्रा द्वारा त्रिकोण, वृत्त और चतुरस्रात्मक मण्डल जल से बनाकर '(मूलमन्त्र) गं कलशमण्डलाय नमः' बोलकर अक्षत और पुष्प से उसकी पूजा करे। मण्डल की आकृति इस प्रकार है–



फिर कलश के जल में सुगन्धित द्रव्य तथा गन्ध पुष्प डालकर उक्त मण्डल पर कलश का स्थापन करके प्रार्थना करे–

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः॥
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः।
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि च नदा ह्रदाः।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

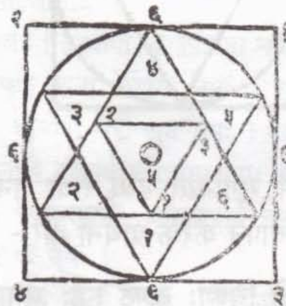
तदनन्तर मूलमन्त्र से आठ बार अभिमन्त्रित कर धेनुमुद्रा दिखाये और उस जल से–

गणेशार्चनकाले हि यानि यानीह साम्प्रतम् ।
वस्तूनि सौरभाढ्यानि पवित्राणि भवन्तु वै ॥

पूजा-सामग्री एवं स्वयं को प्रोक्षित करे ।

सामान्यार्ध्य-विधिः

कलश (वर्धनीपात्र) की दाहिनी ओर कलश के जल को अन्य लघुपात्र में लेकर उससे बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त और चतुरस्रात्मक मण्डल मत्स्यमुद्रा द्वारा बनाकर मूलमन्त्र के षडङ्ग से उसका अर्चन करे । यथा–



(चतुरस्र में–अग्नि, ईशान, नैर्ऋति, वायुकोण, मध्य तथा चारों दिशाओं में–)

श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ गां हृदयाय नमः– हृदयशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
श्रीं गीं शिरसे स्वाहा– शिरःशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
ह्रीं गूं शिखायै वषट्– शिखाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
क्लीं गैं कवचाय हुं– कवचशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
ग्लौं गौं नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
गं गः अस्त्राय फट्– अस्त्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

(तदनन्तर षट्कोण में सामने से प्रदक्षिण क्रम से–)

श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ गां हृदयाय नमः– हृदयशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
श्रीं गीं शिरसे स्वाहा– शिरःशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
ह्रीं गूं शिखायै वषट्– शिखाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
क्लीं गैं कवचाय हुंम्– कवचशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
ग्लौं गौं नेत्रत्रयाय वौषट्– नेत्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
गं गः अस्त्राय फट्– अस्त्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

(तत्पश्चात् त्रिकोण के सामने से प्रदक्षिण क्रम से–)

३ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं नमः ॥ ३ गणपतये वरवरद नमः ॥
३ सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा नमः । ३ मूलं नमः (बिन्दौ)

इसके बाद 'अस्त्राय फट्' इस मन्त्र से सामान्यार्घपात्र के त्रिपदी का कलश जल से प्रक्षालन करे–

अं अग्निमण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने श्री महागणपतेः सामान्यार्घ्य-पात्राधाराय नमः'

(इससे आधारत्रिपदी का मण्डल पर स्थापन करे और उस पर)

३ 'रां रीं रूं रैं रौं रः रमलवरयूँ अग्निमण्डलाय नमः''

(इससे अग्निमण्डल की भावना करके अग्नि की दस कलाओं की नीचे लिखे अनुसार पूजा करे)

यं धूम्रार्चिष्कलायै नमः ॥ षं सुश्री कलायै नमः ॥
रं ऊष्मा कलायै नमः ॥ सं सुरूपा कलायै नमः ॥
लं ज्वलिनी कलायै नमः ॥ हं कपिला कलायै नमः ॥
वं ज्वालिनी कलायै नमः ॥ ळं हव्यवाहिनी कलायै नमः ॥
शं विस्फुलिङ्गिनी कलायै नमः ॥ क्षं कव्यवाहिनीकलायै नमः ॥

३ अस्त्राय फट् इससे शंखा को प्रक्षालित करके–

उं सूर्यमण्डलायार्थप्रदद्वादशकलात्मने श्रीमहागणपतेः सामान्यार्ध्यपात्राय नमः ।

इससे शंख को आधार पर स्थापित करे और उस पर हां हीं हूँ हैं हौं हः हमलवरयू सूर्यमण्डलाय नमः' इससे सूर्यमण्डल की भावना करके नीचे लिखे अनुसार बारह कलाओं की पूजा करे ।– (प्रदक्षिणा क्रम से)



कं भं तपिनीकलायै नमः ॥ छं दं सुषुम्नाकलायै नमः ॥
खं बं तापिनीकलायै नमः ॥ जं थं भोगदाकलायै नमः ॥
गं फं धूम्राकलायै नमः ॥ झं तं विश्वाकलायै नमः ॥
घं पं मरीचिकलायै नमः ॥ ञं णं बोधिनीकलायै नमः ॥
ङ नं ज्वालिनीकलायै नमः ॥ टं ढं धारिणीकलायै नमः ॥
चं धं रुचिकलायै नमः ॥ ठं डं क्षमाकलायै नमः ॥

३ मं सोममण्डलाय कामप्रदषोडशकलात्मने श्रीमहागणपतेः सामान्यार्ध्यामृताय नमः

इससे कलश के जल से शंख में जल पूरित करे और क्षीर-बिन्दु भी डाले । फिर उसमें

सां सीं सूं सैं सौं सः समलवरयूं सोममण्डलाय नमः ।

इससे सोममण्डल की भावना करके उसमें सोलह सोमकलाओं की पूजा करे–

अं अमृतकलायै नमः ॥	लृं चन्द्रिकलायै नमः ॥
आं मानदाकलायै नमः ॥	लॄं कान्तिकलायै नमः ॥
इं पूषाकलायै नमः ॥	एं ज्योत्स्नाकलायै नमः ॥
ईं तुष्टिकलायै नमः ॥	ऐं श्रीकलायै नमः ॥
उं पुष्टिकलायै नमः ॥	ओं प्रीतिकलायै नमः ॥
ऊं रतिकलायै नमः ॥	औं अङ्गदाकलायै नमः ॥
ऋं धृतिकलायै नमः ॥	अं पूर्णाकलायै नमः ॥
ॠं शशिनीकलायै नमः ॥	अः पूर्णामृता कलायै नमः ॥

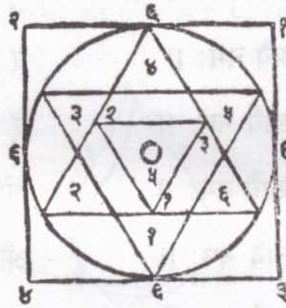
तदनन्तर शङ्ख में षट्कोण लिखकर पूर्वोक्त षडङ्ग मन्त्रो से अर्चन करे। **'अस्त्राय फट्'** इस से रक्षण **'कवचाय हुं'** इससे अवगुण्ठन, धेनु और योनिमुद्रा प्रदर्शन मूलमन्त्र से सात बार उसे अभिमन्त्रित करे तथा उसके जल से पूजा-द्रव्यों का तथा स्वयं का–

गणेशार्चन-काले हि यानि यानीह साम्प्रतम् ।
वस्तूनि सौरभाढ्यानि पवित्राणि भवन्तु वै ॥

यह श्लोक बोलकर प्रोक्षण करे।

विशेषार्घ्यविधि

सामान्यार्घ्यपात्र के दक्षिण में शङ्खजल से पूर्ववत् आधार-मण्डल और बिन्दु में अनुस्वार-सहित चतुर्थ स्वर (ईं) लिखकर उसमें अपने अग्रकोण से प्रदक्षिणा क्रम का अनुसरण कर चतुरस्र में मूलमन्त्र के षडङ्ग से पूजा करे–



ऊँ गां हृदयाय नमः हृदयशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
श्रीं गी शिरसे स्वाहा शिरःशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
ह्रीं गूं शिखायै वषट् शिखाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
क्ली गैं कवचाय हुं कवचशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
ग्लौं गौं नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
गं गः अस्त्राय फट् अस्त्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

तदनन्तर षट्कोण में सामने के अग्रकोण से प्रदक्षिण क्रम-पूर्वक पूर्ववत् पूजन करे । यथा–

ऊँ गां हृदयाय नमः हृदयशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
श्रीं गीं शिरसे स्वाहा शिरःशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
ह्रीं गूं शिखायै वषट् शिखाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
क्लीं गैं कवचाय हुं कवचशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
ग्लौं गौं नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
गं गः अस्त्राय फट् अस्त्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

इसके पश्चात् नीचे लिखे मन्त्रों से त्रिकोण तथा बिन्दु में पूर्ववत् पूजा करे–

तीन कोणों में–

३ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं गं नमः । गणपतये वरवरद नमः ।
सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा नमः । मूलं नमः (बिन्दु में)

'ह्रीं' अस्त्राय फट्' इस मन्त्रद्वारा कलश जल से आधार को प्रक्षालित करके–

'अं अग्निमण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने श्रीमहागणपतेः विशेषार्ध्यपात्राधाराय नमः' ।

इससे आधार को स्थापित करके–

'रां रीं रूं रैं रौं रः रमलवरयूं अग्निमण्डलाय नमः'

इससे अग्निमण्डल की भावना करके दस वह्निकलाओं की पूजा करे । यथा–

३ यं धूम्रार्चिष्कलायै नमः।। षं सुश्री कलायै नमः ।।
३ रं ऊष्मा कलायै नमः ।। सं सुरूपा कलायै नमः ।।
३ लं ज्वलिनी कलायै नमः ।। हं कपिला कलायै नमः ।।
३ वं ज्वालिनी कलायै नमः ।। ळ हव्यवाहिनी कलायै नमः।।
३ शं विस्फुलिङ्गिनी कलायै नमः ।। क्षं कव्यवाहिनीकलायैनम कलायै नमः।।

ततः–

'ह्रीं' अस्त्राय फट्' इस अस्त्रमन्त्र से विशेषार्घ्य पात्र को प्रक्षालित करके–

उं सूर्यमण्डलायार्थप्रद-द्वादशकलात्मने श्रीमहागणपतेः विशेषार्ध्य पात्राय नमः।

इससे विशेषार्घ्यपात्र को आधार पर स्थापित करके–
ह्रीं ऐं महालक्ष्मीश्वरि परमस्वामिनि ऊर्ध्वशून्यप्रवाहिनि सोमसूर्याग्नि-भक्षिणि परमाकाशभासुरे आगच्छागच्छ विश विश पात्रं प्रतिगृह्ण प्रतिगृह्ण हुं फट् स्वाहा' ।
इस मन्त्र से पुष्पाञ्जलि देवे । तथा–
हां हीं हूं हैं हौं हः हमलवरयूं सूर्यमण्डलाय नमः ।

इससे सूर्यमण्डल की भावना करके उसमें १२ सूर्यकलाओं की पूजा करे–

कं भं तपिनीकलायै नमः ।। छं दं सुषुम्नाकलायै नमः ।।
खं बं तापिनीकलायै नमः ।। जं थं भोगदाकलायै नमः ।।
गं फं धूम्राकलायै नमः ।। झं तं विश्वाकलायै नमः ।।
घं पं मरीचिकलायै नमः ।। ञं णं बोधिनीकलायै नमः ।।
ङं नं ज्वालिनीकलायै नमः ।। टं ढं धारिणीकलायै नमः ।।
चं धं रुचिकलायै नमः ।। ठं डं क्षमा-कलायै नमः ।।

तदनन्तर विशेषार्घ्य में–

मं सोममण्डलाय कामप्रदषोडशकलात्मने श्रीमहागणपतेः विशेषार्ध्यामृताय नमः

इससे अकार से क्षकार पर्यन्त और क्षकार से अकार पर्यन्त विन्दुसहित मातृका द्वारा कस्तूरी एवं केसर से सुवासित क्षीर को पूरित करके अष्टगन्ध से युक्त पुष्प उसमें डाले । और–

सां सीं सूं सैं सौं सः समलवरयूं सोममण्डलाय नमः ।

इससे सोममण्डल की भावना करके षोडश कलाओं की पूजा करे–

अं अमृतकलायै नमः ।। लृं चन्द्रिकाकलायै नमः ।।
आं मानदाकलायै नमः ।। लॄं कान्तिकलायै नमः ।।
इं पूषाकलायै नमः ।। एं ज्योत्स्नाकलायै नमः ।।
ईं तुष्टिकलायै नमः ।। ऐं श्रीकलायै नमः ।।
उं पुष्टि कलायै नमः ।। ओं प्रीतिकलायै नमः ।।
ऊं रतिकलायै नमः ।। औं अङ्गदाकलायै नमः ।।
ऋं धृतिकलायै नमः ।। अं पूर्णाकलायै नमः ।।
ॠं शशिनीकलायै नमः ।। अः पूर्णामृता कलायै नमः ।।

'गं ॐ जूं सः स्वाहाः' इससे आठ बार अभिमन्त्रित करके विशेषार्घ्यपात्र में मत्स्यमुद्रा से षट्कोण बनाकर षडङ्गमन्त्रों से पूजा करे ।

ह्रीं तां चिन्मयीमानन्दलक्षणाममृतकलशपिशितहस्तद्वयां प्रसन्नां देवीं पूजयामि नमः स्वाहा ।

इससे सुधादेवी का अर्चन करके उस अर्घ्य से कुछ अर्घ्यामृत आचमनी से वषट्' का उच्चारण कर निकालें, और 'ह्रीं स्वाहा' इससे वहीं उस पात्र में छोड़ दें । 'हुं' इससे अवगुण्ठन 'वौषट्' से धेनुमुद्रा द्वारा अमृतीकरण करे फिर 'ह्रीं फट्' से संरक्षण करके 'ह्रीं नमः' इससे उसमें पुष्प छोड़े । तदनन्तर मूलमन्त्र बोलते हुए गालिनी-मुद्रा से उसका निरीक्षण कर 'ऐं' बीज से योनिमुद्रा द्वारा प्रणाम करे और मूलमन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करके सुधादेवी की षोडशोपचार पूजा करे तथा उसके बिन्दुओं से–

३ गणेशार्चनकाले हि यानि यानीह साम्प्रतम् ।
वस्तूनि सौरभाढ्यानि पवित्राणि भवन्तु वै ॥

यह श्लोक बोलकर पूजासामग्री का प्रोक्षण करे तथा समस्त वस्तुओं के विद्यामय होने की भावना करे ।

शुद्धि-संस्कारः–

विशेषार्घ्यपात्र के दक्षिण में सामान्यार्घ्योदक से त्रिकोण, वृत्त, और चतुरस्रात्मक मण्डल मत्स्यमुद्रा द्वारा बनाकर– (यह यन्त्र कलश स्थापन में है)

३ 'ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय' मन्त्र से मण्डल की पूजा करे और उस पर आर्द्रकयुक्त शुद्धिपात्र को स्थापित करके **ॐ श्लीं पशु हुं फट्'** मन्त्र से उसे अभिमन्त्रित करे तथा गन्धाक्षत से पूजा करे ।

इसी प्रकार उसके नीचे त्रिकोण, वृत्त एवं चतुरस्रात्मक और दो मण्डल बनाये जिसमें से एक में–

३ हंसश्शिवस्सोहं, सोहं हंसश्शिवः, हंसश्शिवस्सोहं हंसः नमः ।

इससे पूजा करके गुरु-पात्र स्थापित करे और दूसरे मण्डल में ३ 'हंः सः नमः' मन्त्र से मण्डल की पूजा करके आत्मपात्र स्थापित करे । इसके अनन्तर विशेषार्घ्य पात्र को दाहिने हाथ से स्पर्श करके नीचे लिखे मन्त्रों से अभिमन्त्रित करे । यथा–

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि । तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ।।
गणानां त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपश्रवस्तमम् ।
जेष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ।।
(श्रीक्रमोक्तचतुर्नवतिमन्त्राद्यभिमन्त्रणमत्र नास्ति)
मूल मन्त्रेणाष्टवाराभिमन्त्रणाम्

इस प्रकार अभिमन्त्रित विशेषार्घ्यामृत से कुछ गुरुपात्र में लेकर गुरुत्रय की पादुकामन्त्र से पूजा करे । गुरुपात्र का क्षीर आत्मपात्र में लेकर मूलाधार में वालाग्रमात्र अनादिवासनारूप ईन्धन से प्रज्चलित कुण्डलिनी में स्थित चिदग्निमण्डल का ध्यान करके– 'ह्रीं कुण्डलिन्यधिष्ठितचिदग्निमण्डलाय नमः' इसके द्वारा मानसिक पूजा करके नीचे बताये अनुसार 'आचमनी से ग्रहण करे–

गं (मूलं) पुण्यं जुहोमि स्वाहा गं (मूलं) सङ्कल्पं जुहोमि स्वाहा
गं (मूलं) पापं जुहोमि स्वाहा गं (मूलं) विकल्पं जुहोमि स्वाहा
गं (मूलं) कृत्यं जुहोमि स्वाहा गं (मूलं) धर्मं जुहोमि स्वाहा
गं (मूलं) अकृत्यं जुहोमि स्वाहा गं (मूलं) अधर्मं जुहोमि स्वाहा
गं (मूलं) अधर्मं जुहोमि वौषट्

गं इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्न-सुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्तभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा ।

इससे पूर्णाहुति की भावना करके–गं आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि । योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि । अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि । अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा ।

इससे अपने कुण्डलिनीरूप चिदग्नि कुण्ड में होम-बुद्धि से हवन करे फिर विशेषार्घ्य से कुछ क्षीर क्षीरकशल में डाले ।

समाप्ति-पर्यन्त शङ्ख और विशेषार्घ्य-पात्र को सुस्थिर रखे, चलाये नही ।

श्रीदत्तात्रेयानन्दनाथ विरचितायां श्रीमहागणपतेः वरिवस्यायां
पात्रासादनं सम्पूर्णम् ।

अन्तर्यागः

मूलाधार से ब्रह्मरन्ध्र-पर्यन्त उल्लसित कमलनाल के सदृश अतिसूक्ष्म तन्तु के समान, दस हजार सूर्यों के समान प्रकाशवाली, सैकड़ो चन्द्ररश्मि के तुल्य शीतल एवं तेजोदण्ड की आकृति वाली चितिशक्ति कुण्डली की भावना करे। हृदय में सिद्धलक्ष्मी सहित महागणपति की भावना करे।

ब्रह्मरन्ध्र से झर रही अमृतधाराओं को १-चन्दन, २-पुष्प, ३-धूप, ४-दीप, ५-नैवेद्य और ६-ताम्बूल लिये हुए १-पीत, २-हरित, ३ श्याम, ४ रक्त ५ श्वेत एवं ६ पञ्चवर्णवाली १ पृथ्वी २ आकाश ३ वायु ४-अग्नि, ५-जल तथा ६ सर्वभूतमयी पञ्चमहाभूतों की अधिष्ठात्री देवियाँ सर्वाङ्ग सुन्दरी, रूप, लावण्य-तारुण्य की आभा से देदीप्यमान, परम-सुन्दर युवतियाँ छहों उपचार लिये हुए उन्हें क्रम से समर्पित कर रही हैं। तत्पश्चात् गन्ध की अधिष्ठात्री पीतवर्णवाली देवी महागणपति की नासिका में विलीन हो गई, हरितवर्णवाली देवी कर्णों में श्यामवर्णवाली धूप की अधिष्ठात्री नाभि में रक्तवर्णवाली दीप की अधिष्ठात्री नेत्रों में, श्वेतवर्णवाली नैवेद्य की अधिष्ठात्री जिह्वा में तथा पाँचों वर्णोंवाली ताम्बूल की अधिष्ठात्री मुख में विलीन हो गई ऐसी भावना करे।

इसके पश्चात् जीवात्मा भी गणपति के चरणों में विलीन हो गया, ऐसी भावना करके कुछ क्षणों तक किञ्चिन्मात्र भी चिन्तन न करे। श्वास-प्रश्वास को कुछ काल के लिए अवरुद्ध करे।

तदनन्तर गणपति को ब्रह्मरन्ध्र में लेजाकर त्रिखण्डामुद्रा में पुष्प लेकर नासिकारन्ध्र से पुष्पों में लाकर यन्त्र पर पुष्प अर्पण करते हुए बोले–

श्रीसिद्धलक्ष्मीसहित महागणपतेः अमृतचैतन्यमूर्तिं कल्पयामि नमः।

फिर यन्त्र में–ध्यान करें।

ऐक्षवे जलधौ द्वीपे नवरत्नमये शुभे।
तत्तरङ्गोल्लसत्तोयै धौते शीततलेऽमले ॥ १ ॥
तत्तोयकणसंपृक्तगंधवाहनिषेविते।
कल्पपादपसंशोभिभूभागसमलङ्कृते ॥ २ ॥

नानाकुसुमसंकीर्णे नानापक्षिविराजिते ।
अनेकफलसंकीर्ण–भाविते चाप्सरोगणैः ॥ ३ ॥
उद्यद्बालातपोद्योतिचंद्रज्योत्स्नासमाकुले ।
विलसत्पद्मरागौघकुटिट्मारुणभूतले ॥ ४ ॥
कल्पपादपपुष्पस्थषट्पदस्वनमञ्जुले ।
पारिजातं कल्पतरुं तस्य मध्ये विचिन्तयेत् ॥ ५ ॥
युगपद् ऋतुषट्केन सेवितं पुष्पशोभितम् ।
नवरत्नमयं तस्याऽधस्तात् सिंहासनं स्मरेत् ॥ ६ ॥
तन्मध्ये लिपिपद्मं च षडस्त्रं तस्य मध्यतः ।
कर्णिकायां त्रिकोणं च तत्संस्थं च महाग्रणम् ॥ ७ ॥
नानारत्नविभूषाढ्यं एकदन्तं गजाननम् ।
बीजापूरगदाचापशूलचक्राम्बुजान्यपि ॥ ८ ॥
पाशोत्पले च ब्रीह्यग्रं स्वदन्तं रत्नपात्रकम् ।
धारयन्तं दशभुजैः भक्ताभीष्टप्रदायकम् ॥ ९ ॥
सर्वाङ्गभूषोज्वलया पद्मसंशोभिहस्तया ।
आश्लिष्टवामपश्वँ च देव्या वल्लभया सदा ॥ १0 ॥
विघ्नेशं विघ्नहर्तारं फुल्लपद्माभविग्रहम् ।
पुष्करोद्धृतरत्नौघमयकुम्भमुखस्नुतात् ॥ ११ ॥
मणिमुक्ताप्रवालादीन् वर्षन्तं धारया मुहुः ।
सर्वतः साधकस्याग्रे स्वदानजललोलुपान् ॥ १२ ॥
षट्पदालीन् कर्णतालैः वारयन्तं मुहुर्मुहुः ।
अमरासुरसंसेव्यं सद्रत्नमुकुटोज्ज्वलं ॥ १३ ॥
उरूदरं गजमुखं नानाभरणभूषितम् ।
इति ध्यात्वा गणपतिं यजेत् सर्वोपचारकैः ॥ १४ ॥
बीजापूरगदेक्षुकार्मुकरुजा चक्राब्जपाशोत्पल-
व्रीह्यग्रस्वविषाणरत्नकलशप्रोद्यत्कराम्भोरुहः ।
ध्येयो वल्लभया सपद्मकरयाश्लिष्टोज्ज्वलद्भूषया ।
विश्वोत्पत्तिविपत्तिसंस्थितिकरो विघ्नेश इष्टार्थदः ॥ १५ ॥

(इति ध्यात्वा)

गणानांत्वेति मंत्रेण मूलमन्त्रेण च अस्मिन् यन्त्रे (बिम्बे वा)

श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतिं साङ्गम् सपरिवारम् सावरणम् आवाहयामि नमः ॥

श्रीं ह्रीं क्लीं मूलं आवाहितो भव ॥ ३ मूलं सम्मुखो भव ॥
३ मूलं संस्थापितो भव ॥ ३ मूलं अवगुण्ठितो भव ॥
३ मूलं सन्निधापितो भव ॥ ३ मूलं सुप्रसन्नो भव ॥
३ मूलं सन्निरुद्धो भव ॥ ३ मूलं वरदो भव ॥

स्वामिन् सर्वजगन्नाथ यावत्पूजावसानकम् ।
तावत्त्वं प्रीत भावेन यन्त्रेऽस्मिन् सन्निधि कुरु (बिम्बेऽस्मिन्) ॥

इति मन्त्रैरावाहनादि षण्मुद्राः प्रदर्श्य, वन्दनधेनुयोनिमुद्राश्च प्रदर्शयेत् । अथ हृदयादि षडङ्गमुद्राश्चः प्रदर्शयेत् ॥

महागणपतिप्रियपाशादि सप्तमुद्राः प्रदर्शयेत् ॥

अथ षोडशोपचारपूजा

(श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतिदेवतायाः षोडशोपचारानाचरेत्) ।
श्रीं ह्री क्लीं श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतये पाद्यं कल्पयामि नमः ।

३	"	"	"	अर्घ्य	"	॥
३	"	"	"	आचमनीयं	"	॥
३	"	"	"	स्नानं *	"	॥
३	"	"	"	वस्त्रोत्तरीयं	"	॥

---

*. स्नानसमये दुग्ध-पञ्चामृत-मधु फलरसादिना अभिसिञ्चेत्,
पुरुष-सूक्तगणपत्युपनिषद् गणपतिगायत्रयादि वेदमन्त्रान् उच्च रेत् ।

३	"	"	"	भूषणम्	"	॥
३	"	"	"	गन्धम्	"	॥
३	"	"	"	पुष्पम्	"	॥
३	"	"	"	धूपम्	"	॥
३	"	"	"	दीपम्	"	॥
३	"	"	"	नैवेद्यं	"	॥
३	"	"	"	ताम्बूलम्	"	॥
३	"	"	"	नीराजनम्	"	॥
३	"	"	"	प्रदक्षिणाः	"	॥
३	"	"	"	नमस्कारान्	"	॥

योनि मुद्रा से नमस्कार

श्रीं ह्रीं क्लीं दन्त-पाश-अङ्कुश-विघ्न-परशु-लड्डूक बीजापूराह्वयाः सप्तमुद्राः गणेशस्य प्रियाः मताः ॥

इति सप्तमुद्राः प्रदर्शयेत् ॥

चतुरायतनपूजा

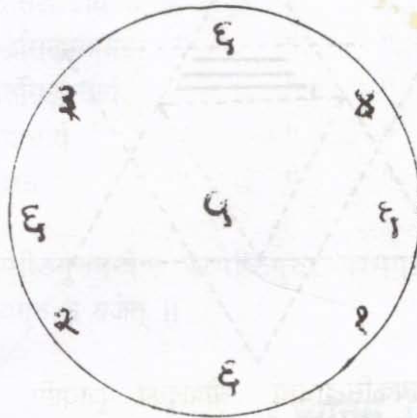
विष्णुशिवसूर्यदेव्याह्वयाः चतुरायतनदेवताः ।
आग्नेय-ईशान-नैर्ऋत-वायव्येषु तत्तन्मूलमन्त्रेण यजेत् ॥

श्रीमहागणपतिपूजनम् ।

(ततो मूलान्ते, **श्रीमहागणपति श्रीपादुकां पूजयामि**, इति देवं दशवारं पूजयेत्) यथा–त्रिकोण मध्ये–

श्रीं ह्री क्लीं 'मूलं' श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितमहागणपति श्रीपादुकां पूजयामि नमः इति दशवारं सन्तर्पयेत्

षडङ्गपूजा



ततो देवस्याङ्गे अग्नीशासुरवायुकोणेषु मौलौ दिक्षु च–

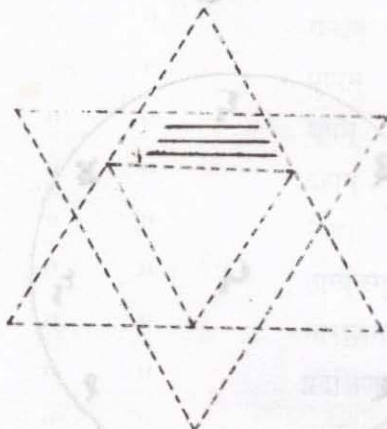
श्रीं ह्रींक्लींॐगां हृदयाय नमः	हृदयशक्तिश्रीपादुकां		पूजयामि		नमः	॥
३ श्रीं गीं शिरसे स्वाहा	शिरः शक्ति"				नमः	॥
३ ह्रीं गूं शिखायै वषट्	शिखाशक्ति	"	"		"	॥
३ क्लीं गैं कवचाय हुँ	कवचशक्ति	"	"		"	॥
३ ग्लौं गौं नेत्रत्रयाय वौषट्	नेत्रशक्ति	"	"		"	॥
३ गं गः अस्त्राय फट्	अस्त्रशक्ति	"	"		"	॥

गुरुमण्डलार्चनम् ।

देवस्य पश्चात् प्रागपवर्गरेखात्रये दक्षिणसंस्था क्रमेण गुर्वोघत्रयं यजेत् ॥

यथा–

दिव्यौघः



श्रीं ह्रीं क्लीं	विनायकसिद्धाचार्य	श्रीपादुकां	पूजयामि	नमः	॥
३	कवीश्वरसिद्धाचार्य	"	"	"	।।।
३	विरूपाक्षसिद्धाचार्य	"	"	"	॥
३	विश्वसिद्धाचार्य	"	"	"	॥
३	ब्रह्मण्यसिद्धाचार्य	"	"	"	॥
३	निधीशसिद्धाचार्य	"	"	"	॥

सिद्धौघः

श्रीं ह्रीं क्लीं	गजाधिराजसिद्धाचार्य	श्रीपादुकां	पूजयामि	नमः	॥
"	वरप्रदसिद्धाचार्य	"	"	"	॥

मानवौघः

३	विजयसिद्धाचार्य	श्रीपादुकां	पू.	नमः	॥
३	दुर्जयसिद्धाचार्य	"	"	"	॥
३	जयसिद्धाचार्य	"	"	"	॥
३	दुःखारिसिद्धाचार्य	"	"	"	॥
३	सुखावहसिद्धाचार्य	"	"	"	॥

३ परमात्मसिद्धाचार्य " " " ॥
३ सर्वभूतात्मसिद्धाचार्य " " " ॥
३ महानन्दसिद्धाचार्य " " " ॥
३ फालचन्द्रसिद्धाचार्य " " " ॥
३ सद्योजातसिद्धाचार्य " " " ॥
३ बुद्धसिद्धाचार्य " " " ॥
३ शूरसिद्धाचार्य " " " ॥

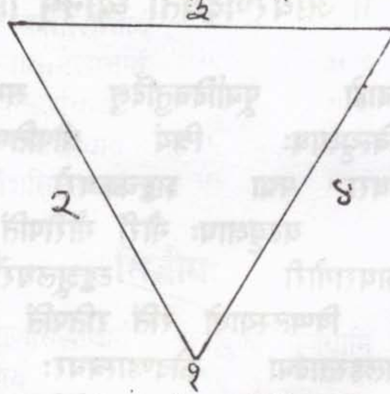
ततः परमेष्ठिगुरुमन्त्रेण परमेष्ठिगुरुं, परमगुरुमन्त्रेण परमगुरुं, स्वगुरुमन्त्रेण स्वगुरुं च यजेत् ॥

॥ आवरणदेवता ध्यानम् ॥

त्रिकोणबाह्ये पूर्वादिचतुर्दिक्षु समर्चयेत् ।
अग्रस्थबिल्ववृक्षाधः श्रियं श्रीपतिमर्चयेत् ॥
पद्मायुधधरा पद्मा शङ्खचक्रधरो हरिः ।
दक्षिणे वटवृक्षाधः गौरीं गौरीपतिं यजेत् ॥
पाशाङ्कुशधरागौरी टङ्कशूलधरो हरः ।
पश्चिमे पिप्पलस्याधो रतिं रतिपतिं यजेत् ॥
रतिरुत्पलहस्ताढ्या कोदण्डास्त्रधरः स्मरः ।
सौम्ये प्रियङ्गुवृक्षाधः महापोत्त्रिणमर्चयेत् ॥
शूकव्रीह्यग्रहस्ताभूर्गदाचक्रधरःपति ।
षट्कोणेषु च सम्पूज्या आमोदाद्याः प्रियान्विताः ॥
आमोदं सिद्धिसहितमग्रकोणे प्रपूजयेत् ।
समृद्ध्या युक्तमभ्यर्च्य प्रमोदं वह्निकोणके ॥
सुमुखं कान्तिसंयुक्तमीशकोणे समर्चयेत् ।
दुर्मुखं मदनावत्या यजेद्वरुणकोणके ॥
विघ्नं मदद्रवायुक्तं कोणे नैशाचरे यजेत् ।

वायव्ये विघ्नकर्तारं द्राविण्या सह संयजेत् ॥
पाशाङ्कुशाभयाऽभीष्टधारिणोऽरुणविग्रहाः ।
गण्डभित्तिगलद्दानपूरधौतमुखाम्बुजाः ॥
विघ्नस्तत्प्रमदास्सर्वाः मदाघूर्णितलोचनाः ।
एकहस्तधृताम्भोजाः इतरालिङ्गितप्रियाः ॥
षट्कोणपार्श्वयोः पूज्यौ शङ्खपद्मनिधी क्रमात् ।
निजप्रियाभ्यां सहितौ सर्वाभरणभूषितौ ॥
केशरेष्वङ्गपूजा स्यात् ब्राह्म्याद्याद्याः पत्रमध्यगाः ।
बहिर्लोकेश्वराः पूज्याः वज्रादीनि यथाक्रमम् ॥

प्रथमावरणम्



त्र्यस्त्रषडस्त्रोरन्तराले प्रागादिदिक्षु क्रमेण–

श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीश्रीपति श्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥
गिरिजागिरिजापति " " ॥
रतिरतिपति " " ॥
महीमहीपति " " ॥

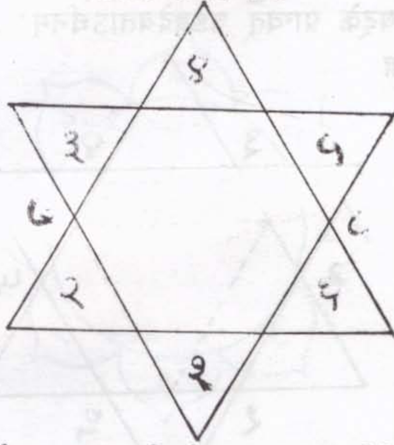
एताः प्रथमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः संतुष्टाःसन्तु नमः । (इति पुष्पं दत्वा) ।

श्रीं ह्रीं क्लीं अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

(इति सामान्यार्घ्योदकेन देवताहस्ते पूजां समर्प्य)

अनेन प्रथमावरणार्चनेन सिद्धलक्ष्मीसहितः भगवान् श्रीमहागणपतिः प्रीयताम् ।
(इति योनिमुद्रया प्रणमेत्)

द्वितीयावरणम



(षडस्त्रे देवाग्रकोणमारभ्य प्रादक्षिण्येन तद्दक्षवामपार्श्वयोश्च क्रमेण यजेत्)

३ ऋद्ध्यामोद	श्रीपादुकां	पू.	नमः	॥
३ समृद्धिप्रमोद	"	"	"	॥
३ कान्तिसुमुख	"	"	"	॥
३ मदनावतीदुर्मुख	"	"	"	॥
३ मदद्रवा-अविघ्न	"	"	"	॥
३ द्राविणीविघ्नकर्तृ	"	"	"	॥
३ वसुधाराशङ्खनिधि	"	"	"	॥
३ वसुमतीपद्मनिधि	"	"	"	॥

एताः द्वितीयावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः साधुयाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः । इति पुष्पं दत्वा ।

३ श्रीं ह्रीं क्लीं **अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ।**
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥

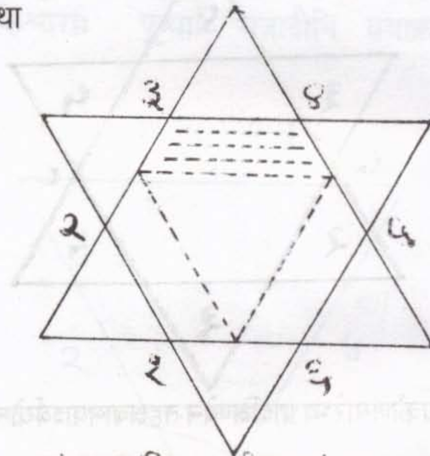
(इति सामान्यार्घ्योदकेन देवताहस्ते पूजां समर्प्य)

अनेन द्वितीयावरणार्चनेन सिद्धलक्ष्मीसहितः भगवान् श्रीमहागणपतिः प्रीयताम् ।

(इति योनिमुद्रया प्रणमेत्)

तृतीयावरणम्

षडस्रसन्धिषट्के प्राग्वत् षडङ्गदेवताऽर्चनम् । (षट् कोण की सन्धियों में) यथा



श्रींह्रींक्लीं ॐ	गां हृदयशक्ति	श्रीपादुकां	पू.	नमः	॥
३	श्रीं गीं शिरःशक्ति	"	"	"	॥
३	ह्रीं गूं शिखाशक्ति	"	"	"	॥
३	क्लीं गैं कवचशक्ति	"	"	"	॥
३	ग्लौं गौं नेत्रशक्ति	"	"	"	॥
३	गं गः अस्त्रशक्ति	"	"	"	॥

एताः तृतीयावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टा सन्तु नमः ॥ (इति पुष्पं दत्वा) ।

अभीष्टसिद्धं मे देहि शरणागतवत्सल ।

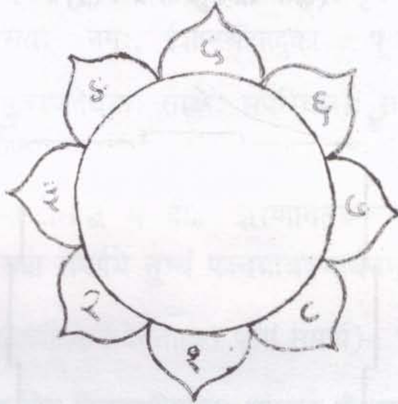
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥

इतिसामान्यार्घ्योदकेन देवताहस्तेपूजां समर्प्य–

अनेन तृतीयावरणार्चनेन भगवान् सिद्धलक्ष्मीसहितः श्रीमहागणपतिः प्रीयताम् ।

(इति योनिमुद्रया प्रणमेत्)

तुरीयावरणम्



अष्टदले पश्चिमादि दिक्षु वायव्यादि विदिक्षु च प्रादक्षिण्यक्रमेण–

३	आं ब्राह्मी	श्रीपादुकां पू.		नमः	॥
३	ईं माहेश्वरी	"	"	"	॥
३	ऊं कौमारी	"	"	"	॥
३	ॠं वैष्णवी	"	"	"	॥
३	ॡं वाराही	"	"	"	॥
३	ऐं माहेन्द्री	"	"	"	॥
३	औं चामुण्डा	"	"	"	॥
३	अः महालक्ष्मी	"	"	"	॥

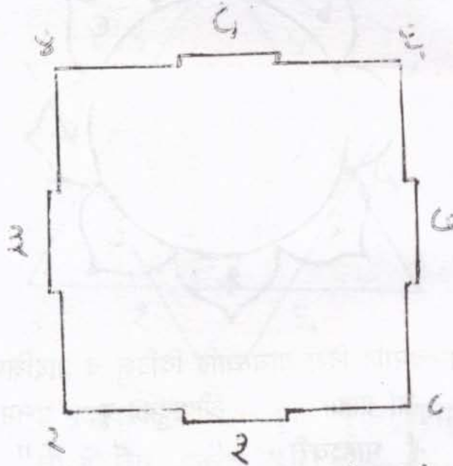
एताः तुरीयावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः संतुष्टाः सन्तु नमः ॥ इति पुष्पं दत्वा ॥

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तुरीयावरणार्चनम् ॥

(इति सामान्यार्घ्योदकेन देवताहस्ते पूजां समर्प्य)–

अनेन तुरीयावरणार्चनेन सिद्धलक्ष्मीसहित भगवान्
श्रीमहागणपतिः प्रीयताम् ।

(इति योनिमुद्रया प्रणमेत्)॥



अथ चतुरश्रस्य रखाया प्रागाद्यासु अष्टसु दिक्षु क्रमेण–
श्रीं ह्रीं क्लीं लां इन्द्राय वज्रहस्ताय सुराधिपतये ऐरावतवाहनाय
'सपरिवाराय नमः, इन्द्रश्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥
३ रां अग्नये शक्तिहस्ताय तेजोऽधिपतये अजवाहनाय
सपरिवाराय नमः, अग्निश्रीपादुकां पू. नमः ॥
३ टां यमाय दण्डहस्ताय प्रेताधिपतये महिषवाहनाय
सपरिवाराय नमः, यमश्रीपादुकां पू. नमः ॥
३ क्षां निर्ऋतये खड्गहस्ताय रक्षोऽधिपतये नरवाहनाय
सपरिवाय नमः, निर्ऋतिश्रीपादुकां पू. नमः ॥

३ वां वरुणाय पाशहस्ताय जलाधिपतये मकरवाहनाय
सपरिवाराय नमः, वरुणश्रीपदुकां पू. नमः ॥
३ यां वायवे ध्वजहस्ताय प्राणाधिपतये रुरुवाहनाय
सपरिवाराय नमः, वायुश्रीपादुकां पू. नमः ॥
३ सां सोमाय शङ्खहस्ताय नक्षत्राधिपतये अश्ववाहनाय
सपरिवाराय नमः, सोमश्रीपादुकां पू. नमः ॥
३ हां ईशानाय त्रिशूलहस्ताय विद्याऽधिपतये वृषभवाहनाय
सपरिवारायः नमः, ईशानश्रीपादुका पू नमः ॥

एताः पञ्चमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ॥ इति पुष्पं दत्वा ।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥

(इति सामान्यार्ध्योदकेन देवताहस्ते पूजां समर्प्य)–

अनेन पञ्चमावरणार्चनेन सिद्धलक्ष्मीसहितः भगवान् श्रीमहागणपतिः प्रीयताम् ।

(इति योनिमुद्रया प्रणमेत्) ॥

पुनः मूलेन दशवारं सन्तर्पयेत्

श्री ह्रीं क्लीं मूलं' श्रीसिद्धलक्ष्मीसहित श्रीमहागणपति श्रीपादुकां पू. नमः ॥
(इति दशवारं पूजयेत्) ॥

षोडशनामार्चनम्

सुमुखाय नमः ॥
एकदन्ताय नमः ॥
कपिलाय नमः ॥

गजकर्णकाय नमः ॥
लम्बोदराय नमः ॥
विकटाय नमः ॥
विघ्नराजाय नमः ॥
गणाधिपाय नमः ॥
धूमकेतवे नमः ॥
गणाध्यक्षाय नमः ॥
फालचन्द्राय नमः ॥
गजाननाय नमः ॥
वक्रतुण्डाय नमः ॥
शूर्पकर्णाय नमः ॥
हेरम्बाय नमः ॥
स्कन्दपूर्वजाय नमः ॥

पुनः पूर्वोक्तषोडशभिरुपचारैः पूजयेत् ।

श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीमहागणपतये नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणिदूर्वादीनि समर्पयामि ॥

अथ यथावकाशं सहस्रनामादिना–अर्चनं कुर्यात् ॥

धूपः

श्रीं ह्रीं क्लीं धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्वतं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्वयं वयं धूर्वामःत्वं देवानामसि वह्नितमं सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतम् ॥

साङ्गाय सायुधाय सपरिवाराय श्रीसिद्धलक्ष्मीसहित श्रीमहागणपतये नमः धूपमाघ्रापयामि ।

॥ दीपः ॥

श्रीं ह्रीं क्लीं

अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहाः, ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥

मूलं साङ्गांय सायुधाय सपरिवाराय श्रीसिद्धलक्ष्मीसहित श्रीमहागणपतये नमः, दीपं दर्शयामि ।

ततः—दन्त-पाश-अङ्कुश-विघ्न-परशु लड्डुक बीजापूराख्याः सप्तमुद्राः प्रदर्शयेत् ।

॥ नैवेद्यम् ॥

श्रीदेवाग्रे, चतुरस्रमण्डलं, सामान्यार्ध्योदकेन विधाय, तत्र आधारोपरि स्थापितं, सौवर्ण - रौप्य - कांस्यादि - स्थाली - चषकभरितं भक्ष्य-भोज्य-चोष्यलेह्यपेयात्मकं रसवद्व्यञ्जनमञ्जुलं प्राज्यकपिलाज्यं दधिदुग्धमधु यथासम्भवं वा नैवेद्यं निधाय मूलेन निरीक्ष्य—

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं हः—इति अस्त्रेण प्रोक्ष्य—

३ ॐ जुं सः वौषट्-इति सप्तवारमभिमन्त्रितजलेन प्रोक्ष्य—चक्रमुद्रां प्रदर्श्य—

३ यं इति वायुबीजेनाधोमुखवामकरेण सप्तवारम् जपन् तद्गतदोषान् संशोष्य—

३ रं—इति वह्निबीजेन अधोमुखदक्षकरेण सन्दह्य—वं—इति धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य—

३ मूलेन विशेषार्ध्यबिन्दुभिः प्रोक्ष्य—मूलेन सप्तवारमभिमन्त्र्य—

३ ॐ क्लीं कामदुधे अमोघे वरदे विच्चे स्फुरस्फुर श्रीं परश्रीं, इति कामधेनुविद्यया धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य, देवस्य पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयं च दत्वा–त्रिवारं संपूज्य

पात्रान्तरे विशेषार्घ्यं किञ्चित् गृहीत्वा वामाङ्गुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृशन्–

३ **'मूलं' साङ्गाय सायुधाय सपरिवाराय श्रीसिद्धलक्ष्मीसहित–श्रीमहागणपतये नैवेद्यं कल्पयामि नमः–इति नैवेद्यपरिसरे संस्थाप्य । कृताञ्जलिः–**

३ हेमपात्रगतं दिव्यं परमान्नं सुसंस्कृतम् ।
पञ्चधा षड्रसोपेतं गृहाण परमेश्वर ॥
शर्करापायसापूपघृतव्यञ्जनसंयुतम् ।
विचित्ररुचि नैवेद्यं हृद्यमावेदयाम्यहम् ॥ इति निवेद्य

ॐ भूर्भुवस्वः .... परिषिञ्चामि । अमृतोस्तरणमसि–इति देवतायै आपोशनं दत्वा–वामकरेण ग्रासमुद्रां प्रदर्श्य, दक्षकरेण प्राणादिपञ्चमुद्रा-प्रदर्शनपूर्वकं पञ्चप्राणाहुतीः कल्पयेत् । यथा–

श्री ह्रीं क्लीं प्राणाय स्वाहा ॥ उदानाय स्वाहा ॥
३ अपानाय स्वाहा ॥ ३ समानाय स्वाहा ॥
३ व्यानाय स्वाहा ॥ ३ ब्रह्मणे स्वाहा ॥

श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ गं आत्मतत्त्वव्यापकः श्रीसिद्धलक्ष्मीसहित–
श्रीमहागणपतिस्तृप्यतु ॥
३ ॐ गं विद्यातत्त्वव्यापकः ,, ,,
३ ॐ गं शिवतत्त्वव्यापकः ,, ,,
३ ॐ गं सर्वतत्त्वव्यापकः ,, ,,

(इति किञ्चित्किञ्चित् सामान्यार्घ्योदकं दद्यात्) ।

चित्पात्रे सद्धविस्सौख्यं विविधानेकभक्षणम् ।

निवेदयामि ते देव सानुगस्त्वं जुषाण तत् ॥

श्रीं ह्रीं क्लीं मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः । मधुनक्तमुतोषसि मधुमत्पार्थिवँ रजः । मधुद्यौरस्तु नः पिता । मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः ।

(इति पुष्पाञ्जलिं विन्यस्य नैवेद्यजातं तादात्म्येन समर्पयेत्)

नमस्ते देवदेवेश सर्वतृप्तिकरं परम् ।
अन्यानिवेदितं शुद्धं प्रकृतिस्थं सुशीतलम् ॥
अमृतानन्दसम्पूर्णं गृहाण जलमुत्तमम् ॥

३ श्रीसिद्धलक्ष्मीसहित - श्रीमहागणपतये अमृतपानीयं समर्पयामि ॥

(देवं भुक्तवन्तं सुतृप्तं ध्यात्वा)

ॐ अमृतापिधानमसि । इत्युत्तरापोशानं दत्वा–

श्रींह्रींक्लीं हस्तप्रक्षालनं, गण्डूषं, पादप्रक्षालनं, आचमनीयं कल्पयामि नमः ।

(ताम्रबलिपात्रे निवेदन-सामग्रीः किंचित्किंचिदादाय निवेदनपात्राणि निर्गमय्य तत्स्थलं अस्त्रेण शोधयेत्)

ताम्बूलम्

श्रीं ह्रीं क्लीं वनस्पतिदैवत्याय ताम्बूलाय नमः । इति सामान्यार्घ्योदकेन प्रोक्ष्य–

श्रीं ह्रीं क्लीं **तमालदलकर्पूरपूगभागसमन्वितम् ।**
एलापत्रसुसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥

मूलं साङ्गाय सायुधाय स परिवाराय श्रीसिद्धलक्ष्मीसहित-श्रीमहागणपतये ताम्बूलं कल्पयामि नमः ॥

। कुलदीपः ।

३ 'मूलं'–अन्तस्तेजो बहिस्तेज एकीकृत्यामितप्रभम् ।
त्रिधा दीपं परिभ्राम्य कुलदीपं निवेदये ॥

कर्पूरनीराजनम्

श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं । न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः । तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ।

राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे । स मे कामान् कामकामाय मह्यम् । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु । कुबेराय वैश्रवणाय-महाराजाय नमः ॥ महागणपतये नमः कर्पूरनीराजनं दर्शयामि !

मन्त्रपुष्पम्

श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि ।
तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ॥

श्रीं ह्री क्लीं **नमो नरगजाकृते नलिनवर्णदेहाकृते**

नरासुरेडित–श्रुतिशिरोद्यदङ्घ्रिद्वय ।
नगेश्वरवरात्मजानयनपद्मभानो नमः
नतार्तिहरणाङ्घ्रियुक् कलित एष पुष्पाञ्जलिः ॥

मूलं साङ्गाय– सायुधाय सपरिवाराय श्रीसिद्धलक्ष्मीसहिताय-श्रीमहागणपतये नमः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ॥

तान्त्रिकनित्यहोमविधिः

साधकः स्वस्तिपद्मं विरच्य तस्मिन् गणेशं साङ्ग सावरणं षोडषोपचारैः सम्पूज्य तदुत्तरतः लौकिकाग्निम् प्रतिष्ठाप्य । तस्मिन्नग्नौ साङ्गं सावरणं गणपतिं सम्पूज्य अष्टद्रव्यैः मध्वाज्यमिश्रितैः ग्रासमितैः त्रिसंख्यं पञ्चसंख्यं वा हुनेत् । संभृताष्टद्रव्यं त्रिधा कृत्वा एकमंसं निवेदयेत्–द्वावंशौ जुहुयात् । ततः जपं कृत्वा गणपत्युपनिषदादिभिः स्तुवीत । पुनः पञ्चोपचारान् उपचर्य, नीराजनं प्रदक्षिणनमस्कारादीन् कृत्वा । अग्नेः स्वस्तिपद्मादपि गणपतिं उद्वासयेत् । अष्टद्रव्यालाभे तु नारिकेलेन मध्वाज्यगुडमिश्रितेन यथासम्भवद्रव्येण जुहुयात् । इति नित्यहोमविधिः ।

विस्तरे तु गुरुपदिष्टमार्गेण चतुष्पात्रप्रयोगेणापि होमः कर्तव्यः । तस्मिन् प्रयोगे अग्निमुखानन्तरं, अग्नौ गणपतिमावाह्य पञ्चोपचारं कृत्वा गणपतिमूलमन्त्रेण प्रधानाहुतिं दत्वा दशवारं मूलमन्त्रेण-अङ्गावरणदेवतानां एकैकामाज्याहुतिं जुहुयात् । ततो होमशेषः ॥ स्वस्वशाखोक्तविधिना अग्नि प्रतिष्ठापनं कुर्यात् ॥

बलिदानम्

देवतादक्षभागे सामान्यार्घ्योदकेन वृत्तचतुरस्रात्मकं मण्डलं परिकल्प्य श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं व्यापकमण्डलाय नमः । इति गन्धाक्षतैरभ्यर्च्य अर्धभक्तपूरितोदकं सक्षीरादित्रयं बलिपात्रं तत्र विन्यस्य–

श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ गां गीं गूं गैं गौं गः महागणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय सर्वोपचारसहितं इमं बलिं गृहण गृहण स्वाहा । इत्युच्चरन् । बलि पात्रे सामान्यार्घ्योदकं विसृजेत् । ततः पादौ प्रक्षाल्य त्रिः आचम्य प्रदक्षिणनमस्कारान् कृत्वा यथाशक्ति मूलमन्त्रजपमाचरेत् । उत्तराङ्गं विधाय–

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्मयि स्थिरा ॥

(इति देवस्य हस्ते जपं समर्पयेत्) ॥

गणेशाष्टकम्

विनायकैकभावनासमर्चनासमर्पितं,
प्रमोदकैः प्रमोदकैः प्रमोदमोदमोदकम् ।
यदर्पितं समर्पितं नवन्यधान्यनिर्मितं,
न खण्डितं न खण्डितं न खण्डमण्डनं कृतम् ॥ १ ॥
सजातिकृद्विजातिकृत्स्वनिष्ठभेदवर्जितं
निरञ्जनं च निर्गुणं निराकृतिं च निष्क्रियम् ।
सदात्मकं चिदात्मकं सुखात्मकं परं पदं
भजामि तं गजाननं स्वमाययाऽऽत्तविग्रहम् ॥ २ ॥
गणाधिप त्वमष्टमूर्तिरीशसूनुरीश्वरः
त्वमम्बरं च शम्बरं धनञ्जयः प्रभञ्जनः ।
त्वमेव दीक्षितः क्षितिर्निशाकरः प्रभाकरः
चराचरप्रचारहेतुरन्तरायशान्तिकृत् ॥ ३ ॥
अनेकदं तमालनीलमेकदन्त सुन्दरं
गजाननं नुमो गजाननामृताब्धिमन्दिरम् ।
समस्तवेदवादसत्कलाकलापमन्दिरं
महान्तरायदुस्तमश्शमार्कमाश्रितोदरम् ॥ ४ ॥
सरत्नहेमघण्टिकानिनादनूपुरस्वनैः
मृदङ्गतालनादभेदसाधनानुरूपतः ।
धिमिद्धिमित्ततोऽङ्गतोङ्ग तेयिथेयिशब्दतो-
विनायकश्शशाङ्कशेखराग्रतः प्रनृत्यति ॥ ५ ॥
नमामि नाकनायकैकनायकं विनायकं
कलाकलापकल्पनानिदानमादिपूरुषम् ।
गणेश्वरं गुणेश्वरं महेश्वरात्मसम्भवं
स्वपादमूलसेविनामपारवैभवप्रदम् ॥ ६ ॥

भजे प्रचण्डतुन्दिलं सदन्तशूकभूषणं
सनन्दनादिवन्दितं समस्तसिद्धसेवितम् ।
सुरासुरौघयोस्तदा जयप्रदं भयप्रदं
समस्तविघ्नघातिनं स्वभक्तपक्षपातिनम् ॥ ७ ॥
काराम्बुजात्तकङ्कणःपदाब्जकिङ्किणिगणो-
गणेश्वरो गुणार्णवः फणीश्वराङ्गभूषणः ।
जगत्त्रयान्तरायशान्तिकारकोस्तुतारको-
भवार्णवादनेकदुर्गृहाच्चिदेकविग्रहः ॥ ८ ॥
यो भक्तिप्रवणः परावरगुरोस्स्तोत्रं गणेशाष्टकं
शुद्धस्संयतचेतसा यदि पठेन्नित्यं त्रिसन्ध्यं पुमान् ।
तस्य श्रीरतुला स्वसिद्धिसहिता श्रीशारदा सारदा
स्यातां तत्परिचारिके किल तदा काः कामनानां कथाः ॥

सुवासिनीपूजा

श्रीं ह्रीं क्लीं प्राङ्निमन्त्रितां सुवासिनीमाहूय तां देवीरूपां विभाव्य ऐं क्लीं सौः सुवासिन्यै-अर्घ्यं कल्पयामि नमः । इत्यादिरीत्या अर्घ्य-आचमन-स्नान-गन्ध-हरिद्राकुङ्कुम-पुष्प-धूप-दीप- नैवेद्य-ताम्बूलानि दद्यात् । (सति विभवे वसनादीनि च) ॥

बटुकपूजा

श्रीं ह्रीं क्लीं प्राह्निमन्त्रितबटुकममाहूय तं गणपतिरूपं विभाव्य, ३ वं वटुकाय अर्घ्यं कल्पयामि नमः । इत्यादिरीत्या, अर्घ्य-आचमन-स्नान वस्त्र- यज्ञोपवीत-गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य-ताम्बूलानि दद्यात् ॥

सामयिकपूजा

ततः संनिहिते गुरौ गुरुं नत्वा गन्धकुङ्कुमादिभिरुपचर्य, गुरुपादुकामन्त्रेण अभिपूज्य पात्राणि समर्पयेत् । असन्निहिते गुरौ स्वशिरसि गुरुत्रयं यजेत् । ततः सन्निहितान् सामयिकानाहूय गन्धकुङ्कुमादिभिरुपचर्य पात्राणि दद्यात् । पश्चात् तत्त्वशोधनं कुर्यात् । सामयिकाश्च पात्रमादाय समस्तप्रकटेत्यादि-समष्टिमन्त्रेण पुष्पाञ्जलिं दत्वा स्वशिरसि गुरुत्रयं, हृदये आत्मचतुष्टयं च इष्ट्वा सन्तर्प्य तत्वशाोधनं यथोपदिष्टं कुर्युः ॥

तत्त्वशोधनं

श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ गं आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ॥
३ " " विद्यातत्त्वं " " ॥
३ " " शिवतत्त्वं " " ॥
३ " " सर्वतत्त्वं " " ॥

पूजासमर्पण-देवतोद्वासने

श्रीं ह्रीं क्लीं साधु वाऽसाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया ।
तत्सर्वं कृपया देव गृहाणाराधनं मम ॥
३ देवनाथगुरो स्वामिन् देशिक स्वात्मनायक ।
त्राहि त्राहि कृपासिन्धो पूजां पूर्णतरां कुरु ॥

इति देवतादक्षिणहस्ते पूजां समर्प्य शङ्खमुद्धृत्य देवतोपरि त्रिः परिभ्राम्य, तज्जलं हस्ते समादाय सामयिकानात्मानं च मूलेन प्रोक्ष्य शङ्खं प्रक्षाल्य निदध्यात् । ततो मूलेन तीर्थनिर्माल्ये स्वीकृत्य,

श्रीं ह्रीं क्लीं ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यन्मयाचरितं विभो ।
तवकृत्यमिति ज्ञात्वा क्षमस्व परमेश्वर ॥

इति क्षमाप्य, सर्वासामावरणदेवतानां देवताङ्गे विलयं विभाव्य खेचरीं बद्ध्वा–

श्रीं ह्रीं क्लीं हृत्पद्मकर्णिकामध्ये शक्त्या सह गजानन ॥
प्रविश त्वं गणेशान सर्वैरावरणैः सह ॥

इति तेजोरूपेण परिणतं देवं पूर्ववत् हृदयं नित्त्वा, तत्र च मूर्तिं पञ्चोपचारैः सम्पूज्य पुनः आत्माभिन्नसंविद्रूपेण भावयेत् ॥

शान्तिस्तवः

सम्पूजकानां परिपालकानां यतेन्द्रियाणां च तपोधनानाम् ।
देशस्य राष्ट्रस्य कुलस्य राज्ञां करोतु शान्तिं भगवान् कुलेशः ॥
नन्दन्तु साधककुलान्यणिमाऽऽदिसिद्धाः
शापाः पतन्तु समयद्विषि योगिनीनाम् ।
सा शाम्भवी स्फुरतु काऽपि ममाऽप्यवस्था
यस्यां गुरोश्चरणपङ्कजमेव लभ्यम् ॥
शिवाद्यवनिपर्यन्तं ब्रह्मादिस्तम्बसंयुतम् ।
कालाग्न्यादिशिवान्तं च जगद्यज्ञेन तृप्यतु ॥
इत्यादिशान्तिश्लोकान् पठित्वा–

विशेषार्घ्योद्वासनम्

मूलेन विसेषार्घ्यपात्रं आमस्तकमुद्धृत्य तत्क्षीरं पात्रान्तरेण-आदाय आर्द्रं ज्वलति इति मन्त्रेण आत्मनः कुण्डलिन्यग्नौ हुत्वा ब्राह्मणान् सुवासिनीश्च भोजयित्वा स्वयमपि भुक्त्वा यथासुखं विहरेत् ॥

॥ इति शिवम् ॥

श्री दत्तात्रेया नन्दनाथ विरचितायां श्री महागण पतिवरिवस्यायां सपर्याप्रकरणम् समाप्तम ।

परिशिष्टम्

श्रीगणेशपञ्चरत्नस्तोत्रम्

मुदाकरात्तमोदकं सदाविमुक्तिसाधकम् ॥
कलाधरावतंसकं विलासिलोकरक्षकम् ॥
अनायकैकनायकं विनाशितेभदैत्यकम् ॥
नताशुभाशुनाशकं नमामि तं विनायकम् ॥ १
नतेतरातिभीकरं नवोदितार्कभास्वरम् ॥
नमत्सुरारिनिर्जरं नताधिकापदुद्धरम् ॥
सुरेश्वरं निधीश्वरं गजेश्वरं गणेश्वरं ॥
महेश्वरं तमाश्रये परात्परं निरन्तरम् ॥ २
समस्तलोकशङ्करं निरस्तदैत्यकुञ्जरम् ॥
दरेतरोदरं वरं वरेभवक्त्रमक्षरम् ॥
कृपाकरं क्षमाकरं मुदाकरं यसस्करम् ॥
मनस्करं नमस्कृतां नमस्करोमि भास्वरम् ॥ ३
अकिञ्चनार्तिमार्जनं चिरन्तनोक्तिभाजनम् ॥
पुरारिपूर्वनन्दनं सुरारिगर्वचर्वणम् ॥
प्रपञ्चनाशभीषणं धनञ्जयादिभूषणम् ॥
कपोलदानवारिणं भजे पुराणवारणम् ॥ ४
अचिन्त्यरूपमन्तहीनमन्तरायकृन्तनं ॥
नितान्तकान्तिदन्तकान्तमन्तकान्तकात्मजम् ॥
हृदन्तरे निरन्तरं वसन्तमेव योगिनां ॥
तमेकदन्तमेव संविचिन्तयामि सन्ततम् ॥ ५
महागणेशपञ्चरत्नमादरेण योऽन्वहम् ॥
प्रजल्पति प्रदोषके हृदि स्मरन् गणेश्वरम् ॥
अरोगतामदोषतां सुसाहितीं सुपुत्रताम् ॥
समाहिरायुरष्टभूतिमभ्युमैति सोऽचिरात् ॥ ६

अथ गणपत्यथर्वशीर्षम्

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः ॥ भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ह्व सस्तनूभिर्व्यशेम हि देवहितं यदायुः ॥ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ॥ स्वस्ति नस्ताक्ष्योऽ अरिष्टनेमिः ॥ स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ अथ गणेशाथर्वशीर्षं व्याख्यास्यामः ॥

ॐ नमस्तेगणपतये ॥ त्वमेवप्रत्यक्षं तत्त्वमसि ॥ त्वमेवकेवलं कर्त्तासि ॥ त्वमेवकेवलं धर्तासि ॥ त्वमेवकेवलं हर्तासि ॥ त्वमेवसर्वं खल्विदंब्रह्मासि ॥ त्वंसाक्षादात्मासि नित्यं ॥ ऋतंवच्मि ॥ सत्यंवच्मि ॥ अवत्वंमां ॥ अववक्तारं ॥ अवश्रोतारं ॥ अवदातारं ॥ अवधातारं ॥ अवानूचानमवशिष्यं ॥ अवपश्चात्तात् ॥ अवपुरस्तात् ॥ अवोत्तरातात् ॥ अवदक्षिणात्तात् ॥ अवचोर्ध्वात्तात् ॥ अवाधरात्तात् ॥ सर्वतोमांपाहिपाहिसमंतात् ॥ त्वंवाङ्मयस्त्वंचिन्मयः ॥ त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः ॥ त्वंसच्चिदानन्दाद्वितीयोसि ॥ त्वंप्रत्यक्षंब्रह्मासि ॥ त्वंज्ञानमयोविज्ञानमयोसि ॥ सर्वंजगदिदंत्वत्तोजायते ॥ सर्वंजगदिदंत्वत्तस्तिष्ठति ॥ सर्वंजगदिदंत्वयिलयमेष्यति ॥ सर्वंजगदिदंत्वयिप्रत्येति ॥ त्वंभूमिरापोऽनिलोऽनलोनभः ॥ त्वंचत्वारिवाक्पदानि ॥ त्वंगुणत्रयातीतः ॥ त्वंकालत्रयातीतः ॥ त्वंदेहत्रयातीतः ॥ त्वंमूलाधारस्थितोऽसिनित्यं ॥ त्वंशक्तित्रयात्मकः ॥ त्वांयोगिनोध्यायन्तिनित्यं ॥ त्वंब्रह्मात्वंविष्णुस्त्वंरुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वंवायुस्त्वंसूर्यस्त्वंचंद्रमात्वं ब्रह्मभूर्भुवःस्वरोम् ॥ गणदीन् ॥ पूर्वमुच्चार्य वर्णादींस्तदनन्तरं ॥ अनुस्वारः परतरः ॥ अर्धेन्दुलसितं ॥ तारेणरुद्धं ॥ एतत्तवमनुस्वरूपं ॥ गकारः पूर्वरूपं ॥ अकारोमध्यमरूपं ॥ अनुस्वारश्चांत्यरूपं बिंदुरुत्तररूपं ॥ नादः सन्धानं ॥ संहितासन्धिः ॥ सैषागणेशविद्या ॥ गणकऋषिः ॥ निचृद्गायत्रीछन्दः ॥ गणपतिर्देवता ॥ ॐ गं गणपतये नमः ॥

ॐ एकदन्तायविद्महे वक्रतुण्डायधीमहि ॥ तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ॥ एकदन्तञ्चतुर्हस्तंपाशमङ्कुशधारिणम् ॥ रदंचवरदंहस्तैर्विभ्राणं मूषकध्वजम् ॥ रक्तं लंबोदरं शूर्पकर्णकंरक्तवाससं ॥ रक्तगंधानुलिप्ताङ्गंरक्तपुष्पैः सुपूजितम् ॥ भक्तानुकंपिनंदेवंजगत्कारणमच्युतं ॥ आविर्भूतञ्चसृष्ट्यादौप्रकृतेः पुरुषात्परं ॥

एवं ध्यायति यो नित्यं स योगीयोगिनाम्वर ॥ नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्ते अस्तु लम्बोदरायैकदन्तायविघ्नाशिनेशिवसुताय-श्रीवरदमूर्तयेनमः ॥ एतदथर्वशीर्षंयोऽधीते ॥ सब्रह्मभूयायकल्पते ॥ ससर्वतः सुखमेधते ॥ ससर्वविघ्नैर्नबाध्यते ॥ सपञ्चमहापापात्प्रमुच्यते ॥ सायमधीया-नोदिवसकृतंपापंनाशयति ॥ प्रातरधीयानोरात्रिकृतंपापंनाशयति ॥ सायंप्रातः प्रयुञ्जा-नोऽपापोभवति ॥ सर्वत्राधीयानोऽपविघ्नोभवति ॥ धर्मार्थकाममोक्षंचविंदति ॥ इदमथर्व- शीर्षमशिष्यायनदेयं ॥ योयदिमोहाद्दास्यति ॥ सपापीयान् भवति ॥ सहस्रावर्तनात् यंयंकाममधीते ॥ तं तमनेनसाधयेत् ॥ अनेनगण-पतिमभिषिञ्चति ॥ सवाग्मीभवति ॥ चतुर्थ्यामनश्नन् जपति ॥ सविद्यावान् भवति ॥ इत्यथर्वणवाक्यं ॥ ब्रह्माद्याचरणंविद्यात् ॥ नबिभेतिकदाचनेति ॥ योदूर्वांकुरैयजति ॥ सवैश्रवणोपमोभवति ॥ योलाजैर्यजति ॥ सयशोवान्भवति ॥ समेधावान्भवति ॥ योमोदकसहस्रेणयजति ॥ सवांछितफलमवाप्नोति ॥ यः साज्यसमिद्भिर्यजति ॥ ससर्वंलभते ससर्वंलभते ॥ अष्टौब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयित्वा ॥ सूर्यवर्चस्वीभवति ॥ सूर्यग्रहेमहानद्यांप्रतिमासन्निधौवाजप्त्वा ॥ सिद्धमन्त्रो भवति ॥ महाविघ्नात्प्रमुच्यते ॥ महादोषात्प्रमुच्यते ॥ महापापात्प्रमुच्यते ॥ ससर्वविद्भवतिससर्वविद्भवति ॥ यएवंवेद ॥ इत्युपनिषत् ॥ ॐ भद्रंकर्णेभिः 0 ॥ १ ॥ स्वतिनइन्द्रो0 ॥ १ ॥

॥ इति गणपत्यथर्वशीर्ष समाप्तम् ॥

पुरश्चरणविधिः

एवं नित्यक्रमं प्रवर्तयन् श्री विद्या रत्नाकरे श्यामेक्रमे वक्ष्यमाणेन विधिना अष्टाविंशर्तिसहस्रसंख्या पुरश्वरणजपः। प्रकृते कलियुगत्वाच्चतुर्गुणितम्। प्रथमेऽह्निसहस्रम्। ततः प्रत्यहं सहस्रसंख्यञ्च कृत्वा जपदशांशेन होमः। दद्दशांशेन तर्पणम्, तद्दशांशेन मार्जनम्, तद्दशांशेन ब्राह्मणभोजनानि च विदध्यात।

होमे द्रव्याणि

मोदकैः पृथुकैर्लाजैः सक्तुभिश्चेक्षुपर्वभिः ।
नारिकेलैस्तिलैश्शुद्धैस्सुपक्वैः कदलीफलैः ॥

इत्युक्तान्यष्टौ, एतेषां प्रमाणन्तु–

मोदकाः-अखण्डिताः ग्रासमिताः, पृथुकलाजसक्तवो मुष्टिपरिमिताः । इक्षुप्रमाणं श्लोक एवोक्तम् । नारिकेलम् अष्टधा खण्डितम् । तिलाःचुलुकप्रमाणाः शतसंख्याकाः वा । कदली फलमल्पम् यद्यखण्डितम् पृथु चेद्यथारूचि खण्डितम् । अमीषां द्रव्याणां मधुक्षीरघृतसिक्तानां पृथक् पृथगाहुतयो होमसंख्या पिण्डाष्टमभागमिताः ३५० श्लोकपाठक्रमेण भवन्ति । अष्टद्रव्यहोमात् प्रागावरणदेवतानामेकैकाहुतिः प्रधानदेवतायैश्च दशाहुतयः ताआज्येनैव भवन्ति । तर्पणपूर्वाङ्गन्तु चतुरावृतितर्पणवदेव । इत्थं पुरश्चरणेन सिद्धमनुः, स्वातन्त्र्येणोपस्तौ च श्रीक्रमोक्तेन क्रमेण नैमित्तिकार्चनपरः काम्यापेक्षी चेत् तत्तत्कामानुगुणेन द्रव्येणेष्ट्वा सिद्धसङ्कल्पः सुखी विहरेत्, इति शिवम् ।

सहस्रनामावलिः

अस्य श्रीमहागणपति-सहस्रनाम-स्तोत्रमन्त्रस्य महागणपतये-ऋषये नमः शिरसि अनुष्ठुपृछन्दसे नमः मुखे श्रीमहागणपति-देवतायैः नमः हृदये गं बीजाय नमः गुह्ये, हुं शक्तये नमः पादयोः, स्वाहा कीलकाय नमः नाभौ, महागणपतिप्रसाद सिद्धये जपे विनियोगाय नमः करसम्पुटे ।

ॐ गां	अङ्गुष्ठाभ्यां नमः,	हृदयाय नमः
ॐ गीं	तर्जनीभ्यां नमः,	शिरसे स्वाहा
ॐ गूं	मध्यमाभ्यां नमः,	शिखायै वषट्
ॐ गैं	अनामिकाभ्यां नमः,	कवचाय हुम्
ॐ गौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः,	नेत्रत्राय वौषट्
ॐ गः	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

बीजापूरगदेक्षुकार्मुकरुजा चक्राब्जपाशोत्पल ।
ब्रीह्यग्रस्वविषाणरत्नकलश – प्रोद्यत्कराम्भोरुहः ॥
ध्येयो वल्लभया सपद्मकरया श्लिष्टोज्ज्वलद्भूषया ।
विश्वोत्पत्ति-विपत्ति-संस्थितिकरो विघ्नेश इष्टार्थदः ॥

॥ श्रीः ॥

श्रीमहागणपतिसहस्रनामावलिः

गं गणेश्वराय नमः	१	गं हेरम्बाय नमः	२३
गणक्रीडाय	२	शम्बराय	२४
गणनाथाय	३	शम्भवे नमः	२५
गणाधिपाय	४	लम्बकर्णाय	२६
एकदंष्ट्राय	५	महाबलाय	२७
वक्रतुण्डाय	६	नन्दनाय	२८
गजवक्त्राय	७	अलम्पटाय	२९
महोदराय	८	अभीरवे	३०
लम्बोदराय	९	मेघनादाय	३१
धूम्रवर्णाय	१०	गणञ्जयाय	३२
विकटाय	११	विनायकाय	३३
विघ्ननायकाय	१२	विरूपाक्षाय	३४
सुमुखाय	१३	धीरशूराय	३५
दुर्मुखाय	१४	वरप्रदाय	३६
बुद्धाय	१५	महागणपतये	३७
विघ्नराजाय	१६	बुद्धिप्रियाय	३८
गजाननाय	१७	क्षिप्रप्रसादनाय	३९
भीमाय	१८	रुद्रप्रियाय	४०
प्रमोदाय	१९	गणाध्यक्षाय	४१
आमोदाय	२०	उमापुत्राय	४२
सुरानन्दाय	२१	अघनाशनाय	४३
मदोत्कटाय	२२	कुमारगुरवे	४४
		ईशानपुत्राय	४५

गं मूसकवाहनाय नमः	४६	गं कवये नमः	७३
सिद्धिप्रियाय	४७	कवीनामृषभाय	७४
सिद्धिपतये	४८	ब्रह्मण्याय नमः	७५
सिद्धाय नमः	४९	ब्रह्मणस्पतये	७६
सिद्धिविनायकाय	५०	ज्येष्ठाराजाय	७७
अविघ्नाय	५१	निधिपतये	७८
तुम्बुरवे	५२	निधिप्रियपतिप्रियाय	७९
सिंहवाहनाय	५३	हिरण्मयपुरान्तःस्थाय	८०
मोहिनीप्रियाय	५४	सूर्यमण्डलमध्यगाय	८१
कटङ्कटाय	५५	कराहतिध्वस्तसिन्धुसलिलाय	८२
राजपुत्राय	५६	पूषदन्तभिदे	८३
शालकाय	५७	उमाङ्केलिकुतुकिने	८४
सम्मिताय	५८	मुक्तिदाय	८५
अमिताय	५९	कुलपालनाय	८६
कूश्माण्डसामसम्भूतये	६०	किरीटिने	८७
दुर्जयाय	६१	कुण्डलिने	८८
धूर्जयाय	६२	हारिणे	८९
जयाय	६३	वनमालिने	९०
भूपतये	६४	मनोमयाय	९१
भुवनपतये	६५	वैमुख्यहतदैत्यश्रिये	९२
भूतानां-पतये	६६	पादाहतिजितक्षितये	९३
अव्ययाय	६७	सद्योजातस्वर्णमुञ्जमेखलिने	९४
विश्वकर्त्रे	६८	दुर्निमित्तहृते	९५
विश्वमुखाय	६९	दुस्स्वप्नहृते	९६
विश्वरूपाय	७०	गं प्रसहनाय	९७
निधये	७१	गुणिने	९८
घृणये	७२	नादप्रतिष्ठिताय	९९

गं सुरूपाय	१००	गं शम्भुवक्त्रोद्भवाय नमः	१२७
सर्वनेत्राधिवासाय	१०१	शम्भुकोपघ्ने	१२८
वीरासनाश्रयाय	१०२	शम्भुहास्यभुवे	१२९
पीताम्बराय	१०३	शम्भुतेजसे	१३०
गं खण्डरदाय	१०४	शिवाशोकहारिणे	१३१
खण्डेन्दुकृतशेखराय	१०५	गौरीसुखावहाय	१३२
चित्राङ्कश्यामदशनाय	१०६	उमाङ्गमलजाय	१३३
भालचन्द्राय	१०७	गौरीतेजोभुवे	१३४
चतुर्भुजाय	१०८	स्वर्धुनीभवाय	१३५
योगाधिपाय	१०९	यज्ञकायाय	१३६
तारकस्थाय	११०	महानादाय	१३७
पुरुषाय	१११	गिरिवर्ष्मणे	१३८
गजकर्णकाय	११२	शुभाननाय	१३९
गणाधिराजाय	११३	सर्वात्मने	१४०
विजयस्थिराय	११४	सर्वदेवात्मने	१४१
गजपतिध्वजिने	११५	ब्रह्ममूर्ध्ने	१४२
देवदेवाय	११६	कुकुप्छुतये	१४३
स्मरप्राणदीपकाय	११७	ब्रह्माण्डकुम्भाय	१४४
वायुकीलकाय	११८	चिद्व्योमभालाय	१४५
विपश्चिद्वरदाय	११९	सत्यशिरुहाय	१४६
नादोन्नादभिन्नबलाहकाय	१२०	जगज्जन्मलयोन्मेषनिमेषाय	१४७
वराहरदनाय	१२१	अग्न्यर्कसोमदृशे	१४८
मृत्युञ्जयाय	१२२	गिरीन्द्रैकरदाय	१४९
व्याघ्राजिनाम्बराय	१२३	धर्माधर्मोष्ठाय	१५०
इच्छाशक्तिधराय	१२४	सामबृंहिताय	१५१
देवत्रात्रे	१२५	ग्रहर्क्षदशनाय नमः	१५२
दैत्यविमर्दनाय	१२६	वाणीजिह्वाय	१५३

गं वासवनासिकाय नमः	१५४
कुलाचलांसाय	१५५
सोमार्कघण्टाय	१५६
रुद्रशिरोधराय	१५७
नदीनदभुजाय	१५८
सर्पाङ्गुलीकाय	१५९
तारकानखाय	१६०
भ्रूमध्यसंस्थितकराय	१६१
ब्रह्मविद्यामदोत्कटाय	१६२
व्योमनाभये	१६३
श्रीहृदयाय	१६४
मेरुपृष्ठाय	१६५
अर्णवोदराय	१६६
कुक्षिस्थयक्षगन्धर्वरक्षः-किन्नरमानुषाय	१६७
पृथ्वीकटये	१६८
सृष्टिलिङ्गाय	१६९
शैलोरवे	१७०
दस्रजानुकाय	१७१
पातालजङ्घाय	१७२
मुनिपदे	१७३
कालाङ्गुष्ठाय	१७४
त्रयीतनवे	१७५
ज्योतिर्मण्डललाङ्गूलाय	१७६
हृदयालाननिश्चलाय	१७७
हृत्पद्मकर्णिकाशालि-वियत्केलिसरोवराय	१७८
गं सद्भक्तध्याननिगडाय नमः	१७९
पूजावारीनिवारिताय	१८०
प्रतापिने	१८१
कश्यपसुताय	१८२
गणपाय	१८३
विष्टपिने	१८४
बलिने	१८५
यशस्विने	१८६
धार्मिकाय	१८७
स्वोजसे	१८८
प्रथमाय	१८९
प्रथमेश्वराय	१९०
चिन्तामणिद्वीपपतये	१९१
कल्पद्रुमवनालयाय	१९२
रत्नमण्डपमध्यस्थाय	१९३
रत्नसिंहासनाश्रयाय	१९४
तीव्राशिरोधृतपदाय	१९५
ज्वालिनीमौलिलालिताय	१९६
नन्दानन्दितपीठश्रिये	१९७
भोगदाभूषितासनाय	१९८
सकामदायिनीपीठाय	१९९
स्फुरदुग्रासनाश्रयाय	२००
तेजोवतीशिरोरत्नाय	२०१
सत्यानित्यावतंसिताय	२०२
सविघ्ननाशिनीपीठाय	२०३
सर्वशक्त्यम्बुजाश्रयाय	२०४
लिपिपद्मासनाधाराय	२०५

गं वह्निधामत्रयाश्रयाय नमः	२०६	गं सर्पकोटीरकटकाय नमः	२३३
उन्नतप्रप्रदाय	२०७	सर्पग्रैवेयकाङ्गदाय	२३४
गूढगुल्फाय	२०८	सर्पकक्ष्योदरबन्धाय	२३५
संवृत्तपार्ष्णिकाय	२०९	सर्पराजोत्तरीयकाय	२३६
पीनजङ्घाय	२१०	रक्ताय	२३७
श्लिष्टजानवे	२११	रक्ताम्बरधराय	२३८
स्थूलोरवे	२१२	रक्तमाल्यविभूषणाय	२३९
प्रोन्नमत्कटये	२१३	रक्तेक्षणाय	२४०
निम्ननाभये	२१४	रक्तकराय	२४१
स्थूलकुक्षये	२१५	रक्तताल्वोष्ठपल्लवाय	२४२
पीनवक्षसे	२१६	श्वेताय	२४३
बृहद्भुजाय	२१७	श्वेताम्बरधराय	२४४
पीनस्कन्धाय	२१८	श्वेतमाल्यविभूषणाय	२४५
कम्बुकण्ठाय	२१९	श्वेतातपत्ररुचिराय	२४६
लम्बोष्ठाय	२२०	श्वेतचामरवीजिताय	२४७
लम्बनासिकाय	२२१	सर्वावयवसम्पूर्णसर्वलक्षण-	
भग्नवामरदाय	२२२	लक्षिताय	२४८
तुङ्गाय सव्यदन्ताय	२२३	सर्वाभरणशोभाढ्याय	२४९
महाहनवे	२२४	सर्वशोभासमन्विताय	२५०
ह्रस्वनेत्रत्रयाय	२२५	सर्वमङ्गलमाङ्गल्याय	२५१
शूर्पकर्णाय	२२६	सर्वकारणकारणाय	२५२
निबिडमस्तकाय	२२७	सर्वदैककराय	२५३
स्तबकाकारकुम्भाग्राय	२२८	शार्ङ्गिणे	२५४
रत्नमौलये	२२९	बीजापूरिणे	२५५
निरङ्कुशाय	२३०	गदाधराय	२५६
सर्पहारकटीसूत्राय	२३१	इक्षुचापधराय	२५७
सर्पयज्ञोपवीतपते	२३२	शूलिने	२५८

गं चक्रपाणये नमः २५९
सरोजभृते २६०
पाशिने २६१
धृतोत्पलाय २६२
शालीमञ्जरीभृते २६३
स्वदन्तभृते २६४
कल्पवल्लीधराय २६५
विश्वाभयदैककराय २६६
वशिने २६७
अक्षमालाधराय २६८
ज्ञानमुद्रावते २६९
मुद्गरायुधाय २७०
पूर्णपात्रिणे २७१
कम्बुधराय २७२
मातुलुङ्गधराय २७४
चूतकलिकाभृते २७५
कुठारवते २७६
पुष्करस्थस्वर्णघटीपूर्णरत्ना-
भिवर्षकाय २७७
भारतीसुन्दरीनाथाय २७८
विनायकरतिप्रियाय २७९
महालक्ष्मीप्रियतमाय २८०
सिद्धलक्ष्मीमनोरमाय २८१
रमारमेशपूर्वाङ्गाय २८२
दक्षिणोमामहेश्वराय २८३
महीवराहवामाङ्गाय २८४
रतिकन्दर्पपश्चिमाय २८५

गं आमोदमोदजननाय नमः २८६
सप्रमोदप्रमोदनाय २८७
समेधितसमृद्धश्रिये २८८
ऋद्धिसिद्धिप्रवर्तकाय २८९
दत्तसौमुख्यसुमुखाय २९०
कान्तिकन्दलिताश्रयाय २९१
मदनावत्याश्रिताङ्घ्रये २९२
कृत्तदौर्मुख्यदुर्मुखाय २९३
विघ्नसम्पल्लवोपघ्नसेवाय २९४
उन्निद्रमदद्रवाय २९५
विघ्नकृन्निघ्नचरणाय २९६
द्राविणीशक्तिसत्कृताय २९७
तीव्राप्रसन्ननयनाय २९८
ज्वालिनीपालितैकदृशे २९९
मोहिनीमोहनाय ३००
भोगदायिनीकान्तिमण्डिताय ३०१
कामिनीकान्तवक्त्रश्रिये ३०२
अधिष्ठितवसुन्धराय ३०३
वसुन्धरामदोन्नद्धमहाशङ्ख-
निधिप्रभवे ३०४
नमद्वसुमतीमौलिमहापद्म-
निधिप्रभवे ३०५
सर्वसद्गुरुसंसेव्याय ३०६
शोचिष्केशहृदाश्रयाय ३०७
ईशानमूर्ध्ने ३०८
देवेन्द्रशिखाय ३०९
पवननन्दनाय ३१०

गं अग्रप्रत्यग्रनयनाय नमः ३११
दिव्यास्त्राणां प्रयोगविदे ३१२
ऐरावतादिसर्वाशावारणाव-
रणप्रियाय ३१३
वज्राद्यस्त्रपरीवाराय ३१४
गणचण्डसमाश्रयाय ३१५
जयाजयपरीवाराय ३१६
विजयाविजयावहाय ३१७
अजितार्चितपादाब्जाय ३१८
गं नित्यानित्यावतंसिताय ३१९
विलासिनीकृतोल्लासाय ३२०
शौडीसौन्दर्यमण्डिताय ३२१
अनन्तानन्तसुखदाय ३२२
सुमङ्गलसुमङ्गलाय ३२३
इच्छाशक्तिज्ञानशक्तिक्रिया-
शक्तिनिषेविताय ३२४
सुभगासंश्रितपदाय ३२५
ललिताललिताश्रयाय ३२६
कामिनीकामनाय ३२७
काममालिनीकेलिलालिताय ३२८
सरस्वत्याश्रयाय ३२९
गौरीनन्दनाय ३३०
श्रीनिकेतनाय ३३१
गुरुगुप्तपदाय ३३२
वाचासिद्धाय ३३३
वागीश्वरीपतये ३३४
नलिनीकामुकाय ३३५

गं वामारामाय नमः ३३६
ज्येष्ठामनोरमाय ३३७
रौद्रीमुद्रितपादाब्जाय ३३८
हुंबीजाय ३३९
तुङ्गशक्तिकाय ३४०
विश्वादिजननत्राणाय ३४१
स्वाहाशक्तये ३४२
सकीलकाय ३४३
अमृताब्धिकृतावासाय ३४४
मदघूर्णितलोचनाय ३४५
उच्छिष्टगणाय ३४६
उच्छिष्टगणेशाय ३४७
गणनायकाय ३४८
सार्वकालिकसंसिद्धये ३४९
नित्यशैवाय ३५०
दिगम्बराय ३५१
अनपायाय ३५२
अनन्तदृष्टये ३५३
अप्रमेयाय ३५४
अजरामराय ३५५
अनाविलाय ३५६
अप्रतिरथाय ३५७
अच्युताय ३५८
अमृताय ३५९
अक्षराय ३६०
अप्रतर्क्याय ३६१
अक्षयाय ३६२

गं अजय्याय नमः	३६३
अनादाराय	३६४
अनामयाय	३६५
अमलाय	३६६
अनोधसिद्धये	३६७
अद्वैताय	३६८
अघोराय	३६९
अप्रतिमाननाय	३७०
अनाकाराय	३७१
अब्धिभूम्यग्निबलघ्नाय	३७२
अव्यक्तलक्षणाय	३७३
आधारपीठाय	३७४
आधाराय	३७५
आधाराधेयवर्जिताय	३७६
आखुकेतनाय	३७७
आशापूरकाय	३७८
आखुमहारथाय	३७९
इक्षुसागरमध्यस्थाय	३८०
इक्षुभक्षणलालसाय	३८१
इक्षुचापातिरेकश्रिये	३८२
इक्षुचापनिषेविताय	३८३
इन्द्रगोपसमानश्रिये	३८४
इन्द्रीनीलसमद्युतये	३८५
इन्दीवरदलश्यामाय	३८६
इन्दुमण्डलनिर्मलाय	३८७
इध्मप्रियाय	३८८
इडाभागाय	३८९
गं इराधाम्ने नमः	३९०
इन्दिराप्रियाय	३९१
इक्ष्वाकुविघ्नविध्वंसिने	३९२
इतिकर्तव्यतेप्सिताय	३९३
ईशानमौलये	३९४
ईशानाय	३९५
ईशानसुताय	३९६
ईतिघ्ने	३९७
ईषणात्रयकल्पान्ताय	३९८
ईहामात्रविवर्जिताय	३९९
उपेन्द्राय	४००
उडुभृन्मौलये	४०१
उण्डेरकबलिप्रियाय	४०२
उन्नताननाय	४०३
उत्तुङ्गाय	४०४
उदारत्रिदशाग्रण्याय	४०५
ऊर्जस्वते	४०६
ऊष्मलमदाय	४०७
ऊहापोहदुरासदाय	४०८
ऋग्यजुस्सामसम्भूतये	४०९
ऋद्धिसिद्धिप्रवर्तकाय	४१०
ऋजुचित्तैकसुलभाय	४११
ऋणत्रयविमोचकाय	४१२
स्वभक्तानां लुप्तविघ्नाय	४१३
सुरद्विषां लुप्तशक्तये	४१४
विमुखार्चानां लुप्तश्रिये	४१५
लूताविस्फोटनाशनाय	४१६
एकारपीठमध्यस्थाय	४१७

गं एकपादकृतासनाय नमः	४१८
एजिताखिलदैत्यश्रिये	४१९
एधिताखिलसंश्रयाय	४२०
ऐश्वर्यनिधये	४२१
ऐश्वर्याय	४२२
ऐहिकामुष्मिकप्रदाय	४२३
ऐरम्मदसमोन्मेषाय	४२४
ऐरावतनिभाननाय	४२५
औङ्कारवाच्याय	४२६
औङ्काराय	४२७
ओजस्वते	४२८
ओषधिपतये	४२९
औदार्यनिधये	४३०
औद्धत्यधुर्याय	४३१
औन्नत्यनिस्वनाय	४३२
सुरनागानामङ्कुशाय	४३३
सुरद्विषामङ्कुशाय	४३४
अःसमस्तविसर्गान्तपदेषु-परिकीर्तिताय	४३५
कमण्डलुधराय	४३६
कल्पाय	४३७
कपर्दिने	४३८
कलभाननाय	४३९
कर्मसाक्षिणे	४४०
कर्मकर्त्रे	४४१
कर्माकर्मफलप्रदाय	४४२
कदम्बगोलकाकाराय	४४३
गं कूष्माण्डगणनायकाय नमः	४४४
कारुण्यदेहाय	४४५
कपिलाय	४४६
कथकाय	४४७
कटिसूत्रभृते	४४८
खर्वाय	४४९
खड्गप्रियाय	४५०
खड्गखांतान्तस्थाय	४५१
खनिर्मलाय	४५२
खल्वाटशृङ्गनिलयाय	४५३
खट्वाङ्गिने	४५४
खदुरासदाय	४५५
गुणाढ्याय	४५६
गहनाय	४५७
गस्थाय	४५८
गद्यपद्यसुधार्णवाय	४५९
गद्यगानप्रियाय	४६०
गर्जाय	४६१
गीतगीर्वाणपूर्वजाय	४६२
गुह्याचाररताय	४६३
गुह्याय	४६४
गुह्यागमनिरूपिताय	४६५
गुहाशयाय	४६६
गुहाब्धिस्थाय	४६७
गुरुगम्याय	४६८
गुरोर्गुरवे	४६९
घण्टाघर्घरिकामालिने	४७०
घटकुम्भाय	४७१

गं घटोदराय नमः	४७२
चण्डाय	४७३
चण्डेश्वरसुहृदे	४७४
चण्डीशाय	४७५
चण्डविक्रमाय	४७६
चराचरपतये	४७७
चिन्तामणिचर्वणलालसाय	४७८
छन्दसे	४७९
छन्दोवपुषे	४८०
छन्दोदुर्लक्ष्याय नमः	४८१
छन्दविग्रहाय	४८२
जगद्योनये	४८३
जगत्साक्षिणे	४८४
जगदीशाय	४८५
जगन्मयाय	४८६
जपाय	४८७
जपपराय	४८८
जप्याय	४८९
जिह्वासिंहासनप्रभवे	४९०
झलज्झलोल्लसद्दान-	
झङ्कारिभ्रमराकुलाय	४९१
टङ्कारस्फारसंरावाय	४९२
टङ्कारिमणिनूपुराय	४९३
ठद्वयीपल्लवान्तस्थसर्व-	
मन्त्रैकसिद्धिदाय	४९४
डिण्डिमुण्डाय	४९५
डाकिनीशाय	४९६
डामराय	४९७
गं डिण्डिमप्रियाय नमः	४९८
ढक्कानिनादमुदिताय	४९९
ढौकाय	५००
ढुण्ढिविनाकाय	५०१
तत्वानां परमाय तत्त्वाय	५०२
तत्त्वम्पदनिरूपिताय	५०३
तारकान्तरसंस्थानाय	५०४
ताराकाय	५०५
तारकान्तकाय	५०६
स्थाणवे	५०७
स्थाणुप्रियाय	५०८
स्थात्रे	५०९
स्थावराय जङ्गमाय जगते	५१०
दक्षयज्ञप्रमथनाय	५११
दात्रे	५१२
दानवमोहनाय	५१३
दयावते	५१४
दिव्यविभवाय	५१५
दण्डभृते	५१६
दण्डनायकाय	५१७
दन्तप्रभिन्नाभ्रमालाय	५१८
दैत्यवारणदारणाय	५१९
दंष्ट्रालग्नद्विपघटाय	५२०
देवार्थनृगजाकृतये	५२१
धन्यधान्यपतये	५२२
धन्याय	५२३
धनदाय	५२४
धरणीधराय	५२५

गं ध्यानैकप्रकटाय नमः ५२६
ध्येयाय ५२७
ध्यानाय ५२८
ध्यानपरायणाय ५२९
नन्द्याय ५३०
नन्दिप्रियाय ५३१
नादाय ५३२
नादमध्यप्रतिष्ठिताय ५३३
निष्कलाय ५३४
निर्मलाय ५३५
नित्याय ५३६
नित्यानित्याय ५३७
निरामयाय ५३८
परंव्योम्ने ५३९
परंधाम्ने ५४०
परमात्मने ५४१
परम्पदाय ५४२
परात्पराय ५४३
पशुपतये ५४४
पशुपाशबिमोचकाय ५४५
पूर्णानन्दाय ५४६
परानन्दाय ५४७
पुराणपुरुषोत्तमाय ५४८
पद्मप्रसन्ननयनाय ५४९
प्रणताज्ञानमोचनाय ५५०
प्रमाणप्रत्ययातीताय ५५१
प्रणतार्तिनिवारणाय ५५२
फलहस्ताय ५५३

गं फणिपतये नमः ५५४
फेत्काराय ५५५
फाणितप्रियाय ५५६
बाणार्चिताङ्घ्रियुगलाय ५५७
बालकेलिकुतूहलिने ५५८
ब्रह्मणे ५५९
ब्रह्मार्चितपदाय ५६०
ब्रह्मचारिणे ५६१
बृहस्पतये ५६२
वृहत्तमाय ५६३
ब्रह्मपराय ५६४
ब्रह्मण्याय ५६५
ब्रह्मवित्प्रियाय ५६६
बृहन्नादाग्र्यचीत्काराय ५६७
ब्रह्माण्डावलिमेखलाय ५६८
भ्रूक्षेपदत्तलक्ष्मीकाय ५६९
भर्गाय ५७०
भद्राय ५७१
भयापहाय ५७२
भगवते ५७३
भक्तिसुलभाय ५७४
भूतिदाय ५७५
भूतिभूषणाय ५७६
भव्याय ५७७
भूतालयाय ५७८
भोगदात्रे ५७९
भ्रूमध्यगोचराय ५८०
मन्त्राय ५८१

गं मन्त्रपतये नमः	५८२	गं लक्ष्याय नमः	६१०
मन्त्रिणे नमः	५८३	लयस्थाय	६११
मदमत्तमनोरमाय	५८४	लड्डुकप्रियाय	६१२
मेखलावते	५८५	लानप्रियाय	६१३
मन्दगतये	५८६	लास्यपराय	६१४
मतिमत्कमलेक्षणाय	५८७	लाभकृते	६१५
महाबलाय	५८८	लोकविश्रुताय	६१६
महावीर्याय	५८९	वरेण्याय	६१७
महाप्राणाय	५९०	वह्निवदनाय	६१८
महामनसे	५९१	वन्द्याय	६१९
यज्ञाय	५९२	वेदान्तगोचराय	६२०
यज्ञपतये	५९३	विकर्त्रे	६२१
यज्ञगोप्त्रे	५९४	विश्वतश्चक्षुषे	६२२
यज्ञफलप्रदाय	५९५	बिधात्रे	६२३
यशस्कराय	५९६	विश्वतोमुखाय	६२४
योगगम्याय	५९७	वामदेवाय	६२५
याज्ञिकाय	५९८	विश्वनेत्रे	६२६
याजकप्रियाय	५९९	वज्रिवज्रनिवारणाय	६२७
रसाय	६००	विश्वबन्धनविष्कम्भाधाराय	६२८
रसप्रियाय	६०१	विश्वेश्वरप्रभवे	६२९
रस्याय	६०२	शब्दब्रह्मणे	६३०
रञ्जकाय	६०३	शमप्राप्याय	६३१
रावणार्चिताय	६०४	शम्भुशक्तिगणेश्वराय	६३२
रक्षोरक्षाकराय	६०५	शास्त्रे	६३३
रत्नगर्भाय	६०६	शिखाग्रनिलयाय	६३४
राज्यसुखप्रदाय	६०७	शरण्याय	६३५
लक्ष्याय	६०८	शिखरीश्वराय	६३६
लक्ष्यप्रदाय	६०९	षड्तुकुसुमस्रग्विणे	६३७

षड्धाराय नमः	६३८	गं क्षिप्रक्षेमकराय नमः	६६६
षडक्षराय	६३९	क्षेमानन्दाय	६६७
संसारवैद्याय	६४०	क्षोणीसुरद्रुमाय	६६८
सर्वज्ञाय	६४१	धर्मप्रदाय	६६९
सर्वभेषजभेषजाय	६४२	अर्थदाय	६७०
सृष्टिस्थितिलयक्रीडाय	६४३	कामदात्रे	६७१
सुरकुञ्जरभेदनाय	६४४	सौभाग्यवर्धनाय	६७२
सिन्दूरितमहाकुम्भाय	६४५	विद्याप्रदाय	६७३
सदसद्व्यक्तिदायकाय	६४६	विभवदाय	६७४
साक्षिणे	६४७	भुक्तिमुक्तिफलप्रदाय	६७५
समुद्रमथनाय	६४८	आभिरुप्यकराय	६७६
स्वसंवेद्या	६४९	वीरश्रीप्रदाय	६७७
स्वदक्षिणाय	६५०	विजयप्रदाय	६७८
स्वतन्त्राय	६५१	सर्ववश्यकराय	६७९
सत्यसङ्कल्पाय	६५२	गर्भदोषघ्ने	६८०
सामगानरताय	६५३	पुत्रपौत्रदाय	६८१
सुखिने	६५४	मेधादाय	६८२
हंसाय	६५५	कीर्तिदाय	६८३
हस्तिपिशाचीशाय	६५६	शोकहारिणे	६८४
हवनाय	६५७	दौर्भाग्यनाशनाय	६८५
हव्यकव्यभुजे	६५८	प्रतिवादिमुखस्तम्भाय	६८६
हव्याय	६५९	रुष्टचित्तप्रसादनाय	६८७
हुतप्रियाय	६६०	पराभिचारशमनाय	६८८
हर्षाय	६६१	दुःखभञ्जनकारकाय	६८९
हृल्लेखामन्त्रमध्यगाय	६६२	लवाय	६९०
क्षेत्राधिपाय	६६३	त्रुटये	६९१
क्षमाभर्त्रे	६६४	कलायै	६९२
क्षमापरपरायणाय	६६५	काष्ठायै	६९३

गं निमेषाय नमः	६९४	गं राहवे नमः	७२२
तत्पराय	६९५	मन्दाय	७२३
क्षणाय	६९६	कवये	७२४
घट्यै	६९७	जीवाय	७२५
मुहूर्ताय	६९८	बुधाय	७२६
प्रहराय	६९९	भौमाय	७२७
दिवानक्ताय	७००	शशिने	७२८
अहर्निशाय	७०१	रवये	७२९
पक्षाय	७०२	कालाय	७३०
मासाय	७०३	सृष्टये	७३१
अयनाय	७०४	स्थितये	७३२
वर्षाय	७०५	विश्वस्मै स्थावराय जङ्गमाय	७३३
युगाय	७०६	भुवे	७३४
कल्पाय	७०७	अद्भ्यो	७३५
महालयाय	७०८	अग्नये	७३६
राशये	७०९	मरुते	७३७
तारायै	७१०	व्योम्ने	७३८
तिथये	७११	अहङ्कृतये	७३९
योगाय	७१२	प्रकृतये	७४०
वाराय	७१३	पुंसे	७४१
करणाय	७१४	ब्रह्मणे	७४२
अंशकाय	७१५	विष्णवे	७४३
लग्नाय	७१६	शिवाय	७४४
होरायै	७१७	रुद्राय	७४५
कालचक्राय	७१८	ईशाय	७४६
मेरवे	७१९	शक्तये	७४७
सप्तर्षिभ्यो	७२०	सदाशिवाय	७४८
ध्रुवाय	७२१		

गं त्रिदशेभ्यो नमः	७४९	गं सदाचाराय नमः	७७४
पितृभ्यो	७५०	मीमांसायै	७७५
सिद्धेभ्यो	७५१	न्यायविस्तराय	७७६
यक्षेभ्यो	७५२	आयुर्वेदाय	७७७
रक्षोभ्यो	७५३	धनुर्वेदाय	७७८
किन्नरेभ्यो	७५४	गान्धर्वाय	७७९
साध्येभ्यो	७५५	काव्यनाटकाय	७८०
विद्याधरेभ्यो	७५६	वैखानसाय	७८१
भूतेभ्यो	७५७	भागवताय	७८२
मनुष्येभ्यो	७५८	सात्वताय	७८३
पशुभ्यो	७५९	पाञ्चरात्रकाय	७८४
खगेभ्यो	७६०	शैवाय	७८५
समुद्रेभ्यो	७६१	पाशुपताय	७८६
सरिद्भ्यो	७६२	कालामुखाय	७८७
शैलेभ्यो	७६३	भैरवशासनाय	७८८
भूताय	७६४	शाक्ताय	७८९
भव्याय	७६५	वैनायकाय	७९०
भवोद्भवाय	७६६	सौराय	७९१
साङ्ख्याय	७६७	जैनाय	७९२
पातञ्जलाय	७६८	आर्हतसंहितायै	७९३
योगाय	७६९	सते	७९४
पुराणेभ्यो	७७०	असते	७९५
श्रुत्यै	७७१	व्यक्ताय	७९६
स्मृत्यै	७७२	अव्यक्ताय	७९७
वेदाङ्गेभ्यो	७७३	सचेतनाय	७९८
		अचेतनाय	७९९
		बन्धाय	८००

गं मोक्षाय नमः	८०१
सुखाय	८०२
भोगाय	८०३
अयोगाय	८०४
सत्याय	८०५
अणवे	८०६
महते	८०७
स्वस्ति	८०८
हुं नमः	८०९
फट् नमः	८१०
स्वधा नमः	८११
स्वाहा नमः	८१२
श्रौषड् नमः	८१३
वौषड् नमः	८१४
वषण्णमः	८१५
नमो नमः	८१६
ज्ञानाय	८१७
विज्ञानाय	८१८
आनन्दाय	८१९
बोधाय	८२०
संविदे	८२१
शमाय	८२२
यमाय	८२३
एकस्मै	८२४
एकाक्षराधाराय	८२५
एकाक्षरपरायणाय	८२६
एकाग्रधिये	८२७
एकवीराय	८२८
गं एकानेकस्वरूपधृते नमः	८२९
द्विरूपाय	८३०
द्विभुजाय	८३१
द्व्यक्षाय	८३२
द्विरदाय	८३३
द्वीपरक्षकाय	८३४
द्वैमातुराय	८३५
द्विवदनाय	८३६
द्वन्द्वातीताय	८३७
द्वयातिगाय	८३८
त्रिधाम्ने	८३९
त्रिकराय	८४०
त्रिवर्गफलदायकाय	८४१
त्रिगुणात्मने	८४२
त्रिलोकादये	८४३
त्रिशक्तीशाय	८४४
त्रिलोचनाय	८४५
चतुर्बाहवे	८४६
चतुर्दन्ताय	८४७
चतुरात्मने	८४८
चतुर्मुखाय	८४९
चतुर्विधोपायमयाय	८५०
चतुर्वर्णाश्रमाश्रयाय	८५१
चतुर्विधवचोवृत्तिपरि- वृत्तिप्रवर्तकाय	८५२
चतुर्थीपूजनप्रीताय	८५३
चतुर्थीतिथिसम्भवाय	८५४
पञ्चाक्षरात्मने	८५५

गं पञ्चात्मने नमः ८५६
पञ्चास्याय ८५७
पञ्चकृत्यकृते ८५८
पञ्चाधाराय ८५९
पञ्चवर्णाय ८६०
पञ्चाक्षरपरायणाय ८६१
पञ्चतालाय ८६२
पञ्चकराय ८६३
पञ्चप्रणवभाविताय ८६४
पञ्चब्रह्ममयस्फूर्तये ८६५
पञ्चावरणवारिताय ८६६
पञ्चभक्ष्यप्रियाय ८६७
पञ्चबाणाय ८६८
पञ्चशिवात्मकाय ८६९
षट्कोणपीठाय ८७०
षट्चक्रधाम्ने ८७१
षड्ग्रन्थिभेदकाय ८७२
षडध्वध्वान्तविध्वंसिने ८७३
षडङ्गुलमहाह्रदाय ८७४
षण्मुखाय ८७५
षण्मुखभ्रात्रे ८७६
षट्शक्तिपरिवारिताय ८७७
षड्वैरिवर्गविध्वंसिने ८७८
षडूर्मिभयभञ्जनाय ८७९
षट्तर्कदूराय ८८०
षट्कर्मनिरताय ८८१
षड्रसाश्रयाय ८८२
सप्तपातालचरणाय ८८३
सप्तद्वीपोरुमण्डलाय ८८४
सप्तस्वर्लोकमुकुटाय ८८५
सप्तसप्तिवरप्रदाय ८८६
सप्ताङ्गराज्यसुखदाय ८८७
सप्तर्षिगणमण्डिताय ८८८
सप्तछन्दोनिधये ८८९
सप्तहोत्रे ८९०
सप्तस्वराश्रयाय ८९१
सप्ताब्धिकेलिकासाराय ८९२
सप्तमातृनिषेविताय ८९३
सप्तच्छन्दोमोदमदाय ८९४
सप्तच्छन्दोमखप्रभवे ८९५
अष्टमूर्तिध्येयमूर्तये । ८९६
अष्टप्रकृतिकारणाय ८९७
अष्टाङ्गयोगफलभुवे ८९८
अष्टपत्राम्बुजासनाय ८९९
अष्टशक्तिसमृद्धश्रिये ९००
अष्टैश्वर्यप्रदायकाय ९०१
अष्टपीठोपपीठश्रियै ९०२
अष्टमातृसमावृताय ९०३
अष्टभैरवसेव्याय ९०४
अष्टवसुवन्द्याय ९०५
अष्टमूर्तिभृते ९०६
अष्टचक्रस्फुरन्मूर्तये ९०७
अष्टद्रव्यहविः प्रियाय ९०८

गं नवनागासनाध्यासिने नमः १०९
नवनिध्यनुशासित्रे ११०
नवद्वारपुराधाराय १११
नवाधारनिकेतनाय ११२
नवनारायणस्तुत्याय ११३
नवदुर्गानिषेविताय ११४
नवनाथमहानाथाय ११५
नवनागविभूषणाय ११६
नवरत्नविचित्राङ्गाय ११७
नवशक्तिशिरोधृताय नमः ११८
दशात्मकाय ११९
दशभुजाय १२०
दशदिक्पतिवन्दिताय १२१
दशाध्यायाय १२२
दशप्राणाय १२३
दशेन्द्रियनियामकाय १२४
दशाक्षरमहामन्त्राय १२५
दशाशाव्यापिविग्रहाय १२६
एकादशादिभीरुद्रैः स्तुताय १२७
एकादशाक्षराय १२८
द्वादशोद्दण्डदोर्दण्डाय १२९
द्वादशान्तनिकेतनाय १३०
त्रयोदशाभिधाभिन्नविश्वेदेवाधिदे १३१
— वताय
चतुर्दशेन्द्रवरदाय १३२
चतुर्दशमनुप्रभवे १३३
चतुर्दशादिविद्याढ्याय १३४

गं चतुर्दशजगत्प्रभवे नमः १३५
सामपञ्चदशाय १३६
पञ्चदशीशीतांशुनिर्मलाय १३७
षोडशाधारनिलयाय १३८
षोडशस्वरमातृकाय १३९
षोडशान्तपदावासाय १४०
षोडशेन्दुकलात्मकाय १४१
कलासप्तदश्यै १४२
सप्तदशाय १४३
सप्तदशाक्षराय १४४
अष्टादशद्वीपपतये १४५
अष्टादशपुराणकृते १४६
अष्टादशौषधीसृष्टये १४७
अष्टादशविधिस्मृताय १४८
अष्टादशलिपिव्यष्टिसमष्टि
ज्ञानकोविदाय १४९
एकविंशाय पुंसे १५०
एकविंशत्यङ्गुलिपल्लवाय १५१
चतुर्विंशतितत्त्वात्मने १५२
पञ्चविंशाख्यपूरुषाय १५३
सप्तविंशतितारेशाय १५४
सप्तविंशतियोगकृते १५५
द्वात्रिंशद्भैरवाधीशाय १५६
चतुस्त्रिंशन्महाह्रदाय १५७
षट्त्रिंशत्तत्त्वसम्भूतये १५८
अष्टत्रिंशत्कलातनवे १५९
नमदेकोनपञ्चाशन्मरुद्वर्ग-
निरर्गलाय १६०
पञ्चाशदक्षरश्रेण्यै १६१

गं पञ्चाशद्रुद्रविग्रहाय नमः ९६२
पञ्चाशद्विष्णुशक्तीशाय ९६३
पञ्चाशन्मातृकालयाय ९६४
द्विपञ्चाशद्वपुश्श्रेण्यै ९६५
त्रिषश्ट्यक्षरसंश्रयाय ९६६
चतुष्षष्ट्यर्णनिर्णेत्रे ९६७
चतुष्षष्टिकलानिधये ९६८
चतुष्षष्टिमहासिद्धयोगिनी
वृन्दवन्दिताय ९६९
अष्टषष्टिमहातीर्थक्षेत्रभैरव-
भावनाय ९७०
चतुर्नवतिमन्त्रात्मने ९७१
षण्णवत्यधिकप्रभवे ९७२
शतानन्दाय ९७३
शतधृतये ९७४
शतपत्रायतेक्षणाय ९७५
शतानीकाय ९७६
शतमखाय ९७७
शतधारावरायुधाय ९७८
सहस्त्रपत्र निलयाय ९७९
सहस्रफणभूषणाय ९८०
सहस्रीशीर्ष्णपुरुषाय ९८१
सहस्राक्षाय ९८२
सहस्रपदे ९८३

गं सहस्रनामसंस्तुत्याय नमः ९८४
सहस्राक्षबलापहाय ९८५
दशसाहस्रफणभृत्फणिराजकृता-
सनाय ९८६
अष्टाशीतिसहस्राद्यमहर्षिस्तोत्रयन्त्रि
ताय ९८७
लक्षाधीशप्रियाधाराय ९८८
लक्षाधारमनोमयाय ९८९
चतुर्लक्षजपप्रीताय ९९०
चतुर्लक्षप्रकाशिताय ९९१
चतुरशीतिलक्षाणांजीवानादिह-
संस्थिताय ९९१
कोटिसूर्यप्रतीकाशाय ९९२
कोटिचन्द्रांशुनिर्मलाय ९९३
शिवाभावाध्युष्टकोटिविनाय
कधुरन्धराय ९९५
सप्तकोटिमहामन्त्रमन्त्रिताव-
यवद्युतये ९९६
त्रयस्त्रिंशत्कोटिसुरश्रेणीप्रणत-
पादुकाय ९९७
अनन्तनाम्ने ९९८
अनन्तश्रिये ९९९
अनन्तानन्तसौख्यदाय नम: १000

पुनरपि ऋष्यादि-कराङ्गन्यासौ विदध्यात् ।
श्रीगणपतिसहस्रनामवली समाप्ता ॥

॥ श्रीगेणश्वरैकविंशतिनामनि ॥

गंगणञाय नमः	१	निधये नमः	१२
गणपतये नमः	२	सुमङ्गलाय नमः	१३
हेरम्बाय नमः	३	बीजाय नमः	१४
धरणीधराय नमः	४	आशापूरकाय नमः	१५
महागणपतये नमः	५	वरदाय नमः	१६
लक्षप्रदाय नमः	६	शिवाय नमः	१७
क्षिप्रप्रसादनाय नमः	७	काश्यपाय नमः	१८
अमोघसिद्धये नमः	८	नन्दनाय नमः	१९
अमिताय नमः	९	वाचासिद्धाय नमः	२०
मन्त्राय नमः	१०	ढुण्ढिविनायकाय नमः	२१
चिन्तामणये नमः	११		

॥ इति-एकविंशतिनामानि ॥

गणञयो गणपतिर्हेरम्बो धरणीधरः ।
महागणपतिर्लक्षप्रदः क्षिप्रप्रसादनः ॥
अमोघसिद्धिरमितो मन्त्रश्चिन्तामिणिर्निधिः ।
सुमङ्गलो बीजमाशापूरको वरदःशिवः ॥
काश्यपो नन्दनो वाचासिद्धो ढुण्ढिविनायकः ।
मोदेकैरेभिरत्रैकविंशत्यानामभिः पुमान् ॥
यः स्तौति मद्गतमना मदाराधनतत्परः ।
स्तुतो नाम्नां सहस्त्रेण तेनाहं नात्र संशयः ॥

नमो नमः सुरवरपूजिताङ्घ्रये नमो नमो निरुपममङ्गलात्मने ।
नमो नमो विपुलपदैकसिद्धये नमो नमः करिकलभाननाय ते ॥

इति श्रीदत्तात्रोयानन्दनाथ-
विरचितायां महागण पतिवरिवस्यायां महागणपतिनामावलिः

●

अथ होमप्रकरणम्

पूजामण्डपस्य ईशानभागे चतुरस्राकारं हस्तायाममङ्गुष्ठोन्नतं स्थण्डिलं परिकल्प्य,। 'मूलेन' निरीक्ष्य, फट् इति सामान्यार्घ्योदकेन प्रोक्ष्य कुशेन ताडयित्वा , हुं इत्यवगुण्ठ्य, स्थण्डिलोपरि मध्यमदक्षिणोत्तरेषु क्रमेण प्रागग्रास्तिस्रो रेखा विलिख्य तदुपरि मध्यमपश्चिमपूर्वेषु उदगग्रास्तिस्रो रेखा विलिख्य, तासु रेखासु उल्लेखक्रमेण–गं ह्रीं ब्रह्मणे नमः । गं ह्रीं यमाय नमः । गं ह्रीं सोमाय नमः । गं ह्रीं रुद्राय नमः । गं ह्रीं विष्णवे । नमः । गं ह्रीं इन्द्राय नमः । इत्यभ्यर्चयेत् ॥

ततः स्वदेहे षडङ्गन्यासं कुर्यात् । यथा–

गं ह्रीं सहस्रर्चिषे हृदयाय नमः । हं ह्रीं स्वास्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा । गं ह्रीं उत्तिष्ठ पुरुषाय शिखायै वषट् । गं ह्रीं धूमव्यापिने कवचाय हुं । गं ह्रीं सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट् । गं ह्रीं
गं ह्रीं धनुर्धराय अस्त्राय फट् ।

अनेनैव षडङ्गेन अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च स्थण्डिलमभ्यर्च्य, अत्र अष्टकोणषट्कोणत्रिकोणात्मकमग्निचक्रं प्रवेशरीत्या विलिख्य त्रिकोणे दिगष्टकं विभाव्य तत्र स्वाग्रादि, प्रादक्षिण्येन दि क्षु मध्ये च क्रमात् गं ह्रीं पीतायै नमः, गं ह्रीं श्वेतायै नमः, गं ह्रीं अरुणायै नमः, गं ह्रीं कृष्णायै नमः गं ह्रीं धूम्रायै नमः । गं ह्रीं तीव्रायै नमः । गं ह्रीं स्फुलिङ्गिन्यै नमः । गं ह्रीं रुचिरायै नमः । गं ह्रीं ज्वालिन्यै नमः । इति पीठशक्तीः समर्चयेत् ॥

ततः पीठमध्ये गं ह्रीं तं तमसे नमः । गं ह्रीं रं रजसे नमः । गं ह्रीं सं सत्वाय नमः । गं ह्रीं आं आत्मने नमः । गं ह्रीं अं अन्तरात्मने नमः । गं ह्रीं पं परमात्मने नमः । गं ह्रीं ज्ञानात्मने नमः । इति पूजयेत् ॥ ततः त्रिकोणे–गं ह्रीं ॐ ह्रीं वागीश्वरी वागीश्वराभ्यां नमः- इतिमन्त्रेण जनिष्यमाणस्य वह्नेः पितरौ वागीश्वरि वागीश्वरौ सम्पूज्य तयोर्मिथुनीभावं भावयित्वा, अरणेः सूर्यकान्ताद्वा' वह्निमुत्पाद्य द्विजगृहाद्वा आनीय मृत्पात्रे ताम्रपात्रे वा अग्निं स्थण्डिलाद्बहिः आग्नेय्यां ऐशान्यां नैऋत्यां वा दिशि

निधाय, तस्मात्क्रव्यादांशमेकमग्निशकलं फट् इति अस्त्रमन्त्रेण नैऋत्यां निरस्य अग्निं मूलेन निरीक्ष्य प्रोक्ष्य च, अस्त्रेण कुशैस्ताडयित्वा कवचेनावगुण्ठ्य, धेनुयोनिमुद्रे प्रदर्श्य ततः ह्रीं ॐ रं वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा, इति मूलाधारोद्गतं सम्विदग्निं ललाट नेत्र द्वारा निर्गमय्य तं वागीश्वरीयोन्यां प्रवेशबुद्ध्या बाह्याग्नौ संयजयेत् ॥

ततः कवचाय हुम् इति मन्त्रेण इन्धनैराच्छाद्य ह्रीं अग्निं प्रज्ज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् । सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम् ॥ इत्युपस्थाय । ह्रीं उतिष्ठ पुरुष हरित पिङ्गल लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय मे देहि दापय स्वाहा, इति वह्निमुत्थाप्य ततः ॐ ह्रीं इति स्थण्डिलोपरि अग्निं त्रिवारं भ्रामयित्वा स्थण्डिले स्थापयेत् । ह्रीं चितिपिङ्गल हन हन दह दह पच पच सर्वज्ञानज्ञापय स्वाहा, इति प्रज्चाल्य ज्वालिनीमुद्रां प्रदर्श्य, (प्राक्तोयं निधाय) वागीश्वरीगर्भे धृतं ध्यात्वा, ह्रीं ऐं नमः अस्य होमाग्नेः गर्भाधानकर्म, पुंसवनकर्म, सीमन्तोन्नयनकर्म, जातकर्म, महागणपत्याग्नि रिति नाम्ना नामकरणकर्मकल्पयामिनमः अन्नप्राशनकर्म, चौलकर्म, उपनयनकर्म, गोदानकर्म, विवाहकर्म कल्पयामि नमः–इति तत्तत्कर्मभावनया अक्षतैरभ्यर्चयेत् ॥

कुण्डस्योत्तरभागे कुशास्तरे स्रुक्स्रुवौ, प्रोक्षणीपात्रे, आज्यस्थाली, चरुस्थाली–परिधित्रयं, समित्पञ्चात्मकमिध्मं लूनमूलसाग्रकुशमुष्टिरिति पात्राण्यधोमुखानि संस्थाप्य, अन्यान्यपि दध्यक्षतादिबलिद्रव्याणि गन्धपुष्पादि पूजाद्रव्याणि च यथायथं संस्थापयाधोमुखानि स्रुक्स्रुवादीनि सपवित्राधोमुखहस्तसेकरूपावेक्षणपूर्वकमुत्तानीकृत्य, प्रणीतापात्रं प्रक्षाल्य स्वपुरतः कुशास्तरे निधाय शुद्धजलैरापूर्य तत्र गन्धाक्षतान् निक्षिप्य, प्रादेशमात्रं साग्रं कुशद्वयं मध्ये ब्रह्मग्रन्थियुतं जलाग्रे उत्तराग्रं पवित्रं निधाय करद्वयानामिकाङ्गुष्ठाभ्यां पवित्रं मूलाग्रे विधृत्यास्त्रमन्त्रमुच्चरन् पवित्रमध्येन जलं पात्राद् बहिस्त्रिवारं भूमौ निक्षिपेत् इत्युत्पवनं विधाय तन्मध्ये किञ्चित् घृतं निक्षिप्य तत्पात्रं कराभ्यामामस्तकमुद्धृत्य कुण्डस्योत्तरभागे

कुशास्तरे निधाय तदुपरि प्रागग्रान् दर्भान् निक्षिपेत्, इति प्रणीता पात्रं संस्थाप्य प्रोक्षणीपात्रं प्रक्षाल्य शुद्धजलैरापूर्य तन्मध्ये प्रणीतापात्रजलं पात्रान्तरेणोद्धृत्य किञ्चिद् दत्त्वा, तेन जलेन मूलमन्त्रेण सर्वाणि पात्राणि होमद्रव्याणि पूजाद्रव्याणि च प्रोक्षयेत्, इति द्रव्यासादनं विधाय ततः प्रोक्षणीय जलेनाग्निं मूलेन परिषिञ्च्य अग्निमलङ्कृत्य प्रागग्रैरुदगग्रैश्च कुशैः परिस्तीर्य त्रिभिः परिधिभिः प्रागवर्ज परिधानं कृत्वा–

त्रिनयमरुणाप्तबद्धमौलिं सुशुक्लां-
शुकमरुणमनेकाकल्पमम्भोजसंस्थम् ।
अभिमतवरशक्तिं स्वस्तिकाभीतिहस्तं
नमतकनकमालालङ्कृतांसं कृशानुम् ॥

शारदातिलके–

वैश्वानरं स्थितं ध्यायेत् समिद्धोमेषु देशिकः ।
शयानमाज्यहोमेषु निषण्णं शेषवस्तुषु ॥

अथ अष्टकोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन–
गं ह्रीं जातवेदसे नमः । ह्रीं सप्तजिह्वाय नमः । गं ह्रीं हव्यवाहनाय नमः । गं ह्रीं अश्वोदराय नमः । गं ह्रीं वैश्वानराय नमः । गं ह्रीं कौमारतेजसे नमः । गं ह्रीं विश्वमुखाय नमः । गं ह्रीं देवमुखाय नमः । इत्यभिपूज्य ॥
षट्कोणे षडङ्गं, यथा–
गं ह्रीं सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः । गं ह्रीं स्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा ।
गं ह्रीं उत्तिष्ठ पुरुषाय शिखायै वषट् । गं ह्रीं धूमव्यापिने कवचाय हुम् ।
गं ह्रीं सप्तजिह्वाय नेत्रयाय वौषट् । गं ह्रीं धनुर्धराय अस्त्राय फट् । इत्यभ्यर्च्य ।

त्रिकोणे गं ह्रीं ऊँ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा, इति मन्त्रेण अग्निं पुष्पाक्षतैरर्चयेत् ।

अथ अग्नेः सप्तजिह्वासु एकैकां आज्याहुतिं कुर्यात् ।

यथा–

यथा–
गं ह्रीं हिरण्यायै नमः स्वाहा–हिरण्याया इदं न मम (ऐशान्यां)
गं ह्रीं कनकायै नमः स्वाहा–कनकाया इदं न मम (प्राच्यां)
गं ह्रीं रक्तायै नमः स्वाहा–रक्ताया इदं न मम (आग्नेय्यां)
गं ह्री कृष्णायै नमः स्वाहा–कृष्णाया इदं न मम (नैर्ऋत्यां)
गं ह्रीं सुप्रभायै नमः स्वाहा–सुप्रभाया इदं न मम (प्रतीच्यां)
गं ह्रीं अतिरक्तायै नमः स्वाहा–अतिरक्ताया इदं न मम (वायव्यां)
गं ह्रीं बहुरूपायै नमः स्वाहा– बहुरूपाया इदं न मम (मध्ये)
ततस्तिस्र आहुतीः जुहुयात् । यथा–
गं ह्रीं वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय-स्वाहा अग्नये इदम् ।
गं ह्रीं उत्तिष्ठपुरुष हरितपिङ्गल लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय मे देहि दापय स्वाहा– अग्नय इदम् ।
गं ह्रीं चिपिङ्गल हन हन दह दह पच पच सर्वाज्ञाज्ञापय स्वाहा– अग्नय इदम् ।

अथ अग्नेर्मध्यभागे स्थितायां दक्षिणोत्तरायतायां बहुरूपाख्यजिह्वायां, गं ह्रीं ह्स्प्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः ॥

महापद्मवनान्तस्थ कारणानन्दविग्रह ।
सर्वभूतपते देव ह्याह्याहि परमेश्वर ॥

इति श्रीदेवमावाह्य उपचारमन्त्रैर्गन्धादीन् पञ्चोपचारानाचर्य पूजाक्रमेण जुहुयात् यथा–गणपतिमूलं महागणपतये स्वाहा (दशकृत्वः)

नामान्ते स्वाहाशब्दः सर्वत्र योज्यः ।

ॐ गां हृदयाय नमः हृदयदेव्यै स्वाहा, श्रीं गीं शिरसे स्वाहा शिरो देव्यै स्वाहा, ह्रीं गूं शिखायै वषट् शिखादेव्यै स्वाहा, क्लीं गैं कवचाय हुम् कवचदेव्यै स्वाहा,
ग्लौं गं नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रदेव्यै स्वाहा, गं गः अस्त्राय फट् अस्त्रदेव्यै स्वाहा ।

दिव्यौघः

गं ह्रीं विनायकसिद्धाचार्याय स्वाहा गं ह्रीं विश्वसिद्धाचार्याय स्वाहा
गं ह्रीं कवीश्वरसिद्धाचार्याय स्वाहा गं ह्रीं ब्रह्मण्यसिद्धाचार्याय स्वाहा
गं ह्रीं विरुपाक्षसिद्धाचार्याय स्वाहा गं ह्रीं निधीशसिद्धाचार्याय स्वाहा

सिद्धौघः

गं ह्रीं गजाधिराजसिद्धाचार्याय स्वाहा गं ह्रीं वरप्रदसिद्धाचार्याय स्वाहा

मानवौघः

गं ह्रीं विजयसिद्धाचार्याय स्वाहा गं ह्रीं सर्वभूतात्मसिद्धाचार्याय स्वाहा
गं ह्रीं दुर्जयसिद्धाचार्याय स्वाहा गं ह्रीं महानन्दसिद्धाचार्याय स्वाहा
गं ह्रीं जयसिद्धाचार्याय स्वाहा गं ह्रीं फालचन्द्रसिद्धाचार्याय स्वाहा
गं ह्रीं दुःखारिसिद्धाचार्याय स्वाहा गं ह्रीं सद्योजातसिद्धाचार्याय स्वाहा
गं ह्रीं सुखावहसिद्धाचार्याय स्वाहा गं ह्रीं बुद्धसिद्धाचार्याय स्वाहा
गं ह्रीं परमात्मसिद्धाचार्याय स्वाहा गं ह्रीं शूरसिद्धाचार्याय स्वाहा

प्रथमावरणम्

गं ह्रीं श्री श्रीपतिभ्यां स्वाहा गं ह्रीं रतिरतिपतिभ्यां स्वाहा
गं ह्रीं गिरिजागिरिजापतिभ्यां स्वाहा गं ह्रीं महीमहीपतिभ्यां स्वाहा

द्वितीयावरणम्

१ गं ह्रीं ऋद्धायामोदाभ्यां स्वाहा ५ गं ह्रीं मदद्रवा अविघ्नाभ्यां स्वाहा
२ गं ह्रीं समृद्धिप्रमोदाभ्यां स्वाहा ६ गं ह्रीं द्राविणी विघ्नकर्तृभ्यां स्वाहा

३ गं ह्रीं कान्तिसुमुखाभ्यां स्वाहा ७ गं ह्रीं वसुधारा शङ्खनिधिभ्यां स्वाहा
४ गं ह्रीं मदनावती दुर्मुखाभ्यां स्वाहा ८ गं ह्रीं वसुमती पद्मनिधिभ्यां स्वाहा

तृतीयावरणम्

गं ह्रीं ॐ गां हृदयशक्तये स्वाहा गं ह्रीं क्लीं गैं कवचशक्तये स्वाहा
गं ह्रीं श्रीं गीं शिरः शक्तये स्वाहा गं ह्रीं ग्लौं गौं नेत्रशक्तये स्वाहा
गं ह्रीं ह्रीं गूं शिखाशक्तये स्वाहा गं ह्रीं गं गः अस्त्र शक्तये स्वाहा

तुरीयावरणम्

गं ह्रीं आं ब्राह्म्यै स्वाहा गं ह्रीं लॄं वाराह्यै स्वाहा
गं ह्रीं ईं माहेश्वर्यै स्वाहा गं ह्रीं ऐं माहेन्द्र्यै स्वाहा
गं ह्रीं ऊं कौमार्यै स्वाहा गं ह्रीं औं चामुण्डायै स्वाहा
गं ह्रीं ॠं वैष्णव्यै स्वाहा गं ह्रीं अः महालक्ष्म्यै स्वाहा

पञ्चमावरणम्

गं ह्रीं ळां इन्द्राय वज्रहस्ताय सुराधिपतये ऐरावत
वाहनाय सपरिवाराय स्वाहा ।
गं ह्रीं रां अग्नये शक्तिहस्ताय तेजोऽधिपतय
अजवाहनाय सपरिवाराय स्वाहा ।
गं ह्रीं टां यमाय दण्डहस्ताय प्रेताधिपतये
महिषवाहनाय सपरिवाराय स्वाहा ।
गं ह्रीं क्षां निर्ऋतये खड्गहस्ताय रक्षोऽधिपतये
नरवाहनाय सपरिवाराय स्वाहा ।

गं ह्रीं वां वरुणाय पाशहस्ताय जलाधिपतये
मकरवाहनाय सपरिवाराय स्वाहा।

यां वायवे ध्वज हस्ताय प्राणाधिपतये रुरु वाहनाय सपरिवाराय स्वाहा

गं ह्रीं सां सोमाय शङ्खहस्ताय नक्षत्राधिपतये
अश्वावाहनाय सपरिवाराय स्वाहा ।

गं ह्रीं हां ईशानाय त्रिशूलहस्ताय विद्याऽधिपतये
वृषभवाहनाय सपरिवाराय स्वाहा ।

अतः परं मूलमन्त्रं यथा संख्यं हुनेत् ।

ततो महाव्याहृति होमः । यथा–

ह्रीं भुरग्नये च पृथिव्यै च महते स्वाहा । अग्नये पृथिव्यै महत इदम् ।

ह्रीं भुवो वायवे चान्तरिक्षाय च महते च स्वाहा । वायव अन्तरिक्षाय महत इदम् ।

ह्रीं स्वरादित्याय च दिवे च महते च स्वाहा आदित्याय दिवे महत इदम् ।

ह्रीं भूर्भुवः स्वश्चन्द्रमसे च नक्षत्रेभ्यश्च दिग्भ्यश्च महते च स्वाहा चन्द्रमसे नक्षत्रेभ्यो महत इदम् । इति चतस्र आहुतीराज्येन हुत्वा ।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुत्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत् कृतं तत् सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा । परब्रह्मण इदम् । इति ब्रह्मार्पणाहुतिं विदध्यात् ॥

अस्मिन् श्रीमहागणपतिहोमकर्मणि मध्ये सम्भावितसमस्तमन्त्रलोपतन्त्रलोप-द्रव्यलोपक्रियालोपाज्यलोप न्यूनातिरेकविस्मृतिविपर्यास प्रायश्चित्तार्थं सर्वप्रायश्चितं होष्यमि । इति सङ्कल्प्य,

ॐ भूर्भुव स्वःस्वाहा । प्रजापतय इदम् । श्रीविष्णवे स्वाहा ।विष्णवे परमात्मन इदम् । नमो रुद्राय पशुपतये स्वाहा । रुद्राय पशुपतय इदम् । आप उपस्पृश्य । सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त

धामप्रियाणि । सप्त होत्रा सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा । अग्नये सप्तवत इदम् ।

आज्यपात्रादीनुत्तरतो निधाय प्राणायामं कृत्वा, अग्निं परिषिञ्चति । अदितेऽन्वमँस्थाः अनुमतेऽन्वमँस्थाः । सरस्वतेऽन्वमँस्थाः । देव सवित प्रासावी ॥

ततः प्रणीतापात्रं स्वस्य पुरत आदाय पूर्णमसि पूर्ण मे भूयाः । सदसि सन्मे भूयाः । सर्वमसि सर्व मे भूयाः ॥ इति, अन्य जलं नीनीय तज्जलं प्रागादि प्रदक्षिणं, प्राच्यां दिशि देवा ऋत्विजो मार्जयन्ताम् । दक्षिणस्यां दिशि माता पितरौ मार्जयन्ताम् । प्रतीच्यां दिशि गृहाः पशवो मार्जयन्ताम् । उदीच्यां दिश्याप ओषधयो वनस्पतयो मार्जयन्ताम् । ऊर्ध्वायां दिशि यज्ञः सम्वत्सरो यज्ञपतिर्मार्जयन्ताम्–इति प्रतिदिशमुत्सृज्य पुरस्तात् निस्राव्य, तेन–ब्राह्मणेष्वमृतं हितं येन देवाः पवित्रेणात्मानं पुनते सदा तेन सहस्रधारेण पावमान्यः पुनन्तु मा । इत्यात्मानं प्रोक्ष्यं, प्रागादिपरिस्तरणमुत्तरे विसृजेत् ।

अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् ।
सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम् ॥

इत्युपस्थाप्य चिदग्नि उपावरोहः जातवेदः पुनस्त्वं देवेभ्यो हव्यं वह नः प्रजानन् । आयुः प्रजाँ रयिमस्मासु धेहि अजस्रो दीदिहि नो दुरोणे ॥ श्रीमहागणपत्यग्निमात्मन्युद्वासयामि नमः । इत्युद्वास्य हृदये अञ्जलिं दद्यात् ।

तद्भूतितिलकम्–

त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् यद्देवेसु त्र्यायुषं तन्नोऽस्तु त्र्यायुषम् । इति त्र्यायुषेण मन्त्रेण धारयेत् ।

श्रीदत्तात्रेयानन्दनाथ विरचितायां महागणपति–
वरिवस्यायां होमप्रकरणं सम्पूर्णम् ।

परिशिष्टम्

अथ महागणपतिमन्त्राः प्रदर्श्यन्ते–श्रीविद्यार्णवोक्ताः ।

अथ वक्ष्ये महादेवि मन्त्रमेकाक्षरं परम् । शार्ङ्गी प्रीतियुतः प्रोक्तो गणेशस्यैकवर्णकः ॥ १ ॥ इति । शार्ङ्गी गकारः । प्रीतिरनुस्वारः । नारायणीये त्वस्य मन्त्रस्य पञ्च भेदा उक्ताः । यथा–"खान्तं सान्तविषं सबिन्दुसकलं विन्द्वौयुतं केवलं पञ्चैतानि पृथक्फलं विदधते बीजानि विघ्नेशितुः" इति । अन्तो विसर्गः, विषं मकारः ताभ्यां सह वर्तमानः खान्तो गकारः, तेन गं गः इति सिद्धं । कला- विसर्गः तद्युक्तोऽन्यस्तेन गंः । बिन्दुश्च औच ताभ्यां युत इत्यपरः । केवलं बिन्द्वादिरहितः । तथा– "गणकः स्यादृषिश्छन्दो निचृद्विघ्नोऽस्य देवता" इति ।

प्रयोगसारे–

आदौ गणञयायोक्त्वा स्वाहा हृदयमुच्यते ।
एकदंष्ट्राय चाभाष्य हुंफट् विद्या-शिरस्तथा ॥ १ ॥
शिखाप्यचलशब्दादिकर्णिने हृत्ततो नमः ।
कवचं गजवक्त्राय नमो नम इतीरितम् ॥ २ ॥

× × × × × ×

महोदराय चण्डाय हुंफडित्यस्त्रमिष्यते ।
एतान्यङ्गानि विन्यसेत् पञ्चाङ्गानि मनीषिभिः ॥ ३ ॥

इति पञ्चाङ्गानि उक्तानि । सारसंग्रहे तु–"षड्दीर्घेण निजेनैव बीजेनाङ्गानि योजयेत्" इत्युक्तं । तदेतयोर्विकल्पः । "सप्रांशुना वा बीजेन षडङ्गानि नियोजयेत्" इति प्रयोगसारवचनात् । एवं सप्रांशुना सदीर्घेण षड् दीर्घयुक्तेनेति यावत् । अत्र यथागुरूपदेशं कार्यमिति ।

प्रयोगसारे–

रक्तो रक्ताङ्गरागांशुककुसुमयुतस्तुन्दिलश्चन्द्रमौलि-
र्नेत्रैर्युक्तस्त्रिभिर्वामनकरचरणो बीजपूरात्तनासः ।
हस्ताग्रक्लृप्तपाशाङ्कुशरदवरदो नागवक्त्रोऽहिभूषो
देवः पद्मासनो वो भवतु नतसुरो भूतये विघ्नराजः ॥ १ ॥

वामाद्यूर्ध्वयोराद्ये तदाद्यधस्तनयोरन्ये, इत्यायुधध्यानम् । सारसंग्रहे–

रक्ताभः शशिमौलिरङ्कुशगुणौ दन्तं वरं धारयन्
हस्ताब्जैर्द्विरदाननस्त्रिनयनो रक्ताङ्गरागावृतः ।
बीजापूरबृहत्करोरुजठरो दानार्द्रगण्डस्थलो
विघ्नेशः[1] फणिभूषणो गणपतिर्भूयाद्भवद्भूतये ॥ १ ॥

अत्र दक्षोर्ध्वादि तदधोन्तमायुधध्यानम् । बृहत्करः शुण्डादण्डः (इति ध्यात्वा गणेशानं मानसैरुपचारकैः पूजयित्वेति शेषः । तीव्रादिशक्तिसंयुक्ते पीठे त्वावाह्य पूजयेत् ।) प्रपञ्चसारे–

तीव्रा ज्वालिनीनन्दे सभोगदा कामरूपिणी चोग्रा
तेजोवती च सत्या संप्रोक्ता विघ्ननाशिनी नवमी ॥ १ ॥
बीजान्ते सर्वशक्ति–प्रोक्त्वा कमलासनाय नम इति च
आसनमन्त्रः प्रोक्तो नवशक्त्यन्ते समर्चयेदमुना ॥ २ ॥

इति । अत्र मण्डूकादिपरतत्वान्ता योगपीठदेवतानां पूजा प्रागेव पूजाप्रकरणे लिखितत्वाद् ग्रन्थगौरवभयाच्चात्र न लिखिता । सारसंग्रहे–

---

1. (तत्रादौ वैदिकानां च गकारः केवलो मतः । दक्षिणानां बिन्दुयुक्तो द्विबिन्दुः पूर्वधर्मिणाम् ॥ एतद्द्वययुतः पश्चादूर्ध्वाम्नायेति गौमिति । ग्लौमुत्तरे गोमिति च पातालाम्नाय ईरितम् ॥ इति भेरुतन्त्रे । १' 'पद्मस्थः' ख. पाठः । ख. पाठः ।

अष्टपत्रं सरोजं तु चतुरस्रत्रयावृतम् ।
चतुर्द्वारसमायुक्तमर्चापीठं विधाय च ॥ १ ॥

तत्रावाह्य गणेशानमर्चयेदुपचारकैः ।
कर्णिकायां तु पूर्वादिचतुर्दिक्षु गणाधिपम् ॥ २ ॥

पीतं गौरं गणेशानं रक्तं च गणनायकम् ।
गणक्रीडं नीलवर्णं केसरेषु ततो यजेत् ॥ ३ ॥

अग्नीशासुरवायव्यमध्ये दिक्षु यथाक्रमम् ।
षडङ्गानि मनोरस्य ध्यातव्याश्चाङ्गदेवताः ॥ ४ ॥

तुषारस्फटिकश्यामनीलकृष्णरुणार्चिषः ।
वरदाभयधारिण्यः प्रधानतनवः स्त्रियः ॥ ५ ॥

वक्रतुण्डादिकानष्टौ वक्ष्यमाणान् दले यजेत् ।
वक्रतुण्डैकदंष्ट्रौ च महोदरगजाननौ ॥ ६ ॥

लम्बोदराख्यविकटौ विघ्नराड्धूम्रवर्णकौ ।
दलाग्रेषु ततः पूज्या ब्राह्म्याद्यास्त्वष्ट मातरः ॥ ७ ॥

ब्राह्मी स्वर्णसमा ध्येया मृगचर्मविभूषिता ।
अक्षमालाभये दण्डकुण्डके दधती करैः ॥ ८ ॥

त्रिशिखं परशुं हस्तैर्डमरुं नृकपालकम् ।
बिभ्राणा चन्द्रगौराङ्गीं माहेशीं भावयेच्छुभाम् ॥ ९ ॥

गुणखट्वाङ्गदण्डाङ्कुशान् वहन्तीं कराम्बुजैः ।
इन्द्रगोपारुणां ध्यायेत् कौमारीं करुणालयाम् ॥ १० ॥

अरिशङ्खकपालानि घण्टां च करपङ्कजैः ।
बिभ्राणां वैष्णवीं ध्यायेन्नीलमेघसमप्रभाम् ॥ ११ ॥

हलं च मुसलं दोर्भिर्दधानां खड्गखेटकौ ।
वाराहीं भावयेच्छक्तिमञ्जनाद्रिसमप्रभाम् ॥ १२ ॥

तोमराङ्कुशवज्राह्वविद्युद्युक्तकराम्बुजाम् ।
इन्द्राणीं भावयेन्मंत्री नीलवर्णां सुभूषणाम् ॥ १३ ॥

धारयन्तीं शूलखड्गौ कपालं नृशिरः करैः ।
चामुण्डां शोणवर्णां च मुण्डमालायुतां स्मरेत् ॥ १४ ॥

स्वर्णाभामक्षमालां च बीजपूरकपालके ।
पद्मं च दधतीं हस्तैर्महालक्ष्मीं स्मरेत् सुधीः ॥ १५ ॥

दक्षाधःकरमारभ्य तदूर्ध्वकरपर्यन्तमायुधध्यानं ब्राह्म्याः । दक्षाद्यधस्तयोराद्ये तदाद्यधः स्थरोराद्ये तदाद्यधःस्थयोराद्ये तदाद्यूर्ध्वस्थयोरन्ये माहेश्याः । कौमार्यास्तु वामोर्ध्वकरमारभ्य दक्षोध्वकरपर्यन्तम्। वैष्णव्यास्तु दक्षोर्ध्वकरमारभ्य दक्षाधःकरपर्यन्तम् । अरिश्चक्रम् । वाराह्यास्तु दक्षाद्यूर्ध्वयोराद्ये तदाद्यधःस्थयोरन्ये । इन्द्राण्यास्तु वामोर्ध्वकरमारभ्य वामाधः करपर्यन्तम् । चामुण्डायास्तु दक्षोर्ध्वाधःकरयोराद्ये वामोर्ध्वाधःकरयोरन्ये । महालक्ष्म्यास्तु दक्षाधःकरमारभ्य दक्षोर्ध्वकरपर्यन्तमायुधध्यानम् । तथा–

चतुरस्रत्रयेऽन्तःस्थवीथीद्वन्द्वे समर्चयेत् ।

दिक्पालांश्च तदस्त्राणि गणेशार्चनमीरितम् ॥ १६ ॥
इन्द्रं सुराधिपं पीतं वज्रहस्तं सवाहनम् ।
अग्निं तेजोधिपं रक्तं शक्तिहस्तं सुभूषितम् ॥ १७ ॥
यमं प्रेताधिपं कृष्णं दण्डहस्तं समर्चयेत् ।
रक्षोधिपं च निर्ऋतिं खड्गहस्तं सुधूम्रकम् ॥ १८ ॥
पाशहस्तं सुशुभ्राङ्गं वरुणं यादसां पतिम् ।
वायुं प्राणाधिपं धूम्रमङ्कुशाढ्यकरं यजेत् ॥ १९ ॥

यक्षाधिपं कुबेरं च मुक्तावर्णं गदाकरम् ।
विद्याधिपं तथैशानं स्वच्छं शूलकरं यजेत् ॥ २० ॥
नागाधिपं तथा रक्तं गौरं चक्रकरं यजेत् ।
लोकाधिपं तथैशानं स्वच्छं शूलंकरं यजेत् ॥ २१ ॥
ऐरावतं तथा मेषं महिषं मृतपूरुषम् ।
मकरं मृगमत्स्यौ च वृषं च विपहंसकौ ॥ २२ ॥
इन्द्रादिलोकपालानां वाहनानि विदुर्बुधाः ।
ततो बहिस्तदस्त्राणि तत्पार्श्वे च समर्चयेत् ॥ २३ ॥
वज्रं पीतं सितां शक्तिं दण्डं कृष्णं समर्चयेत् ।
खड्गमाकाशशंकाशं पाशं विद्युन्निभं यजेत् ॥ २४ ॥
अङ्कुशं रक्तवर्णं च शुक्लवर्णां गदां यजेत् ।
त्रिशूलं नीलवर्णं च यजेत् साधकसत्तमः ॥ २५ ॥
रथाङ्गं कुरुबिन्दाभं पद्मं रक्तं समर्चयेत् ।
लोकपालायुधान्येव कथितानि मनीषिभिः ॥ २६ ॥
य एवं पूजयेद्देवं गणेशं भक्तिसंयुतः ।
इह भुक्त्वाखिलान् भोगानन्ते शिवपदं व्रजेत् ॥ २७ ॥

इति ॥ अथ प्रयोगः–तत्र प्रातःकृत्यादियोगपीठन्यासान्ते गणेशमन्त्रेण प्राणायामत्रयं कृत्वा, शिरसि गणकाय ऋषये नमः । मुखे निचृत्छन्दसे नमः । हृदये श्रीविघ्नेश्वराय देवतायै नमः । इति विन्यस्य मम सर्वाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः । इति कृताञ्जलिरुक्त्वा मूलमन्त्रेण करशुद्धिं कृत्वा, अङ्गुष्ठयोः गणञ्जयाय स्वाहा, हृदयाय नमः । तर्जन्योः एकदंष्ट्राय हुंफट्, शिरसे स्वाहा । मध्यमयोः अचलकर्णिने नमोनमः, शिखायै वषट् । अनामिकयोः गजवक्त्राय नमोनमः, कवचाय हुं । कनिष्ठिकयोः महोदराय चण्डाय हुंफट् अस्त्राय फट् । इति मन्त्रानङ्गुष्ठादिकनिष्ठान्तं करयोर्विन्यस्य,

नेत्रवर्जं हृदयादिपञ्चाङ्गेष्वपिन्यसेत् । अथवा गांगीं इत्यादिना करषडङ्गन्यासं कृत्वा ध्यानाद्यात्मपूजान्तं प्रोक्तविधिना कृत्वा, **एकदंष्ट्राय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो विघ्नः प्रचोदयात्** । इति गणेशगायत्र्या गणेशपूजाद्रव्याणि पूजास्थानं च प्रोक्ष्य, देवताग्रं पूर्वं परिकल्प्य तदनुसारेण प्राप्तनिर्ऋतिकोणे श्रीपर्ण्यादिपीठे कुङ्कुमादिना चतुर्द्वारयुक्तचतुरस्रत्रयवेष्टितमष्टदलकमलं पूजायन्त्रं निर्माय, तत्र प्रागुक्तविधिना मण्डूकादिपृथिव्यन्तं संपूज्य, रत्न द्वीपादिपरतत्त्वा- र्चान्तेऽष्टकेसरेषु स्वाग्रान्मध्यान्तंलड ओंतीव्रायै नमः । ज्वालिन्यै. । नन्दायै. । भोगदायै. कामरूपिणयै. । उग्रायै. तेजोवत्यै. । सत्यायै. । विघ्ननाशिन्यै नमः । इति संपूज्य, गं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः, इति समस्तं पीठमभ्यर्च्य, तत्र मूल-मन्त्रमुच्चार्य श्रीगणेशमूर्तिं परिकल्पयामि नमः इति चक्रमध्ये मूर्तिं परिकल्प्य, मूर्त्यभावे पुष्पादिकं निक्षिप्य ध्यानोक्तं मूर्तिं भावयन् मूलमुच्चार्य 'श्रीगणपतिमूर्तये नमः' इति मूर्तिं संपूज्य, तस्यां प्रागुक्तविधिना गणेशमावाह्यावाहनादिमुद्राः प्रदर्श्य प्राणप्रतिष्ठान्ते दन्तपाशाङ्कुशविघ्नपरशुलड्डुकबीजापूराख्याः सप्त मुद्राः प्रदर्श्य, आसनादिपुष्पान्ता ( ) नुपचारानुपचर्य्य, कर्णिकायां देवाग्रादिचतुर्दिक्षु–ओंगणाधिपाय नमः । गणेशानाय. । गणनायकाय. । गणक्रीडाय नमः । इति संपूज्य, अष्टदलकेसरेषु–आग्नेये ओंगणञ्जयाय स्वाहा हृदयाय नमः । ईशाने ओंएकदंष्ट्राय हुफट् शिरसे स्वाहा. । नैर्ऋते ओंअचलकर्णिने नमोनमः शिखायै वषट्. वायव्ये गजवक्त्राय नमोनमः कवचाय हुं । ततो देवाग्रादि चतुर्दिक्षु–ओंमहोदराय चण्डाय हुंफंट् अस्त्राय फट् नमः । यद्वा, पूर्वोक्तस्थानेष्वेव–गां हृदयाय नमः । गीं शिरसे स्वाहा इत्यादिषडङ्गानि पूजयेत् । अत्र षडङ्गपक्षे तु देवस्याग्रे गौं नेत्रत्रयाय वौषट् । इति नेत्रं संपूज्य पश्चादस्त्रं पूजये दिति शेषः ।

ततोऽष्टदलेषु देवाग्रदलमारभ्य–ओंवक्रतुण्डाय नमः । एकदंष्ट्राय. । महोदराय. । गजाननाय. । लम्बोदराय. । विकटाय. । विघ्नराजाय. । धूम्रवर्णाय नमः । इति प्रादक्षिण्येन संपूज्य, दलाग्रेषु–आं ब्राह्म्यै नमः ।

ई माहेश्वर्य्यै. कौमार्यै । ॠं वैष्णव्यै. । लृ वाराह्यै । ऐं इन्द्राण्यै. । औं चामुण्डायै. । अः महालक्ष्म्यै. नमः । उों रं अग्नये तेजोधिपतये रक्तवर्णाय शक्तिहस्ताय मेषवाहनाय नमः । उों टं यमाय प्रेताधिपतये कृष्णवर्णाय दण्डहस्ताय महिषवाहनाय नमः । उों क्षं निर्ऋतये रक्षोधिपतये धूम्रवर्णाय खड्गहस्ताय प्रेतवाहनाय नमः । उों वं वरुणाय जलाधिपतये शुक्लवर्णाय पाशहस्ताय मकरवाहनाय नमः । उों यं वायवे प्राणाधिपतये कृष्णवर्णायाङ्कुशहस्ताय मृगवाहनाय नमः । उों सं कुबेराय यक्षाधिपतये मौक्तिकवर्णाय गदाहस्ताय नरवाहनाय नमः । उों [1]हौं ईशानाय विद्याधिपतये स्फटिकवर्णाय शूलहस्ताय वृषवाहनाय नमः । इति संपूज्य, इन्द्रेशानयोर्मध्ये उों आं ब्रह्मणे लोकाधिपतये रक्तवर्णाय पद्महस्ताय हंसवाहनाय नमः । निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये उों ह्रीं अनन्ताय नागाधिपतये गौरवर्णाय चक्रहस्ताय गरुडवाहनाय नमः । इति संपूज्य, द्वितीयवीथ्यां–उों वज्राय नमः । शक्तये. । दण्डाय. । खड्गाय. । पाशाय. । अङ्कुशाय. । गदायै. । त्रिशूलाय. । पद्माय. । चक्राय नमः । इति लोकपालायुधानि देवाग्रमारभ्य प्रादक्षिण्येन संपूज्य, मूलमुच्चार्य साङ्गाय सपरिवाराय श्रीगणपतये नमः, इति त्रिःपुष्पाञ्जलिना संपूज्य धूपदीपादि पूर्वोक्तविधिना सर्वं कुर्यादिति ॥ सारसंग्रहे–

एकलक्षं मनुं जप्त्वा जुहुयात् तद्दशांशतः ।
अष्टद्रव्यैर्महेशानि तर्पणादि ततश्चरेत् ॥ १ ॥

मोदकैः पृथुकै[2]र्लाजैः सक्तुभिः सेक्षुपर्वभिः ।
नारिकेलैस्तिलैः शुद्धैः सुपक्वैः कदलीफलैः ॥ २ ॥

1. 'हुं' ख, पाठः ।
2. 'वटके' क. ग. पाठ. पाठः ३

इति । अत्रैकेकद्रव्येण सार्धद्वादशशतं जुहुयात् । उक्तं च गणेश्वरपरामर्शिन्याम्–"अष्टद्रव्यैस्त्रिमध्वक्तैर्जुहुयाच्च पृथक्पृथक्" । इति । अत्र जपः कृतयुगपरः । कलावेतच्चतुर्गुणं जपहोमादिकं कार्यमिति । तथा सारसंग्रहे–

दौग्धान्नेन घृताक्तेन होमोऽभीष्टफलप्रदः ।
लक्ष्मीकामो नारिकेलैश्चतुर्थ्यां जुहूयाच्छिवे ॥ ३ ॥
तिललाजान्वितैः सक्तुनारिकेलैश्चतुःशतम् ।
सितपक्षादिमारभ्य प्रत्यहं च हुनेत् क्रमात् ॥ ४ ॥
चतुर्थ्यन्तं ततः सर्वे प्राणिनो वशगा नृणाम् ।
तिलैस्सतण्डुलसंसिक्तै[1] र्होमः श्रीवश्यकीर्तिदः ॥ ५ ॥
स्वादुत्रययुतैर्लाजैर्हुनेत् सप्तदिनावधि ।
कन्यार्थी लभते कन्यां वरं कान्तं वरार्थिनी ॥ ६ ॥
दधिसंसिक्तलवणैच्च। जुहुयाच्च चतुर्दिनम् ।
निशीथिन्यां च सर्वे[2]षां भवेद्वश्यं तथेप्सितम् ॥ ७ ॥

इति । अत्र सर्वत्र काम्यहोमेषु संख्यानुक्तौ कार्यस्य गुरुलाघवं ज्ञात्वा च सहस्रादिनियुतपर्यन्तं कार्यानुसारेण जुहुयात् । उक्तं च कुलार्णवे–

एकेन वाथ सर्वैर्वा तत्कार्यगुरुलाघवम् ।
ज्ञात्वा देवि सहस्रं वा त्रिसहस्रं तु पञ्च वा ॥ १ ॥
अयुतं नियुतं वापि प्रयुतं वा कुलेश्वरि ।
तत्तत्कर्मोदिते कुण्डे संस्कृते हव्यवाहने ॥ २ ॥

---

1. ''संयुक्तैः' ख, पाठः ।
2. ''संवादः' ख, पाठः ।

सितार्कद्रुममूलेन कुचन्दनसुदारुभिः ।
गजत्रोत्राटितनिम्बेन विषाणेनैव दन्तिनाम् ॥ ३ ॥

विधाय विघ्नं संपूज्य तं स्पृष्ट्वा प्रजपेन्मनुम् ।
उपोषितः शुचिश्चन्द्रग्रहे तं च समुद्धरेत् ॥ ४ ॥

शिखायां व्यवहारादौ समरे विजयो भवेत् ।
रोचना समदानेन सञ्जप्त्वा मनुना ततः ॥ ५ ॥

समदा गजमदसहिता ।

तिलकात् सर्वराजानो लोकाः स्युर्वशगाः प्रिये ।
नवनीते नवे साध्यनामालिख्यानुलोम[1]गे ॥ ६ ॥
विलोमे विघ्नबीजे च तद्धृतं स्थापितानिलम् ।
अष्टोत्तरशतं जप्त्वा तूष्णीं तद्भक्षयेत् ततः ॥ ७ ॥
सप्ताहाद्वशगः साध्यः साधकस्य भवेद् ध्रुवम् ।
गणेशं तर्पयेत् तोयैः संख्यया वक्ष्यमाणया ॥ ८ ॥
एकोनपञ्चाशता च दिनैरिष्टमवाप्नुयात् ।
प्रणवादिममुं मन्त्रं केचिदिच्छन्ति सूरयः ॥ ९ ॥
पूजायां च हृदन्तोऽयं होमे स्वाहान्त ईरितः ।

इति । तथा सारसंग्रहे–मन्त्रान्तरम् ।

स्मृतिर्भूमनुयुग्बिन्दुनादालङ्कृतमस्तकः ।
एकाक्षरो गणेशस्य मन्त्र एष उदाहृतः ॥ १ ॥

इति । स्मृतिर्गकारः,. भूर्लकारः, मनुरौकरः, बिन्दुनादेन युतस्तेन ग्लौं इति । तथा–

---

1. 'गम् विलोमं विघ्नबीजं च' ख, पाठ । २ 'मिमं' ख. पाठः ।

शार्ङ्गी चतुर्दशार्णाद्यस्वरयुग् बिन्दुभूषितः ।
अयमेको गणपतेरेकार्णो मन्त्र उत्तमः ॥ १ ॥

इति । शार्ङ्गी गकारः, चतुर्दशाद्यस्वर ओकारः, बिन्दुरनुस्वारस्तेन गों इति ॥ तथा–

गणको मुनिरुक्तः स्यान्निचृच्छन्दश्च देवता ।
बालो गणपतिः सर्वसुरासुरनमस्कृतः ॥ १२ ॥
स्वेन षड्दीर्घयुक्तेन षडङ्गानि प्रकल्पयेत् ।

अत्राद्ये ग्लांग्लीं इत्यादि, द्वितीये गांगीं इत्यादि करषडङ्गन्यासो ज्ञेयः ॥ तथा–

ध्यानपूजाजपाद्यं स्यादस्य पूर्ववदेव तु ।
ततः सिद्धे मनौ सम्यक् पूर्वमन्त्रोदितान् प्रिये ॥ ३ ॥
प्रयोगान् विधिवत् कुर्यात् साधकोऽभीष्टसिद्धये ।

इति ॥ इत्थमेकाक्षरः सप्तविधः । काम्यहोममाह–दौग्धान्नेनेति, तिललाजेत्यादि-श्लोकस्यायमर्थः–शुक्लप्रतिपदमारभ्य तच्चतुर्थ्यन्तेषु चतुर्षु दिनेषु प्रत्यहं प्रथमतस्तिलैरेकशतं, तदनु लाजैस्तदनु सक्तुभिस्तदनु नारिकेलैस्त्रिमध्वक्तैः क्रमाच्चतुःशतं जुहुयात् इति । नवनीत इत्यादि, नवे नवनीते परस्परविमुखगणेशबीजद्वयस्य मध्ये तद्बीजद्वयबिन्दुस्थाने मम, बीजाधः अमुकं, तयोर्मध्ये वशं कुरु कुरु, इति साध्यसाधककर्माणि विलिख्य, तत्सर्वं गणेशबीजैरावेष्ट्य, तत्र साध्यप्राणस्थापनं विधायाष्टोत्तरशतं मूलमन्त्रं नवनीतं स्पृशञ्जपित्वा पश्चात् तद्भक्षयेत् । इत्थं सप्ताहप्रयोगेण साध्यो वश्यो भवति ॥ सारसंग्रहे–मन्त्रान्तरम् ।

विरिशब्दद्वयं प्रोच्य वदेद्गणपतिं ततः ।
वरेति च समुच्चार्य वरदेति वदेत् पुनः ॥ १ ॥

सर्वलोकद्वितीयान्तमन्ते वशमथोच्चरेत् ।
आनयाग्निवधूरन्ते मायाद्यं च समुद्धरेत् ॥ २ ॥
विरिविघ्नेशमन्त्रोऽयं षड्विंशत्यक्षरो भवेत्

इति । विरिशब्दद्वयं विरिविरि इति । गणपतिमिति लेखनं कर्मणि द्वितीया तेन गणपतिमति । द्वितीयान्तेन सर्वलोकमिति । अग्निवधूः स्वाहा । मायाद्यं भुवनेश्वरीबीजाद्यं । केचित्त्वेनं मन्त्रमेकोनविंशत्यक्षरात्मकं वदन्ति । तन्मते 'वरवरद' इति पञ्चवर्णा लोकमिति वर्णद्वयं इति सप्तवर्णा न भवन्ति ॥ उक्तं च गणेश्वरपरामर्शिन्याम्–

"वकाररेफावपि लोचनाढ्यौ पुनस्तथोद्धृत्य गणात्पतीति ।
सर्वं समुच्चार्य च मे वशं स्यान्माकारतश्चापि तथानयेति ॥ १ ॥

शब्दः शिरः स्यात्" इति । अस्यार्थः–वकाररेफौ लोचनाढ्यौ प्रत्येकमिकारयुक्तौ, पुनरेतौ वर्णावुद्धृत्य तेन विरिविरि इति । गणात्पति गणपति सर्वं मे वशमानय, शिरः स्वाहाकारः । मायाद्यश्च पूर्वोद्धृतमन्त्रस्यैव मन्त्रान्तरत्वेनोक्तत्वात् । अन्ये तु–वैपरीत्येनादौ महागणपतिमन्त्रस्य बीजषट्कं योजयित्वा षड्विंशत्यक्षरस्य द्वात्रिंशदक्षरत्वं वदन्ति । बीजषट्कं तन्मन्त्रोद्धारप्रकरणे वक्ष्यते, वैपरीत्यं तु तत्रोक्तक्रमस्य । निचृच्छन्दः ।

वेदवेदेषुपञ्चार्णैः शरलोचनसंख्यकैः ।
विभक्तैर्मूलमन्त्रार्णैः षडङ्गानि मनोरथ ॥ ३ ॥
मायाद्यानि विधेयानि । जातियुक्तानि मन्त्रिणा ।

वेदाश्चत्वारः । इषवः पञ्च । शराः पञ्च । लोचनं द्वयं । मायाद्यानीति प्रत्येकं मायाबीजयुक्तानि । जातयो नमः स्वाहावषट् इत्यादयः । एतल्लक्षणमुक्तं प्रागेव । द्वितीयमन्त्रस्य तु मन्त्रपदैः षड्भिः षडङ्गानि ।

सिन्दूराभमिभाननं त्रिनयनं हस्तेषु पाशाङ्कुशौ
बिभ्राणं मधुमत्कपालमनिशं सार्धेन्दुमौलिं भजे ।

× × × × ×

पुष्ट्या श्लिष्टतनुं ध्वजाग्रकरया पद्मोल्लसद्धस्तया
तद्योन्याहितपाणिमात्तवसुमत्पात्रोल्लसत्पुष्करम् ॥ ४ ॥

वामदक्षोर्ध्वकरयोर्वामाधःकरे च पाशादित्रयं दक्षाधःकरं देव्या वराङ्गे, वामाङ्गनिविष्टया देव्या दक्षिणकरेण प्रियाश्लेषः । वामाधःकरेण ध्वजाग्रं स्पृशन्त्या, वामदक्षिणयोः पद्ममित्यायुधध्यानम् । पुष्करं शुण्डादण्डः । द्वितीयेऽपि मन्त्रे इदमेव ध्यानम् । तृतीये तु–

बीजपूरगदे शरासनपरिं मालां च वामैः करै-
र्दक्षैरुत्पढलपाशमार्गणरदान् रत्नाढ्यकुम्भं दधत् ।
सिन्दूरारुणविग्रहस्त्रिनयनो योन्यात्तशुण्डो गण-
स्तल्लिङ्गाहितपाणिमम्बुजकरां पुष्टिं वहन् वोऽवतात् ॥ ५ ॥

अत्र वामाधःकरादिदक्षाध-करादिषु चायुधध्यानम् । कुम्भस्य सर्वोर्ध्वकरे युक्तत्वात् । तथा–

यजेत् पीठे पुरा प्रोक्ते नवशक्तिसमन्विते ।
मूलमन्त्रेण क्लृप्तायां मूर्तावावाह्य पूजयेत् ॥ ६ ॥

मिथुनानि यजेदादावामोदादीन् दिगम्बरान् ।
अङ्गानि पूजयेत् पश्चान्मातृश्चैव ततः सुधीः ॥ ७ ॥

अर्चयेल्लोकपालांश्च तदस्त्राणि ततो बहिः ।
षडावरणसंयुक्तं विरिविघ्नेश्वरं यजेत् ॥ ८ ॥

इति ॥ अथ प्रयोगः- तत्र प्राग्वद्योगपीठन्यासान्ते मूलमन्त्रेण प्राणायामत्रयं कृत्वा, शिरसि गणकाय ऋषये नमः । मुखे गायत्रीच्छन्दसे नमः । हृदि विरिविघ्नेश्वराय देवतायै नमः । विन्यस्येष्टसिद्धये विनियोगः, इति कृताञ्जलिरुक्त्वा, चतुर्भिर्हृदयं, चतुर्भिः शिरः पञ्चभिः शिखा पञ्चभिः, कवचं, पञ्चभिर्नेत्रं, द्वभ्यामस्त्रमिति विभक्तैर्मन्त्रवर्णैः षडङ्गानि विन्यस्य, ध्यानादिपुष्पोपचारान्ते ततस्त्रिकोणे वक्ष्यमाणमहागणपति- पूजोक्तमिथुनत्रयं षट्कोणेष्वामोदादिषटकं अष्टदलकेसरेष्वङ्गषट्कं दलेषु लोकेशांस्त-दस्त्राणि चतुरस्रवीथीद्वये संपूज्य प्राग्वत् शेषं समापयेदिति ॥ तथा–

वेदलक्षं जपेन्मन्त्रं जुहुयात् तद्दशांशतः ।
मधुरत्रयसंयुक्तैर्द्रव्यैरष्टभिरीरितैः ॥ ९ ॥

एवं साधितमन्त्रस्तु प्रयोगान् कर्तुमर्हति ।
विकचोत्पलहोमेन वशयेत् सकलं जगत् ॥ १० ॥

तिलतण्डुलहोमेन श्रियमाप्नोत्यनिन्दिताम् ।
मोदकानाज्यसंयुक्तान् हुत्वा विजयमाप्नुयात् ॥ ११ ॥

मधुरत्रयहोमेन राजानं वशमाप्नुयात् ।
अभीष्टसाधनो होमो भक्ष्यभोज्यादिभिः कृतः ॥ १२ ॥

इति ॥ सारसंग्रहे–मन्त्रान्तरम्

वदेत् सौम्यं चतुर्थ्यन्तं महागणपतिं तथा ।
वरान्ते वरदं प्रोक्त्वा वदेत् सर्वजनं ततः ॥ १ ॥

मे वशं च समाभाष्य वदेदानय ठद्वयम् ।
लक्ष्मीगणेशबीजाढ्य एकोनत्रिंशदक्षरः ॥ २ ॥

लक्ष्मीगणेशमन्त्रोऽयं सर्वसंपत्प्रदायकः ।

चतुर्थ्यन्तं महागणपतिं महागणपतये इति । ठद्वयं स्वाहाकारः । लक्ष्मीबीजं श्रीं । गणेशबीजं गं । एतदाढ्यः । तथा–

अन्तर्यामी मुनिः प्रोक्तो गायत्री निचृदन्विता
छन्दो -लक्ष्मीगणेशोऽत्र देवता समुदाहृतः ॥ ३ ॥

षड्दीर्घयुक्तेनाद्येन द्वितीयेन च तद्वता ।
षडङ्गानि विधेयानि जातियुक्तानि मन्त्रिणा ॥ ४ ॥

हेमाभः पीतवस्त्रः करतलकमलैः संदधच्चक्रशङ्खौ
दन्ताभीती च नासाधृतकनकघटः पद्मसंस्थस्त्रिनेत्रः ।

वामाङ्गाविष्टलक्ष्म्या विधृतकमलया प्रोल्लसद्दक्षदोष्णा
श्लिष्टः सौवर्णकान्त्या गणप इह महाश्रीकरो वः श्रियेऽस्तु ॥५॥

दक्षोर्ध्वकरमारभ्य दक्षाधःकरपर्यन्तमायुधध्यानम् । नासा शुण्डादण्डः । तथा–

प्राक्प्रोक्ते पूजयेत् पीठे तीव्रादिनवशक्तिके ।
अष्टपत्राम्बुजद्वन्द्वे कर्णिकाकेसरोज्ज्वले ॥ ६ ॥

चतुर्द्वारसमायुक्तचतुरस्रत्रयावृते ।
मूलेन मुर्तिं सङ्कल्प्य तस्यामावाह्य पूजयेत् ॥ ७ ॥

प्रथमावृतिरङ्गैः स्याद् वक्रतुण्डादिभिः परा ।
अणिमा महिमा चैव लघिमा गरिमा तथा ॥ ८ ॥

ईशित्वं च वशित्वं च प्रकाम्यं प्राप्तिरेव च ।
एताः समर्चयेत् सम्यक् तृतीयावरणे क्रमात् ॥ ९ ॥

ततस्तु मातरः पूज्या लोकेशास्तदनन्तरम् ।
तदायुधानि तद्वच्च भक्तियुक्तः समर्चयेत् ॥ १० ॥

इति ॥ अथ प्रयोगः–तत्र प्रातरुत्थानादियोगपीठन्यासान्ते मूलेन प्राणायामत्रयं कृत्वा, शिरसि अन्तर्यामिऋषये नमः । मुखे निचृद्गायत्रीछन्दसे नमः । हृदये श्रीलक्ष्मीगणेशाय देवतायै नमः । इति विन्यस्य, प्राग्वद्विनियोगमुक्त्वा, श्रांगां हृदयाय नमः । श्रींगीं शिरसे स्वाहा । श्रूंगूं शिखायै वषट् । श्रैंगैं कवचाय हुं । श्रौंगौं नेत्रत्रयाय वौषट् । श्रः गः अस्त्राय फट् । इति करषडङ्गन्यासं विधाय ध्यानादिमानसपूजान्ते प्रोक्तमर्चापीठमुद्घृत्यार्घ्यस्थापनादिपुष्पोपचारान्ते प्रथमाष्टदलकेसरेषु प्राग्वत् षडङ्गानि संपूज्य, दलाष्टके एकाक्षरपूजोक्तान् वक्रतुण्डादिकान् संपूज्य, द्वितीयाष्टदलेषु देवाग्रदलमारभ्य ओं अणिमासिद्ध्यै नमः । इति प्रादक्षिणयेन संपूज्य, दलाग्रेषु ब्राह्म्यादिकाः प्राग्वत् संपूज्य, चतुरस्रवीथीद्वये लोकपालांस्तदायुधानि ।

च संपूज्य धूपदीपादि सर्वं पूर्ववत् समापयेत् इति । तथा–

लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं दीक्षितो विजितेन्द्रियः ।
दशांशं जुहुयाद्बिल्वसमिधो मधुरप्लुताः ॥ ११ ॥
(तर्पणादि ततः कुर्यात् पूर्वोक्तविधिना प्रिये ।
एवं सिद्धमनुर्मन्त्री साधयेदिष्टमात्मनः ॥ १२ ॥
हुनेच्चतुःसहस्राणि श्रीफलैर्मधुरप्लुतैः ।)
महालक्ष्मीकरो होमः पुत्रमित्रकलत्रदः ॥ १३ ॥
शुद्धतोयेन सन्तर्प्य चत्वारिंशच्चतुःशतम् ।
चत्वारिंशद्दिनान्मन्त्री वाञ्छितां लभते श्रियम् ॥ १४ ॥

इति ॥ सारसंग्रहे–मन्त्रान्तरम्

बिन्दुवामाक्ष्यग्नियुता स्मृतिमार्यासुमध्यगा ।
त्र्यक्षरः शक्तिगणपः सर्वसिद्धिप्रदायकः ॥ १ ॥

स्मृतिर्गकारः । अग्नी रेफः । वामाक्षि ईकारः । बिन्दुरनुस्वारः । एतैः पिण्डितं बीजं मायासुमध्यगा मायाबीजद्वयस्य मध्ये कुर्यात् । तथा–

भार्गवोऽस्य मुनिश्छन्दो विराड् देवः समीरितः ।
शक्त्यादिगणपस्तत्र देवदानववन्दितः ॥ २ ॥
षड्दीर्घभाजा बीजेन षडङ्गानि प्रकल्पयेत् ।
गजेन्द्रवदनं साक्षाच्चलत्कर्णसुचामरम् ॥ ३ ॥
हेमवर्णं चतुर्बाहुं पाशाङ्कुशधरं विभुम् ।
स्वदन्तं दक्षिणे हस्ते बीजापुरं च वामके ॥ ४ ॥
पुष्करे मोदकांश्चैव धारयन्तमनुस्मरेत् ।

वाभोर्ध्वकरमारभ्य वामाधःकरपर्यन्तआयुधध्यानम् ।

पूर्वोक्ते पूजयेत् पीठे तीव्रादिनवशक्तिके ।
अष्टपत्राम्बुजे देवं चतुरस्रत्रयावृते ॥ ५ ॥
प्रथमाङ्गावृतिः प्रोक्ता द्वितीया मातृभिः स्मृता ।
तृतीया लोकपालैः स्याद्वज्राद्यैश्च चतुर्थ्यपि ॥ ६ ॥

(इति ॥ अथ प्रयोगः– तत्र प्राग्वद्योगपीठन्यासान्ते मूलेन प्राणायामत्रयं कृत्वा, शिरसि भार्गवाय ऋषये नमः । मुखे विराट्छन्दसे नमः । हृदये श्रीशक्तिगणपतये देवतायै नमः । इति विन्यस्य, ग्रांग्रीमित्यादिना करषडङ्गन्यासं विधाय, ध्यानादिमानसपूजान्ते पूजाचक्रमुद्धृत्यार्घ्यादिपुष्पोपचारान्ते केसरेषु षडङ्गानि दलेषु मातृ चतुरश्रे लोकेशान् तदायुधानि च प्राग्वत् संपूज्य शेषं प्राग्वत् समापयेदिति । तथा–

लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं हविष्याशी जितेन्द्रियः ।
तद्दशांशं प्रजुहुयादपूपैर्घृतसंप्लुतैः ॥ ७ ॥
एवं सिद्धमनुर्मन्त्री काम्यकर्माणि साधयेत् ।

अत्रापि कलौ चतुर्गणजपादिकं कार्यमिति ।

शुक्लपक्षे चतुर्थ्यां तु पूजयित्वा विनायकम् ।
अपूपैर्गुडसंमिश्रैः पक्वान्नैर्घृतसंप्लुतैः ॥ ८ ॥
मरिचैर्जीरकैश्चैव सैन्धवेन विमिश्रितैः ।
देवस्य सन्निधौ मन्त्री जुहुयात् त्रिसहस्रकम् ॥ ९ ॥
गद्यपद्यमयी वाणी सप्ताहाद्भवति ध्रुवम् ।
वश्यार्थे मधुहोमेन राजानं वशमानयेत् ॥ १० ॥
कन्यार्थी जुहुयाल्लाजैस्तन्नामपुटमन्त्रतः ।
एकां कन्यामथो सप्तधा जपेल्लभते वधूम् ॥ ११ ॥
चन्द्रसूर्यग्रहे प्राप्ते पलं तु कपिलाघृतम् ।
कर्षमात्रं वचाचूर्णं मिश्रीकृत्याभिमन्त्रयेत् ॥ १२ ॥
पिबेत्तदानीं यो भूत्वा देवताध्यानतत्परः ।
यावत्पानं भवेत्तावत् नाश्नीयात् किमपीह सः ॥ १३ ॥
सप्ताहाज्जायते शीघ्रमपरो वाक्पतिर्यथा ।
वन्ध्यर्तुस्नानदिवसे पूजयित्वा विनायकम् ॥ १४ ॥
निष्कार्धपादभागेन हरिद्रां सैन्धवं वचाम् ।
गोमूत्रकुडवे पिष्टं सहस्रमभिमन्त्रितम् ॥ १५ ॥

बध्वा कन्यां भक्ष्यभोज्यैर्भोजयित्वा च तत्क्रमात् ।
गुरवे दक्षिणां दत्त्वा पिबेन्नारी तदौषधम् ॥ १६ ॥
ततः सा लभते पुत्रं सर्वलक्षणसंयुतम् ।
आयुष्मन्तं सुरूपं च बुद्धिमन्तं श्रिया युतम् ॥ १७ ॥

इति । सूर्यचन्द्रग्रहे इत्यादिना एतदुक्तं भवति । चन्द्रग्रहे सूर्यग्रहे वा कर्षमात्रमतिश्लक्ष्णं वचाचूर्णं पलमात्रेण कपिलागोधृतेन मिश्रीकृत्य मूलमन्त्रेणाष्टोत्तरसहस्रवारमभिमन्त्र्य तत्सप्तधा विभज्यैकं भागं देवताध्यानपूर्वकं तदानीं पिबेत् । उर्वरितं भागषट्कं प्रत्यहमेकैकभागं प्रतिप्रातर्देवताध्यानपूर्वकं दिनषट्कं पिबेत् । एवं कृते प्रोक्ता सिद्धिर्भवति । बध्वा इत्यादिना एतदुक्तं भवति । निष्कमात्रं हरिद्रा निष्कार्धं सैन्धवं, निष्कचतुर्थांशं वचाचूर्णमेतत्त्रयं पेषितं श्लक्ष्णेन कुडवमात्रेण गोमूत्रेण प्रोक्तसंख्यया मिश्रीकृत्य प्रोक्तविधिना पीतं प्रोक्तफलदं भवति ॥ तथा सारसंग्रहे–

ताराद्यः पूर्वमन्त्रोऽसौ चतुर्वर्णः प्रकीर्तितः ।
ऋषि शुक्रो निगदितश्छन्दो गायत्रमुच्यते ॥ १ ॥
देवता शक्तिगणपः सर्वसिद्धिकरः परः ।
पूर्ववच्च षडङ्गानि कुर्याद् देशिकसत्तमः ॥ २ ॥

असौ पूर्वः शक्तिगणपतिमन्त्रश्चेत् प्रणवपूर्वस्तदा चतुर्वर्णो मन्त्रो भवति ।

हेमाभं दिव्यवस्त्रं बृहदुदरतनुं चारुबाहुं त्रिनेत्रं
दोर्भिः पाशाक्षसूत्रे निजरदनसृणी मोदकं पुष्करेण ।
बिभ्राणां हेमभूषं तरुणतरणिरुक्चारुशक्त्या समेतं
विघ्नेशं विश्ववन्द्यं त्रिभुवनशरणं चिन्तये श्रीगणेशम् ॥ ३ ॥

दक्षोर्ध्वकरमारभ्य वामोर्ध्वकरपर्यन्तमायुधध्यानम् । तथा–

ततः पूर्वोदिते पीठे देवमावाह्य पूजयेत् ।
प्रथमावृतिरङ्गैः स्याद् वक्रतुण्डादिभिः परा ॥ ४ ॥
तृतीया मातृभिः प्रोक्ता लोकपालैस्ततो बहिः ।
तदायुधैः पञ्चमी स्यादेवं संपूजयेत् क्रमात् ॥ ५ ॥

इति ।। अथ प्रयोग--तत्र प्राग्वद्योगपीठन्यासान्ते मूलेन प्राणायामत्रयं कृत्वा, शिरसि शुक्राय ऋषये नमः । मुखे गायत्रीच्छन्दसे नमः । हृदि श्रीशक्तिगणपतये देवतायै नमः । इति विन्यस्य, ग्रांग्रीं इत्यादिना करषडङ्गन्यासं विधाय, ध्यानादिमानसपूजान्ते प्रोक्तत्र्यक्षरमन्त्रवत् पूजाचक्रमुद्धृत्यार्घ्यादिपुष्पोपचारान्ते केसरेषु षडङ्गानि दलेषु वक्रतुण्डादीन् दलाग्रेषु मातॄश्चतुरस्रे लोकपालांस्तदायुधानि च संपूज्य प्राग्वच्छेषं समापयेदिति । कलावेष एव जपो ज्ञेयः ।। तथा–

लक्षत्रयं जपेन्मत्रं तद्दशांशं समाहितः ।
जुहुयाद् घृतसंयुक्तैस्तिलैर्मन्त्रविदुत्तमः ।। ७ ।।
तर्पणादि ततः कुर्यादेवं सिद्धो भवेन्मनुः ।
काम्यकर्म ततः कुर्याद् देशिको यतमानसः ।। ८ ।।
आज्याक्तैर्जुहुयान्नित्यमन्नवान् वत्सराद्भवेत् ।
पायसान्नेन महतीं श्रियमाप्नोति मानवः ।। ९ ।।

इति ।। तथा सारसंग्रहे–मन्त्रान्तरम् ।

खान्तो बिन्दुसमायुक्तः क्षकारोऽक्षिसमन्वितः ।
लोहितो रेफसंयुक्तः पार्श्वो वह्निसमन्वितः ।। १ ।।
सादनाय हृदन्तोऽयं मन्त्रः पंक्त्यक्षरो मतः ।

खान्तो ग, बिन्दुरनुस्वारस्तद्युक्तः क्ष स्वरूपं, अक्षि इकारस्तद्युक्तः । लोहितः पकारः, रेफः रकारस्तद्युक्तः । पार्श्वः पकारः, वह्नी रेफस्तद्युक्तः । सादनाय स्वरूपं, हृन्नमः । तथा–

ऋषिर्गणक आख्यातश्छन्दः प्रोक्तं विराडिति ।
देवता गदितः क्षिप्रप्रसादनविनायक ।। २ ।।
दीर्घभाजा स्वबीजेन कुर्यादङ्गक्रियां मनोः ।
पाशाङ्कुशौ कल्पलतां विषाणं दधत् स्वशुण्डाहितबीजपूरः ।
रक्तस्त्रिनेत्रस्तरुणेन्दुमौलिर्हारोज्ज्वलो हस्तिमुखोऽवतान्नः ।। ३ ।।

वामोर्ध्वकरमारभ्य वामाधःकरपर्यन्तमायुधध्यानम् ॥

पूर्वोक्ते पूजयेत् पीठे नवशक्तिसमन्विते ।
मूर्तिं मूलेन संकल्प्य तस्यां विघ्नेश्वरं यजेत् ॥ ४ ॥
प्रथमावृतिरङ्गैः स्याद् द्वितीया चाष्टभिर्गणैः ।
विघ्नो विनायकाख्योऽन्यः शूराख्यो वीरसंज्ञकः ॥ ५ ॥
वरदश्चेभवक्त्रोऽन्य एकदन्ताह्वयोऽपरः ।
लम्बोदरोऽष्टमः प्रोक्तो दलाग्रे मातृपूजनम् ॥ ६ ॥
बाह्ये लोकेश्वराः पूज्यास्तदस्त्राणि ततो बहिः ।

इति ॥ अथ प्रयोगः– तत्र प्रातःकृत्यादियोगपीठन्यासान्ते मूलेन प्राणायामत्रयं कृत्वा, शिरसि गणकाय ऋषये नमः । मुखे विराट्छन्दसे नमः । हृदये क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये देवतायै नमः । इति विन्यस्य गांगीं इत्यादिना करषडङ्गन्यासं विधाय ध्यानादिमानसपूजान्ते चतुर्द्वारयुक्तचतुरस्रत्रयान्वितमष्टदलकमलमर्चापीठं निर्माय,अर्ध्यादिपुष्पोपचारान्ते केसरेषु षडङ्गनि संपूज्य, अष्टदलेषु देवाग्रादिप्रादक्षिण्येन –ओंविघ्नाय नमः । विघ्ननायकाय नमः । शूराय. । वीराय. वरदाय. इभवक्त्राय। । एकदन्ताय. । लम्बोदराय नमः । इति संपूज्य दलाग्रेषु मातृः, चतरस्रे लोकपालांस्तदस्त्राणि च संपूज्य प्राग्वच्छेषं समापयेदिति । तथा–

लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं तदन्ते तद्दशांशतः ।
त्रिस्वाद्वक्तौस्तिलैर्होमं कुर्यात् पुर्वोदिताष्टभिः ॥ ७ ॥
द्रव्यैर्वा तर्पणादीनि ततः पूर्ववदाचरेत् ।
एवं सिद्धे मनौ मन्त्री कुर्यात् काम्यान्यशेषतः ॥ ८ ॥

कलावेतच्चतुर्गुमजपः ।

शर्कराघृतयुक्तेन हविषा जुहुयात् सुधीः ।
लक्ष्मीवान् केवलाज्येन होमो लोकवशंकरः ॥ ९ ॥
घृताक्तान्नं प्रजुहुयादन्नवान् साधको भवेत् ।
चत्वारिंशद्दिनं मन्त्री नारिकेलं हुनेत् ततः ॥ १० ॥
सचर्म लोष्टपक्वं च प्रत्यहं साधकोत्तमः ।
स वाञ्छितार्थमभ्येति नात्र कार्या विचारणा ॥ ११ ॥
सलाजकैः सक्तुभिश्च पृथुकैर्वाञ्छिताप्तये ।
होमो भवेदष्टभिश्च द्रव्यैस्त्रिमधुरान्वितैः ॥ १२ ॥
(हुनेत्ततश्च वशयेद्राज्ञस्तत्प्रमदा अपि ।)
चतुश्चत्वारिंशदाढ्यं चतुःशतमतन्द्रितः ॥ १३ ॥
प्रातः प्रातस्तु सलिलैर्विघ्नेशस्य मस्तके ।
तर्पयेच्छ्री समृद्धिश्च भवेत् तस्य न संशयः ॥ १४ ॥
पूर्वोदितं गणेशानमायान्तं रविबिम्बतः ।
सोपानेनाब्जसंस्थं तं[1] चिन्तयित्वा तु तर्पयेत् ॥ १५ ॥
पूर्वमन्त्रप्रयोगांश्च कुर्यादत्रापि साधकः ।

इति । पूर्वमन्त्रोक्तान् त्र्यक्षरमन्त्रोक्तान् ॥ तथा सारसंग्रहे– मन्त्रान्तरम् ।

बिन्द्वर्धीशयुतः शार्ङ्गी ताराद्यो नमसा युतः ।
चतुर्वर्णो मनः प्रोक्तो हेरम्बस्य महात्मनः ॥ १ ॥

शार्ङ्गी गकारः, बिन्दुरनुस्वारः, अर्धीशः षष्ठस्वरस्ताभ्यां युक्तः । ताराद्यो, नमोऽन्तः । तथा–

मुनिर्गणक आख्यातो गायत्रं छन्द ईरितम् ।
पञ्चवक्त्रोऽस्य हेरम्बो देवता सिंहवाहनः ॥ २ ॥

1. 'मध्यस्थं' ख. पाठः ।

षड्दीर्घयुक्तबीजेन षडङ्गविधिरीरितः ।
मुक्ताविद्युत्पयोदामृतघुसृणनिभैः पञ्चभिर्नागवक्त्रै
हेरम्बो भावनीयः शशधरमुकुटो दृप्तसिंहाधिरूढः ।
हस्तैर्बिभ्रत् त्रिशूलाङ्कुशकजपवटीमुद्गरान् पुंस्कपालं
टङ्काङ्को मोदकं स्याद्रदलसदभये दानमर्कौघदीप्तिः ॥ ३ ॥

अधःस्थदक्षवामयोर्वराभये, तदुपरि परशुकपाले, तदुपर्यक्षमालामुद्गरौ, तदुपर्यंकुशत्रिशूले । तथा–

पूर्वोक्त एव पीठे तु यजेद्धेरम्बमन्वहम् ।
पद्ममष्टदलं कृत्वा चतुरस्रत्रयावृतम् ॥ ४ ॥
चतुर्द्वारसमायुक्तं तत्रादावासनं यजेत् ।
ध्रुवान्ते हेद्व[1]यं प्रोक्त्वा महासिंहं च ङेयुतम् ॥ ५ ॥
गां च हेरम्बशब्दः स्यादासनाय नमोन्ततः ।
आसनाख्यो मनः प्रोक्तो दत्त्वा तेनासनं विभोः ॥ ६ ॥
ध्रुवयुक्तेन बीजेन कुर्यान्मूर्तिप्रकल्पनम् ।
तस्यामावाह्य विघ्नेशं यजेदावरणान्वितम् ॥ ७ ॥
आदावङ्गानि संपूज्य लोकपालान् यजेत् बुधः ।
तेषामस्त्राणि तद्बाह्ये हेरम्बार्चा समीरिता ॥ ८ ॥

इति । अथ प्रयोगः–तत्र प्राग्वद्योगपीठन्यासान्ते मूलेन प्राणायामत्रयं कृत्वा, शिरसि गणकाय ऋषये नमः । मुखे गायत्रीच्छन्दसे नमः । हृदये श्रीहेरम्बाय देवतायै नमः । इति विन्यस्य, गांगीं इत्यादिना करषडङ्गन्यासं विधाय, ध्यानादिमानसपूजान्ते प्रोक्तमष्टदलकमलं विलिख्य, प्रोक्तयोगपीठ- नवशक्ति-पूजान्ते "ओहुंहु महासिंहाय गां हेरम्बासनाय नमः" इत्यासनं संपूज्य, ओंगं गणपतिमूर्तिं कल्पयामि, इति तत्र मूर्तिं परिकल्प्यावाहनादिपुष्पोपचारान्ते केसरेषु षडङ्गानि संपूज्य लोकेशार्चादि प्राग्वत् समापयेदिति । तथा–

1. 'हृदयं' ख. पाठः ।

लक्षत्रयं जपित्वान्ते तिलैर्हुत्वा दशांशतः ।
मधुरत्रयसंयुक्तैस्तर्पणादि समाचरेत् ॥ ९ ॥
एवं सिद्धमनुर्मन्त्री प्रयोगानाचरेत् ततः ।
चतुर्दश्यष्टमीषष्ठीष्वेकैकं जुहुयाद् बुधः ॥ १० ॥

अत्रायमेव कलियुगजपः ।

अपूपैः कृसरैर्मन्त्री मोदकैश्चेष्टसिद्धये ।
पूर्वोक्तैर्जुहुयाद् द्रव्यैः पर्वस्वपि च मन्त्रवित् ॥ ११ ॥
यद्यदिच्छति तत् सर्वं साधकस्तेन साधयेत् ।
अथ यन्त्रं प्रवक्ष्यामि हेरम्बस्य गणेशितुः ॥ १२ ॥

भूर्जे पद्मं लिखेत् तद्गजमदघुसृणैर्मध्यबीजाढ्यसाध्यं
किञ्जल्केष्वङ्गमन्त्रान् वसुदलविवरे सप्तधा संविभज्य ।
मालाणुं शिष्टपत्रे विलिखतु षडपि प्रोक्तगाणेशवर्णान्
शक्त्या बीजं सकारावृतमपि तदनु श्वेतसूत्रावृतं स्यात् ।
लोहैःसंवेष्ट्य यन्त्रं त्रिभिरपि विधृतंबाहुनाभीष्टदं स्यात् ॥ १३ ॥

इति । अयमर्थः—भूर्जपत्रे गजमदसहितकुङ्कुमेन अष्टदलकमलं विलिख्य तन्मध्ये हेरम्बबीजं विलिख्य, तस्य बिन्दुस्थाने अमुकस्य हुंकारस्थाने अमुकं, मध्ये वशं कुरु कुरु इत्यादि स्वष्टं कर्मपदं विलिखेदित्येवं साध्यसाधकर्माण्यालिख्य, तत्केसरेषु षडङ्गमन्त्रान् यथास्थानमालिख्याष्टसु पत्रेषु पूर्वादिप्रादक्षिण्येन ह्रींक्रोंऊंगं नम-स, द्वितीयदले—र्व विघ्नाधिपाय स, तृतीयदले—वार्थसिद्धिदाय स चतुर्थदले—र्वदुःखप्रशमना, पञ्चमदले— य एह्येहि भगवन्, षष्ठदले—सर्वान् खादय स्तम्भ, सप्तमदले—य स्तम्भय ह्रींगंगां, अष्टमदले—नमः क्रोंह्रीं, इति विलिख्य, पद्माद्बहिर्वृत्तत्रयं कृत्वा वीथीद्वयं निष्पाद्य तत्र प्रथमवीथ्यां स्वाग्रमारभ्य प्रादक्षिण्येन निरन्तर शक्तिबीजैरावेष्ट्य, द्वितीयवीथ्यां तथैव सविन्दुसकारेणावेष्ट्य गुलिकीकृत्य श्वेतसूत्रेण संवेष्ट्य, पुनः स्वर्णरजतताम्रैरग्निसम्बन्धमकुर्वन्नावेष्ट्य यथाविधि धृतमुक्तफलदं भवति । अत्र यन्त्रलिखितमालामन्त्रस्य पूजाजपादिकं सर्वं हेरम्बमन्त्रवत् कार्यम् । अमितं छन्द इति विशेषः ॥ तथा सारसंग्रहे—मन्त्रान्तरम्

प्रणवः सतृतीयं च ततो वामबाहुमूलकम् ।
स्वरहीनस्तवर्गादिर्भुवे हृद् धातुवर्णकः ॥ १ ॥
सुब्रह्मण्यमनुः प्रोक्तो भजतां सर्वकामदः ।

इति । पतृतीयो बकारः । वामबाहुमूलं चकारः । तवर्गादिस्तकारः सच स्वर- रहितः । भुवे स्वरूपं । हन्नमः । धातुवर्णः सप्ताक्षरः । शारदातिलके तु– अन्तःस्थो वकार उक्तः । प्रयोगसारे तु– प्रशस्तप्रणवा यत्र वाऽप्यशक्तिपूर्वं जपेद्गुरुरिति । अयमर्थः–प्रणवान्तश्चेदयं मन्त्रस्तदाष्टाक्षरो भवतीति । प्रणवादौ शक्तिबीजं चेद्दीयते तदान्योऽयमष्टाक्षरो भवति । एवं त्रिविधोऽयं मन्तव्य इति । तथा–

ऋषिरग्निः समाख्यातो गायत्री छन्द उच्यते ।
सुब्रह्मण्योऽस्य मन्त्रस्य देवता परिकीर्तितः ॥ २ ॥
दीर्घभाजग्निबीजेन षडङ्गानि समाचरेत् ।
पायाद्वोऽरुणविग्रहः शशिमुखः सम्यग् दधानो भुजैः
पद्मं भीतिहरं रिपुक्षयकरीं शक्तिं शुभं कुक्कुटम् ।
रक्तालेपनवस्त्रदामरुचिरो नानाविभूषान्वितः
सुब्रह्मण्यगणाधिपः शुभकरो भक्तौघविध्वंसकः ॥ ३ ॥

दक्षाद्यधःकरयोराद्ये, तदाद्यूर्ध्वयोरन्ये, इत्यायुधध्यानम् । तथा–

वह्न्यन्ते पूजिते पीठे पूर्वोक्ते पूजयेद्विभुम् ।
उक्तोपचारसहितं विधिना भक्तवत्सलम् ॥ ४ ॥

वह्न्यन्ते इत्यनेन सत्त्वादिपूजानिषेधः प्रतीयते अन्यथोक्तिवैयर्थ्यप्रसङ्गात् ।

(पूर्वोदिते यजेत् पीठे सुब्रह्मण्यं गणाधिपम् ।
केसरेषु षडङ्गानि पूर्वादिषु दलेषु च ॥ ५ ॥
जयन्तो ह्यग्निवेषश्च कृत्तिकापुत्र एव च ।)

ततो भूतपतिसेनान्यौ गुहाख्यो हेमशूलकः ॥
विशालाक्षश्च संप्रोक्ताः शूलसक्तिकरा इमे ।
दलाग्रेषु च पूर्वादि यजेदेताननन्तरम् ॥ ७ ॥
देवसेनापतिं शक्तिं विद्यां कुक्कुटमेव च ।
मेधां मयूरं बज्रं च द्विपं लोकेश्वरांस्ततः ॥ ८ ॥
वज्रादीनि ततो बाह्ये देवमित्थं प्रपूजयेत् ।

इति ॥ अथ प्रयोगः तत्र प्रातरुत्थानादियोगपीठन्यासान्ते शिरसि अग्नये नमः । मुखे गायत्रीच्छन्दसे नमः । हृदि सुब्रह्मण्याय देवतायै नमः । इति विन्यस्य विनियोगमुक्त्वा, रांरीं इत्यादिना करषडङ्गन्यासं विधाय, ध्यानादिमानसपूजान्ते प्रागुक्तमर्चापीठमुद्धृत्यार्ध्यादिपुष्पोपचारान्ते प्राग्वत् केसरेषु षडङ्गानि संपूज्याष्टदलेषु देवाग्रमारभ्य–ऊँजयन्ताय नमः । एवं अग्नि वेषाय । कृत्तिकापुत्राय. । भूतपतये. । सेनान्ये. । गुहाय. । हेमशूलाय. । विशालाक्षाय नमः । ततोऽष्टदलेषु देवाग्रमारभ्य– देवसेनापतये नमः । एवं शक्तये. । विद्यायै. । कुक्कुटाय. । मेधायै. । मयूराय. वज्राय. । द्विपाय नमः । इति संपूज्य लोकेशार्चादि सर्वं प्राग्वत् समापयेदिति । तथा–

लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं सर्पिषा वा पयोन्धसा ।
अयुतं जुहुयान्मन्त्री तर्पयेद्द्विजपुङ्गवान् ॥ ९ ॥

अयं जपः कृतयुगपरः कलावेतच्चतुर्गुणमिति ।

एवं सिद्धे मनौ मन्त्री कुर्यात् कामान्यथेप्सितान् ।
षष्ठीदिने सुमधुरैर्भक्ष्यभोज्यैः प्रतोषयेत् ॥ १० ॥
देवं देवधिया सम्यगर्चयेद्ब्रह्मचारिणः ।
सुब्रह्मण्यमनोः सम्यगुपास्तिं ये प्रकुर्वते ॥ ११ ॥
लक्ष्मीमायुश्च तेजश्च पुत्रपौत्रान्यशः पशून् ।
ऐहिकामुष्मिकाँल्लोकान् लभन्ते नात्र संशयः ॥ १२ ॥

इति । सारसंग्रहे–

अथ प्रवक्ष्ये मनुवर्य्यमेनं महागणेशस्य समासतोऽत्र ।
उपास्य संमूढधियोऽपि सिद्धिं प्रापुः सुरैरप्यभिवाञ्छितां ताम् ॥ १ ॥
सिद्धर्षिसङ्घैर्द्विविधैरुपास्यं सुरासुरैः किन्नरयक्षनागैः ।
गन्धर्वसिद्धव्रजचारणाद्यैः संसेवितं चापि गणैः समस्तैः ॥ २ ॥
नारीनराणां वशकारकं तद् भूपालसङ्घातवशे प्रशस्तम् ।
तत्सुन्दरीवश्यकरं ह्यमात्यभृत्यौघवश्यप्रदमाशु लोके ॥ ३ ॥
व्याघ्रद्विपव्यालसमूहचोरवेतालभूतादिकदुष्टजन्तून् ।
वशे विधातुं प्रतिथः पृथिव्यां लोकैकजन्तुव्रजमोहकं च ॥ ४ ॥
तथा जनाकृष्टिकरं प्रसिद्धं पुष्टिप्रदं भक्तजनस्य नित्यम् ।
उच्चाटकर्मण्यपि शस्तमाद्यं लोके तथा मारणकर्मशक्तम् ॥ ५ ॥
कृशानुसंस्तम्भनकारकं च विद्वेषिवाणीगतिरोधकं च ।
कृपाणधाराशरसञ्चयानां संस्तम्भकं विद्युदपस्ततीनाम् ॥ ६ ॥
संस्तम्भकं वातसमूहवृष्टेः शुक्रादिसंस्तम्भकरं परं च ।
पातालले‌केषु गतिप्रदं च रसायनाद्यञ्जनसिद्धिदं च ॥ ७ ॥
सुपादुकापारदबन्धसिद्धिखङ्गादिसिद्धिप्रदमुत्तमं च ।
सुयक्षिणीसाधनशक्तमुच्चैः सम्यग्जनावेशकरं प्रसिद्धम् ॥ ८ ॥

वेदा[1]दि पद्मनिलया भुवनेश्वरीसकामा-
क्षमा गणपमन्त्रवराहनिहोक्त्वा ।
कान्तान्तितादि पतये वरनीरवह्नीनुक्त्वा-
दसर्वजनमर्काशिवौ वशं च ॥ ९॥
प्रोक्त्वानयेति दहनस्य वधूं समुक्त्वा-
संकीर्तितो मनुरयं मनुयुग्मवर्णः ।
प्रो[2]क्तोऽथ चिन्तितमनोरथकल्पशाखी-
भूतिप्रदश्चयतोवर साधकानाम् ॥ १० ॥

1. 'अयं मन्त्र ऊर्ध्वाम्नायोक्त इति बोध्यम् ।
2. 'भक्तौघविघ्नित' ख. पाठः ।

इति । वेदादि प्रणवः । पद्मनिलया श्रीबीजं । भुवनेशी तद्बीजं । सकामा कामबीजसहिता, भुवनेशीबीजानन्तरं कामबीजमित्यर्थः । क्षमा भूबीजं ग्लौं इति । गणपमन्त्रो गं । कान्तान्तो गकारः, तादिर्णकारः । पतये स्वरूपं । वरं स्वरूपं । नीरं वकारः वह्निः रेफः । द सर्वजनं । स्वरूपं । अर्को मकारः, शिव ऐकारस्तेन मे । वशं स्वरूपं । आनय स्वरूपं । अत्र सन्धिर्ज्ञेयः । दहनस्य वधूः स्वाहाकारः । मनुयुग्मवर्णोऽष्टाविंशत्यक्षरः ॥ तथा–

ऋषिः समुक्तो गणको निचृच्च च्छन्दोऽस्य गायत्रमुदीरितं हि ।
महागणेशो गतितोऽस्य देवः सुरासुरैः सेवितपादपद्मः ॥ ११ ॥

गं बीजं ह्रीं शक्तिरिति पद्मपादाचार्याः ।

तारादिषड्बीजसमन्वितेन षड्दीर्घभाजा निजबीजकेन ।
कुर्यात् षडङ्गानि मनोर्यथावत् स्वजातियुक्तान्यथ मन्त्रविज्ञः ॥ १२ ॥

सद्वादशान्तश्रुतिनेत्रनासाद्वन्द्वास्यदोष्पद्द्वयसन्धिदेशे ।
अनाहतेऽथो मणिपूरके स्वाधिष्ठान आधारपदेऽणु वर्णान् ॥ १३ ॥

विन्यस्य शीर्षाननहृत्सु गुह्यपद्धृत्सु बीजानि परिन्यसेच्च ।
ततोऽवशिष्टैः खलु मन्त्रवर्णैः स व्यापयेत् स्वे सकले शरीरे ॥ १४॥

कवक्त्रहृद्गुह्यपदेषु पश्चान्न्यसेत् स्वनाम्ना मिथुनानि मन्त्री ।
तेष्वेव हृज्ञानुयुतेषु भूयो न्यसेच्च षट् शक्तियुतान् गणेशान् ॥ १५ ॥

इत्थं प्रविन्यस्य निजे शरीरे ध्यायेद् गणेशं निजहृत्सरोजे ।
ऐक्षवे जलधौ द्वीपे नवरत्नमये शुभे ।
तत्तरङ्गोल्लसत्तोयैर्धौते शीततलेऽमले[1] ॥ १६ ॥

1. 'शीते महीतले' ख. पाठः ।

तत्तोयकणसंपृक्तगन्धवाहनिषेविते ।
कल्पपादपसंशोभिभूभागसमलङ्कृते ॥ १७ ॥
नानाकुसुमसंकीर्णे नानापक्षिविराजिते ।
अनेकफलसंकीर्णे सेविते चाप्सरोगणैः ॥ १८ ॥
उद्यद्बालातपोद्द्योतिचन्द्रज्योत्स्नासमाकुले ।
विलसत्पद्मरागौघकुट्टिमारुणभूतले ॥ १९ ॥
कल्पपादपपुष्पस्थषट्पदस्वनमञ्जुले ।
पारिजातं कल्पतरुं तस्य मध्ये विचिन्तयेत् । २० ॥
युगपदृतुषट्केन सेवितं पुष्पशोभितम् ।
नवरत्नमयं तस्याधस्तात् सिंहासनं स्मरेत् ॥ २१ ॥
तन्मध्ये लिपिपद्मं च षडरं तस्य मध्यतः ।
कर्णिकायां त्रिकोणं च तत्संस्थं च महागणम् ॥ २२ ॥
नानारत्नविभूषाढ्यमेकदन्तं गजाननम् ।
चक्राब्जत्रिशिखान् गुणैक्षवधनू रक्तोत्पलं सद्गदां ॥
व्रीह्यग्रान्वितबीजपूररदनं कुम्भं करैर्बिभ्रतम् ।
पद्मोद्यत्करया निजप्रमदया श्लिष्टं जपासन्निभं
सार्धेन्दुं प्रभजे महागणपतिं नेत्रत्रयोद्भासितम् ॥ २३ ॥
पुष्करोद्धृतरत्नौघमयकुम्भबमुखस्त्रुतान् ।
मणिमुक्ताप्रवालादीन् वर्षन्तं धारया मुहुः ॥ २४ ॥
सर्वतः साधकस्याग्रे स्वदानजललोलुपाम् ।
षट्पदालीं कर्णतालैर्वारयन्तं मुहुर्मुहुः ॥ २५ ॥
अमरासुरसंसेव्यं सद्रत्नमुकुटोज्ज्वलम् ।
उरूदरं गजमुखं नानाभरणभूषितम् ॥ २६ ॥
इति ध्यात्वा गणपतिं यजेत् सर्वोपचारकैः ।

ऊर्ध्ववामदक्षयोश्चक्राब्जे, तदधः शूलपाशौ, तदधः धनुरुत्पले, तदधो गदाव्रीह्यग्रे, तदधो बीजपूररदनौ, शुण्डाग्रे रत्नकुम्भः । इत्यायुधध्यानम् । अपरे तु वामोर्ध्वादि- क्रमेण दक्षोर्ध्वान्तं वदन्ति । तदुक्तं प्रयोगसारे– "चक्रप्रासरसालकार्मुकगदासद्बीजपूरद्विजव्रीह्यग्रोत्पलपाशपङ्कजकरं शुण्डाग्रजाग्रद्घटम्" इति । प्रासस्त्रिशूलम् । रसालकार्मुक इक्षुकार्मुकः । द्विजो दन्तः गणेश्वरपरामर्शिन्यां तु–" दक्षाधःकरमारभ्य वामाधःस्थकरावधि । गदाशूलाब्जकह्लारविषाणं दक्षिणैः करैः । शाल्यग्रपाशचक्रेक्षुचापसद्बीजपूरकान् । वामैर्दधान" मित्युक्तमत्र यथागुरूपदेशं कार्यमिति । तथा–

धर्मादिक्लृप्ते पूर्वोक्ते तीव्रादिनवशक्तिके ।
पीठे विघ्नेशमभ्यर्च्य सम्यक् सर्वोपचारकैः ॥ २७ ॥
त्रिकोणाग्रस्थं बिल्वाधो विष्णुं लक्ष्म्यान्वितं यजेत् ।
पद्मद्वयकरा पद्मा शंखचक्रधरो हरिः ॥ २८ ॥
दक्षकोणे बहिस्तद्वद्गौरीं गौरीपतिं यजेत् ।
(संस्थितौ च वटाधस्तात् सुवर्णरजतप्रभौ ॥ २९ ॥
पाशाङ्कुशधरा गौरी टङ्कशूलधरो हरः ।
पृष्ठस्थपिप्पलाधस्ताद्रतिकामौ समर्चयेत्) ॥ ३० ॥
उत्पलद्वन्द्वकोदण्डपुष्पेषुसमलङ्कृतौ ।
(देवपृष्ठे बहिस्तद्वद्रतिं रतिपतिं यजेत्) ॥ ३१ ॥
उत्तरेऽथ प्रियङ्गोस्तु महीकीलौ यजेत् ततः ।
शुक्लव्रीह्यग्रकगदाचक्रालङ्कृतसद्भुजौ ॥ ३२ ॥
देवस्याग्रे यजेल्लक्ष्म्या सहितं गणनायकम् ।
षट्कोणेषु यजेत् पश्चादामोदादींश्च षट् क्रमात् ॥ ३३ ॥
आमोदं सिद्धिसहितमग्रकोणे समर्चयेत् ।
समृध्या युतमभ्यर्चेत् प्रमोदं वह्निकोणतः ॥ ३४ ॥
सुमुखं कान्तिसंयुक्तमीशकोणे समर्चयेत् ।
दुर्मुखं मदनावत्या यजेद् वरुणकोणके ॥ ३५ ॥

विघ्नं मदद्रवायुक्तं कोणे नैशाचरे यजेत् ।
वायव्ये विघ्नकर्तारं द्राविण्या सहितं यजेत् ॥ ३६ ॥
पाशाङ्कुशधरा विघ्नाः शक्तयश्चाभयेष्टदाः ।
रक्ता रक्ताम्बरालेपभूषणा मदविह्वलाः ॥ ३७ ॥
(षट्कोणस्य बहिर्देवं दक्षिणे तु समर्चयेत्) ।
तस्य सव्ये शङ्खनिधिं वसुधारान्वितं यजेत् ॥ ३८ ॥

तस्य महागणेशस्य ।

अपसव्ये पद्मनिधिं वसुमत्या सहार्चयेत् ।
तत्राद्यो मौक्तिकाभोऽन्यो माणिक्याभस्तु धारया ॥ ३९ ॥
वर्षन्तौ धनसंपत्तिं लोकानां स्वेच्छया सदा ।
केसरेष्वङ्गपूजा स्याद् ब्राह्म्याद्याः पत्रमध्यगाः ॥ ४० ॥
चतुरस्रे लोकपालांस्तदस्त्राणि च पूर्ववत् ।
षडावरणसंयुक्तमित्थं देवं प्रपूजयेत् ॥ ४१ ॥

इति ॥ अथ प्रयोगः–तत्र प्रातरुत्थानादियोगपीठन्यासान्ते मूलेन प्राणायामत्रयं कृत्वा, शिरसि गणकाय ऋषये नमः । मुखे निचृद्गायत्रीच्छन्दसे नमः । हृदये श्रीमहागणपतये देवतायै नमः । गुह्ये गं बीजाय नमः । पादयोः ह्रीं शक्तये नमः इति विन्यस्य मम सर्वाभीष्टसिद्धये विनियोगः, इति कृताञ्जलिरुक्त्वा, ॐगां हृदयाय नमः । श्रींगीं शिरसे स्वाहा । ह्रींगूं शिखायै वषट् । क्लींगैं कवचाय हुं । ग्लौंगौं नेत्रत्रयाय वौषट् । गंगः अस्त्राय फट् । इति षडङ्गमन्त्रानङ्गुष्ठादितलान्तं करयोर्विन्यस्य हृदयादिषडङ्गेष्वपि न्यसेत् । ततो ब्रह्मरन्ध्रे गं नमः । दक्षनेत्रे णं नमः । वामे पं नमः । दक्षश्रोत्रे तं नमः । वामे यें नमः । दक्षनासायां वं नमः । वामे रं नमः । मुखे वं नमः । दक्षबाहुमूले रं नमः । मध्ये दं नमः । मणिबन्धे सं नमः । अङ्गुलिमूले वं नमः । अङ्गल्यग्रे जं नमः वामबाहुमूले नं नमः । मध्ये में नमः । मणिबन्धे वं नमः । अङ्गुलिमूले शं

नमः । अङ्गुल्यग्रे मां नमः । अनाहते नं नमः । मणिपूरके यं नमः । स्वाधिष्ठाने स्वां नमः । मूलाधारे हां नमः ॥ शिरसि ओंनमः । मुखे श्रीं. । हृदये ह्रीं. गुह्ये क्लीं । पादयोः ग्लौं । हृदये गं नमः । इति विन्यस्य, गणपतये इत्यादिद्वाविंशतिवर्णैर्मूर्धादिपादान्तं व्यापकं विन्यस्य, ध्यानादिमानसपूजान्ते प्रागुक्तं मातृकापद्मं चतुर्द्वारयुक्तचतुरस्रत्रयवेष्टितं कृत्वा तत्कर्णिकायां षट्कोणं तदन्तस्त्रिकोण च कुर्यादिति पूजाचक्रमुद्धृत्य, अर्घ्यस्थापनादिपुष्पोपचारान्ते प्रोक्तविधिना त्रिकोणं विधाय त्रिकोणाद्बहिर्देवस्याग्रे ओंश्रीं लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । देवस्य दक्षिणेओंह्रीं गौरीहराभ्यां नमः । देवस्यपृष्ठे ओंक्लीं रतिकामाभ्यां नमः । देवस्य वामे ओंग्लौं महीवराहाभ्यां नमः ॥ ततस्त्रिकोणान्तर्देवाग्रे ओंगं लक्ष्मीगणनायकाभ्यां नमः । इति प्रोक्तमिथुनानि तत्तद्वृक्षाधस्तत्तद्ध्यानोक्तरूपाणि सम्यग् ध्यात्वा गन्धादिभिः संपूज्य, ततः षट्कोणेषु देवाग्रमारभ्य–ओंगं आमोदसिद्धिभ्यां नमः । ओगं प्रमोदसमृद्धिभ्यां नमः । सुमुखकान्तिभ्यां नमः । दुर्मुखमदनावर्तीभ्यां नमः । विघ्नमदद्रवाभ्यां नमः । विघ्न कर्तृद्राविणीभ्यां नमः । इति संपूज्य, षट्कोणा द्बहिर्देवस्य दक्षिणे शं शङ्खनिधिवसुधाराभ्यां नमः । वामे पं पद्मनिधिवसुमतीभ्यां नमः । इति संपूज्य अष्टदलकेसरेषु प्राग्वत् षडङ्गानि दलेषु ब्राह्म्याद्याश्चतुरस्रे लोकपालांस्तदायुधानि च संपूज्य धूपदीपादि सर्वं प्राग्वत् समापयेत् ॥ तथा–

एकादशायुतं जप्त्वा सहस्रोत्तरमादरात् ।
दशांशं जुहुयादष्टद्रव्यैरेकाक्षरोदितैः ॥ ४२ ॥
तर्पयित्वा दशांशेन चाभिषिक्तोऽणुना ततः ।
ब्राह्मणान् भोजयेत् सम्यक् षड्रसैर्भूरिदक्षिणाम् ॥ ४३ ॥
दत्त्वा प्रणम्य विसृजेदेवं सिद्धो भवेन्मनुः ।
ततः प्रणम्य विधिवद्गुरुं सन्तोषयेत् ततः ॥ ४४ ॥
काम्यकर्माणि कुर्वीत सिद्धये स्युर्नचान्यथा ।

अयं पुरश्चरणजपः कृतयुगपरः । कलावेतच्चतर्गुण इति । तथा–

वक्ष्ये प्रयोगानधुना समासान्महागणेशाणुवरस्य सर्वान् ।
रक्तप्रसूनैर्गणपं समर्च्य जपेन्मनुं चाष्टसहस्रमन्ते ॥ १ ॥
दशांशतो लोहितवाजिवैरिपुष्पैर्हुनेत् स्वादुपरिप्लुतैश्च ।

अष्टसहस्रमष्टोत्तरसहस्रमित्यर्थः । वाजिवैरी करवीरः । स्वादूनि मधुराणि, तानि तु घृतमधुशर्कराः । घृतमधुदुग्धानि वा ।

राजा वशे तिष्ठति मन्त्रिणोऽस्य सामात्यभृत्यादिकसैन्ययुक्तः॥ २॥
ब्रह्मद्रुसूनैस्त्रिमधुप्लुतैश्च हुत्वा द्विजातीन् वशयेदवश्यान् ।
ते चात्र मन्त्रिप्रवरस्य नित्यमुक्तं हि कुर्वन्ति न संशयोऽत्र ॥ ३ ॥

ब्रह्मद्रुसूनैः पलाशकुसुमैः ।

सर्पिर्हुनेन्मन्त्रिवरो हि तावत् जितेन्द्रियः संस्तदनन्यचेताः ।
चराचरेऽस्मिञ्जगति प्रसिद्धां कीर्तिं विशालममलांलभेत् सः ॥ ४ ॥
मन्त्री हुनेदाज्यपरिप्लुतं यो धनं स धान्यं विपुलं लभेत ।
मधुप्लुतैर्लोहितपङ्कजैर्यो हुनेदथाष्टोत्तरकं सहस्रम् ॥ ५ ॥
पृथ्वीपतींस्तत्प्रमदाश्च नित्यं वशे करोत्येव तदात्मजांश्च ।
हयारिवृक्षोत्थसमिद्भिरष्टाधिकं सहस्रं जुहुयान्मनुज्ञः ॥ ६ ॥
(भूदेववर्यान् ससुतान् सबन्धून् सपत्रिकांश्च वशयेदवश्यम् ।)
अष्टाधिकं मन्त्रिवरःसहस्रं जप्त्वा दशांशेन हुनेन्मनुज्ञः ॥ ७ ॥
विशुद्धया राजिकया च लोणैस्तद्भस्म संशोध्य करे गृहीत्वा ।

साज्ययेति सांप्रदायिकाः ।

योषां निजेष्टां खलु ताडयेत् सा कन्दर्पतीक्ष्णेषुनिपीडिताङ्गी ॥ ८ ॥
स्वजीवितं यावदमुष्य वश्या भवेदवश्या किल किङ्करीव ।
शिवालये लक्षमितं मनुं यो जपेद् दशांशेन हुनेच्च मन्त्री ॥ ९॥
पयोन्धसा साधुमधुप्लुतेन सोऽर्थानवश्यं विविधांल्लभेत ।

पयोन्धसा पायसेन ।

जातीप्रसूनैर्विधिवत् तथाष्टाधिकं सहस्रं जुहुयान्मनुज्ञः ॥ १० ॥
मेधायुतो वेदसदर्थवेत्ता भवेदथासावचिरादवश्यम् ।
दुर्वात्रिकैर्यो जुहुयान्मनुज्ञोऽयुतत्रयं तेन भवेदवश्यम् ॥ ११ ॥
मृत्युञ्जयः सर्वगदान् विजित्य लोके स धीमानिह दीर्घजीवी ।
समाहितो मन्त्रिवरोऽयुतं यो हुनेद्विधानेन सुपीतपुष्पैः ॥ १२ ॥
संस्तम्भयेद्वैरिनृपस्य सेनां सभृत्यनागाश्वरथामवश्यम् ।
लोहादिकैः संघटितानि यानि दिव्यानि शस्त्राणि सितानि तेषाम् ॥ १३॥
धारां ध्रुवं स्तम्भयतीह शत्रो[1] र्नागाश्वसंस्तम्भनमत्र कुर्यात् ।
विभीतकद्रूत्थसमिद्भिरत्रायुतत्रयं यो जुहुयाद्विधिज्ञः ॥ १४ ॥
उच्चाटयेदाशु च वैरिसंघान् स्वस्थानतो मन्दरसन्निभांश्च ।
ग्रामं पुरं वा नगरं च देशं ध्यायंश्च यं यं जुहुयात् क्रमेण ॥ १५ ॥
तं तं तदोच्चाटयतीह मन्त्री तथा च कामं प्रतिमानवानाम् ।
मन्त्री त्वपामार्गसमिद्भिरष्टाधिक सहस्रं विधिवज्जुहोतु ॥ १६ ॥
स्वजीवितावध्यथ पण्ययोषा वश्या भवेयुर्न विचार्य्यमत्र ।
एरण्डवृक्षोत्थसमिद्भिरष्टोत्तरं सहस्रं जुहुयाद्विधानात् ॥ १७ ॥
रण्डाः स्वजीवावधि तस्य वश्या अर्थप्रदाः कामदुघा भवन्ति ।
आनीय निम्बद्रुदलानि तेषु स्वसाध्यनामानि विलिख्य मन्त्री ॥ १८ ॥
रक्तैश्च सम्यग् महिषाश्वजातैर्हुनेत् कटुस्नेहयुतै रहस्तैः ।
विंशत्सहस्रं भवतीह तेन मर्त्यौ हि विप्लु[2]ष्टतरः सदैव ॥ १९ ॥

1. 'वाचश्च' ख. पाठः ।
2. 'मध्यस्थं' ख. पाठः ।

अमुकममुकेन द्वेषयेति साध्यनामानि । रह इति परिच्छेदः ।

मर्त्यास्थिसंभूतम[1]यं हि कीलमष्टाङ्गुलं शावशिरोरुहैस्तम् ।
संवेष्ट्य सम्यग् वसुयुक् सहस्रं संजप्तमेनं कुलिकोदये च ॥ २० ॥

वसुयुक्सहस्रमष्टोत्तरसहस्रं । कुलिकोदयस्तु ज्योतिःशास्त्रे ।

शत्रोर्गृहे द्वारि खनेद्यथावत् सप्ताहतोऽसौ मृतिमेति मर्त्यः ।

कुलिकोदयस्तु–

"मन्वर्कदिग्वस्वृतुवेदपक्षैरर्कान्मुहूर्तैः कुलिका भवेयुः ।
दिवा निरेकैरथ यामिनीषु ते गर्हिता कर्मसु शोभनेषु ॥"

इति । अर्कादर्कवारात् । मनु १४ अर्क १२ दिक् १० वसु ऋतु ६ वेद ४ पक्षाः २ इति दिवा । रात्रौ तु निरेकैरेकहीनैरेभिर्मुहूर्तैः कुलिककालो ज्ञेयः । अयमर्थः– रात्रौ तु त्रयोदशैकादशनवसप्तपञ्चतृतीयप्रथममुहूर्ताः अर्कादिवारेषु यथाक्रमं कुलिककालो ज्ञेयः ।

मन्त्री बिलद्वारसमीपवर्ती जपेन्मनुं लक्षमितं यथा च ॥ २१ ॥
तस्याग्रतश्चाभिपतन्ति नागकन्या विलज्जाः खलु सत्त्वहीनाः ।
द्विव्यानि सिद्धानि रसायनानि नानाप्रकारांश्च मणीन् प्रसिद्धान् ॥ २२ ॥
इष्टान्यनर्घ्याणि बहुनि सर्वास्ताः संप्रयच्छन्ति नचान्यथात्र ।
जपेद्गिरेर्मूर्धनि लक्षमेकं दृढव्रतश्चैकमना नितान्तम् ॥ २३ ॥
भवेद् ध्रुवं तस्य कृपाणसिद्धिः सुरासुरैरप्यभिकांक्षिता या ।
लज्जालुकासद्धनसारनन्द्यावर्तानि शुक्तां गिरिकर्णिकां च ॥ २४ ॥

1. "विद्विष्टतरः" ख. पाठः ।

अधःप्रसूनामथ मेलयित्वा संपिष्य जप्त्वा नियुतद्वयेन ।
एभिः शुभैरञ्जितलोचनो यो मर्त्यो निधानानि स पश्यतीह ॥ २५ ॥

लज्जालुका प्रसिद्धा । तस्या लक्षणं तु– "स्पर्शसंकुचत्पत्रत्वम् ।" घनसारः कर्पूरः । शुल्का गिरिकर्णिका श्वेतापराजिता । अधःप्रसूना शङ्खपुष्पी, अधोमुखपुष्पवती ।

भवेद्व्रणेशाणुशताष्टजप्तश्रीखण्डलेपात् खलु दुःखनाशः ।

शताष्टजप्तेत्यष्टोत्तरशतमित्यर्थः । एवं सर्वत्र ।

लूतासविस्फोटकभूतकृत्याप्रेतोद्भवान् घोरतरांश्च ज्वरांश्च ॥ २६ ॥
मनोरथाद्यष्टसहस्रजापाद् विनाशयेन्मन्त्रवरस्त्ववश्यम् ।
विषद्वयं स्थावरजङ्गमं च ज्वरानथाष्टाविह शूलरोगान् ॥ २७ ॥
सुदारुणान्तान् गृहिणीं च रोगान् वातप्रभूतान् कफपित्तजातान् ।
गलग्रहादीनपि रोगसङ्घान् शताष्टजापेन विनाशयीत ॥ २८ ॥
लक्षैकजापेन मनोरथानां सिद्धिर्भवेदस्य हि पादुकायाः ।
मन्त्री ततो गच्छति दूरवर्त्म शतत्रयं योजनसंज्ञकानाम् ॥ २९ ॥
गुप्तप्रदेशे विजने मनोज्ञे विलेपिते गोमयतो विशुद्धे ।
स्नातः शुचिर्मन्त्रिवरो जितात्मा कुम्भं नव चर्चितचन्दनार्द्रम् ॥ ३० ॥
संस्थाप्य नीरेण सुगन्धिना तं प्रपूरयेत् तत्र शरावमेकम् ।
कुम्भोपरिष्टात् कपिलाज्यपूर्णं विन्यस्य प्रज्वाल्य च दीपमेकम् ॥ ३१ ॥
प्रपूजयेच्चन्दनपुष्पधूपैः कुमारिकां चाथ कुमारकं च ।
आनीय संस्पृश्य जपेदिमं च मनुं तथाष्टाढ्यशतं मनुज्ञः ॥ ३२ ॥
भूतं भविष्यं किल वर्तमानं शुभाशुभं वा कथयेदवश्यम् ।
महागणेशं गदितस्वरूपं ध्यात्वा जपेद्रात्रिषु मन्त्रिवर्य्यः ॥ ३३ ॥

स्वप्ने गणेशः कथयत्यवश्यं शुभाशुभं नात्र विचारणीयम् ।
चन्द्रग्रहे वाथ रविग्रहे वा मन्त्रं जपेत् साधुजलाशयस्थः ॥ ३४ ॥
आकृष्टिरस्यात्र भवेत् सुसिद्धा धान्यादिकानां पशुयोषितां च ।
न्यग्रोधमूले ह्युपविश्य मन्त्री मन्त्रं जपेल्लक्षमिमं विधानात् ॥ ३५ ॥
सा[1]यक्षिणी तस्य भवेत् सुसिद्धा अर्थादि कृ[2]ष्ट्वा च ददाति नित्यम् ।
उपोष्य रात्रौ विधिवद्वचांसमानीय यत्नात् प्रयतो नितान्तम् ॥ ३६ ॥
स्नात्वार्चयेदत्र महागणेशं स्पृष्टायुतं तां प्रजपेच्च मन्त्रम् ।
कृत्वातिसूक्ष्मं किल चूर्णमस्याः कर्षोन्मितं तत्कपिलाज्ययुक्तम् ॥ ३७ ॥
संप्राशयेत् प्रातरतीव शुद्धः कविर्भवत्येव हि सप्तरात्रात् ।

अत्रापि प्राग्वत् सप्तधा विभज्यैकैकं भागं प्रातःप्रातः सघृतं भक्षयेदिति ।

रसं समादाय च कामचारी रसेन संशोध्य च याममेकम् ॥ ३८ ॥
कार्पासपत्रोत्थरसेन तावत् प्रमर्द्य सम्यक् खलु मर्दयेच्च ।
कुमारिकापत्ररसेन तावत् ततो भवेद्रूप्यसमानवर्णः ॥ ३९ ॥
भागा मताः षोडश पारदस्य शुल्वस्य भागत्रितयं तथैव ।
भागत्रयं स्याद्गगनस्य चैकं हेम्नस्तथैकं किल लोहजातेः ॥ ४० ॥
एकत्र कृत्वा बहुधा प्रमर्द्य संस्थापयेत् सम्यगथारनाले ।
शिवालये शुद्धमनाश्च गत्वा मनु जपेल्लक्षमिमं मनुज्ञः ॥ ४१ ॥
महागणेशस्य ततः प्रसादात् सिद्धा हि नूनं गुटिका भवेत् सा ।

रसं पारदम् । कामचारी आकाशवल्लीति प्रसिद्धा । शुल्वस्ताम्रम् । गगनं स्वगापाक्षिकमभ्रकमिति केचित् । आरनालं काञ्जिकः । अत्र ताम्रादिकं चूर्णीकृत्य मेलयितव्यम् ।

---

1. सा वटाख्या इत्यर्थः ।
2. 'कृष्टिश्च' ग. पाठः ।

तां धारयेदानन एव मन्त्री सुदुर्जयः स्यात् सुरदानवाद्यैः ॥ ४२ ॥
समग्रभूतैश्च भवेदवध्यः शस्त्रास्त्रवृन्दैरपि भिद्यते न ।
न दह्यते वह्निशतैश्च मर्त्यो विषद्वयेन म्रियते न वापि ॥ ४३ ॥
तस्याः प्रभावात् किल वज्रदेहो भवेद्गतिस्तस्य च खेचरी स्यात् ।
धरामदृश्यः सकलां च नष्टच्छायो हि भूत्वा विचरेदवश्यम् ॥ ४४ ॥
सदा च सा तिष्ठति यस्य गेहे लक्ष्मीः स्थिरा तस्य गृहे भवेच्च ।
सा दृष्टिबन्धं जगतः करोति महागणेशाणुवरप्रसादात् ॥ ४५ ॥
सब्रह्मदण्डीं वशिनीं गृहीत्वा पुष्यार्कवारेण ततोऽभियोज्य ।
वज्राभ्रकेणाथ पुनस्त्रिलोहैः संवेष्ट्य सम्यग् गुलिकां च कुर्यात् ॥ ४६ ॥
महागणेशं परिपूज्य मन्त्रजप्तां गणेशस्य कराच्च लब्धाम् ।
इत्थं विचिन्त्य स्वकरे नयेत्तां सिद्धां गणेशस्य मनुप्रभावात् ॥ ४७ ॥
वक्त्रे शिखायां च करेऽथ कण्ठे तां धारयेन्मन्त्रिवरः सदैव ।
तस्याः प्रभावान्न भवेत् समीपे व्याघ्रादिचौरोरगविघ्नवृन्दः ॥ ४८ ॥
क्षोणीभुजः स्युर्वशगास्तथास्य लोके भवेदेव हि कामचारी ।
स्त्रीणां प्रियोऽसौ मदनातुराणां भवेदवश्यं गुटिकाप्रसादात्[1] ॥ ४९ ॥

ब्रह्मदण्डी भारङ्गी । वशिनी लज्जालुका । वज्राभ्रकोऽभ्रकविशेषः । त्रिलोहैः– स्वर्णरजतताम्रैः ।

गोरोचनोन्मत्तसुशङ्खपुष्पे देवी सिता स्यादपराजिताह्वा ।
सब्रह्मदण्डी मलयोद्भवं च कृष्णागुरुः स्युः समभागकानि ॥ ५० ॥
संपिष्य सम्यक् च रवौ सपुष्ये कुर्याद् विधानाद् गुटिकां मनुज्ञः ।
कृत्वा च तामर्कसहस्रजप्तां विशेषकोऽस्या जनमोहकः स्यात् ॥ ५१ ॥

देवी सहदेवी । विशेषकस्तिलकः ॥

1. ''प्रभावात्' ख. पाठः ।

ग्रह्यामृता मन्त्रि[1]वरेण दीर्घतुण्डा ततस्तां किल पेषयित्वा ।
तच्चूर्णमालिप्य करद्वयेन जपेन्मनुं ह्यष्टयुतं सहस्रम् ॥ ५२ ॥
प्रदर्शयेत्तौ गजसंमुखं च दृष्ट्वा दिशस्ते दश विद्रवन्ति ।
मदोत्कटा दानजलार्द्रगण्डा[2] ऐरावतस्यापि कुले प्रसूताः ॥ ५३ ॥
सूदीर्घदन्तद्वयरोचमाना[3] गच्छन्ति दूरं विवशा भयार्ताः ।
वश्या भवेयुर्मनुवित्तमस्य ह्युक्तं च कुर्वन्ति न संशयोऽस्ति ॥ ५४
गजान् गृहीतुकामो वै राजा गत्वा वनेषु सः ।
ततश्च कारयेद्वूढां सम्यक् च गजबन्धनीम् ॥ ५५ ॥
चतुरस्रां विशालां च शालां तां निकटे ततः ।
दृढावरणसंवीतां चतुर्द्वारां सुतोरणाम् ॥ ५६ ॥
कुर्यात्तत्र स्थलीं सम्यक् चतुरस्रां समुन्नताम् ।
तस्यामुत्तरदिग्भागे विदध्यात् कुण्डमुत्तमम् ॥ ५७ ॥
सर्वलक्षणसंयुक्तं मेखलाद्यैरलंकृतम् ।
पूर्वादितः स्थलीमध्ये प्रोक्तलक्षणलक्षितम् ॥ ५८ ॥
मण्डलं कारयेत् तत्र समावाह्य गणेश्वरम् ।
संपूज्य च निवेद्यान्तैरुपचारैः सुशोभनैः ॥ ५९ ॥

मण्डलं सर्वतोभद्रम् ।

आधायाग्निं ततः कुण्डे स्वमन्त्रैः पूजयेच्च तम् ।
पुरोल्कैरेव जुहुयादाज्यैर्वारत्रयन्ततः ॥ ६० ॥
हुनेत् समृद्धिमन्त्रेण नव मूलाणुनाहुतीः ।

पुरोक्तैरेवेति दीक्षाप्रकरणोक्ताग्निमुखमन्त्रैः । समृद्धिमन्त्रः भूर्भुवःस्वरग्नि र्जातवेदा इत्यादिको वक्ष्यमाणः ।

---

1. ''पुष्यरवौ सदीर्घ' ख. पाठः ।
2. 'कुम्भा' ख. पाठः ।
3. ''शोभमाना' ख. पाठः ।

प्रणवः श्रीशक्तिमारभूविनायकबीजकैः ।
अनुबद्धैः क्रमादेभिस्त्रिविभक्तेन संहुनेत् ॥ ६१ ॥

पुरोक्त श्रीशक्तिमारविनायकबीजकैः । प्रणवेत्यादिना प्राग्दीक्षाप्रकरणे अग्नि मुखीकरणहोमे महागणपतिमन्त्रस्य यो दशधा विभाग उक्तस्तत्रान्तिमपद-द्वयमेकीकृत्य जुहुयात्, तेन नवधा होमो भवति इत्यर्थः । उक्तं तदाचार्य्यचरणैः– (प्र.सा.)

तारेण लक्ष्म्यद्रिसुतास्मरक्ष्माविघ्नेशबीजैः क्रमशोऽनुबद्धैः ।
पदत्रयेणापि च मन्त्रराजं विभज्य मन्त्री नवधा जुहोतु ॥ इति ।

मूलाणुना समस्तेन हुनेन्मन्त्रार्णसंख्यया ।
आज्येनैव ततश्चाष्टद्रव्यैः स्वादुविलोलितैः ॥ ६२ ॥
चत्वारिंशत्सहस्त्राणि चतुर्भिरधिकानि च ।
चतुश्शतं चतुश्चत्वारिंशद्भिः सहितं हुनेत् ॥ ६३ ॥
प्रत्यहं भोजयेद्विप्रांस्तदाशीर्भिर्विवर्धितः ।
गुरवे दक्षिणां दद्यात् पञ्चाशद्दन्तिनोऽथवा ॥ ६४ ॥
तन्मूल्यं तद्दशांशं वा दत्त्वा सन्तोष्य सद्गुरुम् ।
चतुर्णां मिथुनानां षड्गणेशनिधियुग्योः ॥ ६५ ॥
अङ्गमातृदिगीशानां तन्मन्त्रैः सर्पिषा हुनेत् ।
एवं होमं समाप्याथ नैवेद्यं च समुद्धरेत्[1] ॥ ६६ ॥
पुनरभ्यर्च्यं विघ्नेशं साङ्गं सावरणं ततः ।
निजे हृदि समुद्वास्य विहरेत् स यथासुखम् ॥ ६७ ॥
ततो दिनैश्चतुश्चत्वारिंशता निपतन्ति हि ।
विनायकप्रभावेन कलभाः करिणस्तथा ॥ ६८ ॥
करिणीनां समूहाश्च पात्यन्ते ह्यवटे ततः ।
प्रोक्तरूपं प्रोक्तकुण्डे गणेशं सम्यगर्चयेत् ॥ ६९ ॥

---

1. 'समाचरेत्' ख. पाठः ।

अवटे गर्ते ।

तत्र वह्निं समाधाय लक्षमेकं पृथग् हुनेत् ।
पयोघृताभ्यामुन्मत्तपुष्पैः शर्करयापि च ॥ ७० ॥
क्षौद्रेणान्नेन च ततो कुण्डमध्यात् समुज्ज्वला ।
वेतालसंज्ञा गुटिका प्राप्यते मन्त्रिणा ततः ॥ ७१ ॥
अणिमाद्यष्टसिद्धीनां जायते भाजनं सुधीः ।

अत्राप्येकैकद्रव्येण सप्तषष्ट्युत्तरषट्शताधिकषोडशसहस्रसंख्यो जपः कार्यः । अन्तिमद्रव्ये त्वाहुतिद्वयं न्यूनमिति ।

ब्राह्मे काले समुत्थाय क्षीणचन्द्रेऽथ पर्वणि ।
पद्मपत्रे कापिलं खे गोमयं प्रतिगृह्य च ॥ ७२ ॥
अयुतं मन्त्रसंजप्तं निखातं द्वारि वारयेत् ।
व्याघ्रक्रोडाहिचोरारीन् नात्र कार्या विचारणा ॥ ७३ ॥

क्षीणचन्द्रे पर्वणि अमावस्यायां । खे अन्तरिक्षे ।

जाती सरक्ता च महादिमोहा सदण्डिना स्यात् करयुग्ममेव ।
तथाद्रिकर्णी सशिखा च कन्या गोरोचनैतानि समानभागैः ॥ ७४ ॥

रक्ता मञ्जिष्ठा, महामोहा धत्तूरः, अद्रिकर्णी अपराजिता, शिखा मयूरशिखा, कन्या कुमारी, करयुग्ममञ्जलिनी ।

संपिष्य पञ्चाङ्गमलानि तानि कुर्यादथैकत्र ततो जपेच्च ।
स्पृष्ट्वैतदेनं मनुवर्य्यमष्टाधिकं सहस्रं भवतीह सिद्धम् ॥ ७५ ॥

पञ्चाङ्गमलानीति श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणोत्थानि ।

गजे प्रदेयं बदरप्रमाणं यवप्रमाणं च तुरङ्गमे तत् ।
यवार्धमात्रं मनुजे प्रदेयं ततश्च तद्योषिति सर्वपार्धम् ॥ ७६ ॥

प्रभक्षितं पीतमथो हि वश्यकरं प्रशस्तं हि तथावशानाम् ।
जितेन्द्रियः शुद्धतनुर्मनुज्ञो जपेन्मनुं त्यष्टयुतं सहस्रम् ॥ ७७ ॥
हुनेद्र दशांशं करवीरलाजान् कन्यां लभेदुत्तमवंशजां सः ।
पूर्वोक्तरूपं गणपं विचिन्त्य गन्धादिनाभ्यर्च्य जपेत मन्त्री ॥ ७८ ॥
मन्त्रं हि लक्षप्रमितं विमुक्तो भवेदकस्मान्निगडादिबन्धनात् ।
बिल्वस्य पुष्पं तगरं प्रियङ्गुं सदेवदारुं हरिचन्दनं च ॥ ७९ ॥
तथागुरुं नागसुकेसरं च समानि कृत्वा मधुसा[1]धितानि ।
स्पृष्ट्वा जपेत् तानि मनुं सहस्रमष्टाधिकं तैः खलु सिद्धधूपः ॥ ८० ॥
भवेदनेनाशु सुधूपितो ना विजित्य रोगान् किल दीर्घजीवी ।
प्राप्नोति चार्थं जुहुयाच्च कोऽपि भवेन्नरः सर्वजनप्रियश्च ॥ ८१ ॥
अनेन धूपेन च धूपिता स्त्री सुदुर्भगाऽथो सुभगा भवेच्च ।
कुमारिका धूपसुधूपिता च वरं लभेताशु कुलीनमग्ग्रम् ।
जलाशये लक्षभिताऽणुजापः सप्ताहतो वृष्टिकरः प्रशस्तः ॥ ८२ ॥

स्वर्णाप्तौ मधुना च गव्यपयसा गोसिद्धये सर्पिषा
लक्ष्म्यै शर्करया जुहोतु यशसे दध्ना च संवृद्धये ।
अन्नैरन्नसमृद्धये च सतिलैर्द्रव्याप्तये तण्डुलै-
र्लाजाभिर्यशसे कुसुम्भकुसुमैरश्वारिजैर्वाससे ॥ ८३ ॥
पद्मैर्भूपतिमुत्पलैर्नृपवधूं तन्मन्त्रिणः कैरवै-
रश्वत्थादिसभिद्भिरास्यजमुखान् वर्णान् वधूः पिष्टजैः ।
पुत्तल्यादिभिरन्वहं स वशयेज् जुह्वन्ननावृष्टये
लोणैर्वृष्टिसमृद्धये च जुहुयान्मन्त्री पुनर्वेतसैः ॥ ८४ ॥

इति । अश्वत्तादीत्यादिशब्दैरुदुम्बरप्लक्षवटा गृह्यन्ते । पुत्तल्यादीत्यादिशब्देन पिष्टरचितवृ[2]क्षादयो गृह्यन्ते ।

श्रीदत्तात्रेयानन्दनाथ विरचितायाम् श्रीमहागणपतिवरिवस्यायाम् परिशिष्टं समाप्तं ।

समाप्तेयंमहागणपति वरिवस्या

---

1. ''भावितानि' ख. पाठः ।
2. ''वृत्ता' ख. पाठः ।

श्रीललिता नीराजनम्

जय जय जय ललिते
जय जगदीश्वरि मातः श्रीसुन्दरी ललिते,
त्वं माम् पालय नित्यं विश्वेश्वरि वरदे।
मञ्जुल मङ्गलदायिनि परमानन्द प्रदे,
सकलमनोरथ पूरिणि मातः श्री ललिते।।
जय जय जय ललिते।

जय श्रीचक्रनिवासिनि कामेश्वरि त्रिपुरे,
दीनं मामवलोकय कृपया श्रीललिते।
शिववामाङ्क-विहारिणी मोहित भूतपते,
कलित-कलाधरमुकुटे नेत्र-त्रय-शोभे।।
जय जय जय ललिते।

धनुरङ्कुशशरपाशैः शोभित-कर-कमले,
शिशुं स्वकीयं पालय मातः श्रीललिते।
अरुण-विभा-भव-भासित-भुवनेश्वरि विद्ये,
भव-भय भञ्जनकारिणि भवनाटकनिपुणे।।
जय जय जय ललिते।

विधिहरिसुरपतिमुकुटैः वन्दितपदपद्मे,
नीराजनमवलोकय भगवति चितिरूपे।
संवित्त्व-स्वरूपिणि निगमागमगीते,
संतत-चिन्तित-सच्चित्-स्वानन्दे ललिते।।
जय जय जय ललिते

विन्दुनाद-भवभासिनि शिवशक्तिप्रथिते,
स्पन्दसुधारस-वर्णिणि शाम्भवि शक्ति शिवे।
नीराजनमिदममलम् आरात्रिक-समये,
भक्त्या गायति सकलं भद्रं संचिनुते।।
जय जय जय ललिते।

नृत्यति गायति कलयति मुदितमना मनुते,
रूपं पश्यति त्वरितं तव ललितं ललिते।
निरुपाधिक-कामेश्वर-कामेश्वरि ललिते,
अरुणिम तरुणि-मण्डल मण्डित श्रीसदने।।
जय जय जय ललिते।

निष्कल-तत्त्व-प्रकाशिनि परमेश्वरि ललिते,
दत्तात्रेयानन्दं नाथय श्रीललिते।
चरणसरोजे नमितं लोकय श्रीललिते,
शरणागत-प्रतिपालिनि पालय श्रीललिते।।
जय जय जय ललिते।

।। ललितानीराजन सप्तकम् सम्पूर्णम् ।।

•

।।श्री।।

कुण्डली-जागरणम्

जागो जगदाधार मैया। जागो जगदाधार।।
साधो मन के तार मैया। साधो मन के तार।।
जप तप जोग कछु नहीं जानूँ। सुषुम्मा सूक्ष्म विचार।।
कुल कुण्डलिनी कुण्डली शिवके। साधं त्रिवलयाकार।।

विद्युल्लेखा विसतन्तु सम। सुप्त भुजङ्गी प्रकार॥
दिव्य त्रिकोणे कोटि तड़ित् शशि। आभा भानु हजार॥
मूल मही बं शं षं सं मां। गणपति मूलाधार॥
बं भं मं यं रं लं ब्रह्मा। स्वाधिष्ठान विचार॥
रं मणिपूरे विष्णु माया। अग्नि स्वरूपाकार॥
डं ढं णं तं थं दं धं नं । पं फं दल विस्तार॥
कं खं गं घं ङं चं छं जं। झं ञं टं ठं स्फार॥
द्वादस दल शिव शक्ति विराजे। अनहत नाद अपार॥
चित्त गगन में चिति शक्ति का। स्पन्दन बारम्बार॥
हंस सोऽहं मन्त्र स्वरूपी। विद्या मय झङ्कार॥
अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं । षोडश पत्राकार॥
ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः । व्योम विशुद्धि विचार॥
हं क्षं हसौः सकलं तूँ साधे। विविध सिद्धि के द्वार॥
मन्त्र यन्त्र सब तन्त्र तुम्ही हो। आगम निगम विचार॥
अर्धमात्र रही अन्तर आत्मा। सकल तत्त्व संसार॥
शुभ ज्योतिर्मय हंस युगल रत। पङ्कज पत्र हजार॥
गुप्ताक्षर मञ्जुल मणिमण्डप। श्रीगुरु श्वेत श्रृंगार॥
परमात्मा गुरुनाथ परम शिव। अभय वरद सन्धार॥
रक्त शुक्ल प्रभासित सुषमा। महिमा अपरम्पार॥
शिव वामाङ्के शक्ति विराजे। रक्त बिन्दु बौछार॥
शिव शक्ति पद पङ्कज बरषे। स्नेह सुधा की धार॥
अभिषेके षट् चक्र विकासे। शिवमय जय जय कार॥
अन्तर् मुख आनन्द अश्रुभर। पुलकित करुण पुकार॥
दत्तात्रेया नन्दनाथ का। नमो नमो शत बार॥
जागो जगदाधार मैया। साधो मन के तार॥

प्रणति-पञ्चकम्

भुवन-केलिकला-रसिके शिवे,
झटिति झंझण-झंकृत-नूपुरे,
ध्वनिमयं भव-बीजमनश्वरम्,
जगदिदं तव शब्दमयं वपुः॥१॥

विविध-चित्र-विचित्रितमद्भुतं,
सदसदात्मकमस्ति चिदात्मकम्,
भवति बोधमयं भजतां हृदि,
शिव शिवेति शिवेति वचोऽनिशम्॥२॥

जननि मञ्जुल-मङ्गल-मन्दिरं,
जगदिदं जगदम्ब तवेप्सितम्,
शिव-शिवात्मक-तत्त्वमिदं परं,
ह्यहमहो नु नतोऽस्मि नतोऽस्म्यहम्॥३॥

स्तुतिमहो किल किं तव कुर्महे,
सुरगुरोरपि, वाक्पटुता कुतः,
इति विचार्य परे परमेश्वरि,
ह्यहमहो नु नतोऽस्मि नतोऽस्म्यहम्॥४॥

चिति चमत्कृति चिन्तनमस्तु मे,
अहमिदं भवभेद-निकृन्तनम्,
प्रतिपलं शिवशक्तिमयं शिवे,
ह्यहमहो, नु नतोऽस्मि नतोऽस्म्यहम्॥५॥

॥ इति श्रीदत्तात्रेयानन्दनाथविरचितं प्रणतिपञ्चकं सम्पूर्णम् ॥

।। श्रीः ।।

श्री महागणपति वरिवस्या

श्री महागणपति के महामन्त्र के माध्यम से इस पूजा पद्धति की रचना की गई है । परिशिष्ट में दिये गये सभी मन्त्रों का प्रायः यन्त्र और पूजन विधि समान है । अतः इसी पद्धति से सभी का पूजन विधान सम्पन्न हो सकेगा । केवल महामन्त्र के साथ अपना अभिष्ट मन्त्र प्रयुक्त करें ।

'नामूलं लिख्यते किञ्चिनानयक्षित मुच्यते' के अनुसार प्राप्त पूजा पद्धतियों की विभिन्नताओं का समन्वय करके प्राप्त तन्त्रों के मौलिक सिद्धान्तों का संक्षेप और विस्तार किया गया है ।

दत्तात्रेयानन्दनाथ द्वारा सम्पादित विरचित ग्रन्थ

- श्री विद्यारत्नाकर
- श्री विद्यावरिवस्या (पूजा विधि सहित)
- भक्तिसुधा
- श्रीभुवनेश्वरी वरिवस्या
- साम्बपञ्चाशिका (हिन्दी व्याख्या)
- विरूपाक्ष पञ्चाशिका (हिन्दी व्याख्या)
- श्रीललितासहस्रनामस्तोत्रम्
- श्रीमहागणपति वरिवस्या
- श्री विद्या-पंचरत्नम्
- षट्त्रिशत् तत्वमीमांसा

श्री महागणपति वरिवस्या

- श्रीविद्या से सम्बन्धित दुर्लभ साहित्य का प्रकाशन ।
- श्रीविद्या साधकों का पथ प्रदर्शन ।
- मन्त्र चैतन्य तथा कुण्डलिनी जागरण का क्रियात्मक बोध ।
- श्रीयन्त्रार्चन पद्धति का प्रशिक्षण ।
- तन्त्रशास्त्र विषयक अनुसन्धान

विशेष

- दीक्षित अधिकारी साधकों का निःस्वार्थ रूप में प्रशिक्षणादि होता है ।
- पीठ द्वारा किसी प्रकार का शुल्कादि नहीं लिया जाता है ।

श्रीविद्या साधना पीठ

नगवा, वाराणसी